

मूमाईकनमानतयाभयाकायाअपानकाहवाभयो ॥४५॥ यम
 जून फेरियनिवोननलाग्या यदि कलेसितलडाईनगन्याहातमाशस्त्रनालकाका ॥४६॥ मक
 कन धतराधुकायनहहहातमाशस्त्रनालियाकाआईकनमाहन् यसरगाभूमिमाभेरेव
 जे कल्याणहुन्या ॥४७॥ संजयजोछन् धतराधु कन वचनवोलदछन् अर्जुनजोछयतिवचन
 बोलिकन वानभयाधनुकजोछ अशस्त्रअश्वयतिआक्रावाछिवाठरथमाराविकन तेसएरा
 भूमिमावडाशोकलेसनमातायगरिकनवधुभया ॥४८॥ इति श्रीमद्भगवतगीतायां भावार्थी
 कायां प्रथमोऽध्यायः ॥१॥ संजयकहछन् हेधतराधु तस प्रकारकादयालेयुक्तभयाको

भावयं यद्राज्ये सुखलोभेत हतं स्वजनमुद्यता ॥४५॥ यदि सामप्रतिकारमशस्त्रं सस्त्रया राय
 धार्तराष्ट्राणो हन्तुं स्तनमेक्षे मतरं भवेत् ॥४६॥ संजय उवाच ॥ एवमुक्तां जून संख्ये रथो वस्थ
 उपाविशत् विमृज्य शस्त्रं चायशोकमविगममानम् ॥४७॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु यानि वक्तु
 ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनविषादो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥ संजय
 उवाच ॥ तंतथा कथया विष्टमक्षपूरार्णकुलेक्षराम् विहीदंतमिदं वाक्यं मुवाच सधुसूदन ॥१॥ श्रीम
 गवानुवाच ॥ कृतज्ञा कस्मलमिदं विषमैरायुष्यथितं ॥ अनार्यजुषमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥२॥ के
 वं मात्मगलपार्थनेतव्यययधते ॥ कुरु हृदय देवर्षे त्वत्कीर्तिरुपरतय ॥३॥ श्रीनारायण ॥

आमुभारियाको आकलनेन भयाका वडो मुतलि गलानि भयाका अर्जुन कन मधुसूदन के
 दिवोननलाग्या ॥१॥ भगवानाग्यागईन हे अर्जुन यत्ता संकष्टययाकावेतामाराभूमिमाको
 नकारणनेतनिकनयोअपानआत्माकनअंधकारगिदियाजांन्याहर्कटावाठअयो ॥२॥ हे
 पार्थकातरतिमिक्यानवोलउकी तिमिजलावीरहर्लेयस्तोकातरअनारिऊनपाऊन्याहोईनव
 जछुड हृदयलाइ कातागराशदियायोसंपूर्णतिमिकनभयाकोअज्ञानछो वडेउथशस्त्रास्त्रत
 यारगर भगवानकाआज्ञासुनिकनअर्जुनवित्तिगईन हेमधुसूदन यसरगाभूमिमाकोनप्रका
 रलेमिआपितामहसितमेलेकहोगरिवाराकाडिकनयुद्धगर्ततसेआफलेउठभानिमान्याकाप्रो
 रणाचारि ॥३॥ तगरिलडु हेमधुसूदन ईडवेजताहामिले प्रजागर्तयोग्यऊन ईतकोआ

॥४॥ जन्मदेविहामि उपाख्याराविकन घडा उपा गुरुकन भयो अस्
पदि अफले मान्या हुरुकन न मान्या कुनिसंयतिराज्य संतान को अभिलाष भयाका गुरुहुरुक
नमारि जो सुभोग छत्तिगाई रगत को बांझरा ले उदिया को जसो कहु उषयया यानिक सो ग
रिषा उला ॥५॥ हे भगवान् यम संग्राममा मनुष्यमा युद्धगर्त आयाका गुरुलाई मर्नु वधिया ऊँकि
इत हुरुलाई न मान्या वडिया ऊँकि यो कुरो यानि जानिस कन्या भयेन धतरा दुका पुत्र हुरु ले हा
मिलाई जिति हा मास फर्या हाकि हामिले ईतका सो कले हा मिला वांचन्या छैन हामि मया पछि
आफले जित्या को यानि फल को हे देवि देन भागि जाउ भन्या धतरा दुका पुत्र हुरु मनुष्यमा युद्ध
गर्भ भनि तया भया छत् ॥६॥ ईत हुरुलाई मारिकन हामि वांचन्या छैन भन्या चित्त माझ त्या मेरो

अर्जुन उवाच ॥ कथा भिष्यमहं संक्षेपे द्रोणाक्षमधुसूदन ॥ इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हं वारिसूदन ॥४॥
गुरु हत्वा हि महानुभावान् धियोभोक्तुं भैक्ष्यमयी हलोको ॥ हतार्थकामास्तु गुरुनि हव भुजिय
भोगानुविष्टादिगता ॥५॥ नैवेत द्विष्टः कतरा भोगारियो यद्वा जये मया दिवानो जयेव यानेव ह
त्वानजिजीविषामस्ते वस्थिता प्रमुखे धार्तराष्ट्रा ॥६॥ कार्यरूपे दोषो परतस्त्वभाव पृथगमिवाधम
समूहता यद्धुयस्यानिश्चितं ब्रूहि तमे शिष्यस्ति हं शाधिमांसां प्रयत्ना ॥७॥ नहि प्रयश्यामि ममायु
नु द्योः अक्षोकमुद्धेखरा निदुयाराणा ॥ अवाय्य भूमावसयल मृदु रज्यमुराणा मायवाधियत्न ॥८॥
मजय उवाच ॥ एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतपः ॥ नयोत्स्य इति गोविन्द मुक्त्वा तूष्णिचमूदह ॥९॥
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निवभारतसेन यो र्भयो मध्ये विवीदतमिदं वच ॥१०॥ धीमगवानुवा
च ॥ अशोच्या न त्वं शस्त्रस्व प्रज्ञावा प्रज्ञावादाश्च भावसे गतां मून गतां मूश्च नानुशोचंति यरिडता ॥११॥

॥११॥ त्रियकोरुचभाव हतभयो भूजुतु शस्त्रास्त्रलीकन संग्रामगर्तभत्या मनयति हुत्या भयेन धर्मले
अतश्चेक किं देवत्या चित्तगदिनले यस संग्राममा तिन हुरुकन मर्नु अत्याय देवन लाग्या त
मर्थतिमिद्धे उसाधु यहा कार्य गया तो वडा त फुंछ भनि निश्चय थ हराई कन देउ मजोत याई का
शिष्य कुत तपाइ का चारा मायया को छु मनाई अति दीव कय जाला भनि अर्जुन ले श्री कृष्ण देउ वि
ति गद्दि भया ॥१२॥ क्षेत्रिय भैकन काता कुत युद्धगर्त भनि भगवान् भंछु भन्या चित्त माथ हराई क
न यो कुरो विति गर्धन संग्राममा जितु र हर्नु भत्या को वरो वरे देवि छ हामिले संपूर्ण शत्रुकने जि
यो वत धान्य ले युक्त भया कि पृथ्वी को राज्य हात आयो भत्या यानि ॥१३॥ ईदिय कन मुकाउत्या

यस्तो कलाई अकालिकन पृथिको राज्य गणित्यलाभान देविन्दन यत्
 रिकत जर्ग मागे राज्य गणित्यला देवता काराजो हिला भत्या यति आकुल
 मनुष्य माया का जो शोक छे जो शोक कालिकन आनन्द पूर्वक राज्य गणित्यलाभान देविन्दन त
 सर्थ यस संग्राम मा जितिकन यति हारिकन यति बाढिया देव देन परं तु जो आग्या ऊँछ
 सजय वचन बोल दछ हे महराज अर्जुन ले हविके श भगवान् छे उ ईव चन बोलिकन केरियनि
 विजि गछु हे भगवन् युद्ध गर्भ नौला मयुद्ध गत्या छे न भनि गोविन्द कन विजि गयार न बोलि
 कन वस्या ॥१८॥ हे धतराष्ट्र हविके श जो भगवान् छे अनिक हस्ति कन ति डे सेना का माह
 मा वस्या को वजो सुता भया को अर्जुन कन आग्या गछु ॥१९॥ भगवान् आग्या गछु हे अ
 र्जुन आक्रां कर्म ले देह त्याग गर्ना तयार भया का बाढिया मार्ग माला ग्या का क्षेत्रिय का धर्म
 ले वडा गति मा जान ईछ भया का भिष्य पिता मह डोरा चार्य अरु यनि वीर हरु को ति मी शोक ग
 छे तिरु न अशोक्य ऊँ वचन यनि जां न्या ऊँ न भया हे बोल दछे यण्डित जो छु जस्क ततल
 शान छे तिन हस्यो प्राण ग्या यनि आया या छे शोक गदेन ॥२०॥ फेरियनि मुन तिमि मजो
 न ले बाह जातु नाश तत्त्व ने मेज ना विद्या नैवेदन भविष्य मि सर्व वय मत यर ॥२१॥ देहि नो
 त्मि न यथा दे हे को माये धन जरा तथा दे हांतर प्राप्ती कीरस्त न मु छानि ॥२२॥ मात्रा स्य शो
 सु को तेय शीतो धम सुबुधदा ॥ आंग मा पायिनो नित्या स्ता स्ति ति क्षस्व भारत ॥२३॥ या हि न व्य
 धयन्ते ने पुन वं पुन वं भ सम दुःख सुखं वीर सो मृत त्वा य कल्पते ॥२४॥ नाश तो वि शते भा
 सो ना भा को वि शते सज उभयो रयि द हो न स्वनयोस्त त्व दारि मि ॥२५॥
 छु सो यानि यो देह छाडिकन मर्देन भंछु तिमि यानि यो देह छाडिकन मर्देन स्या वत् वीर हरु
 छु को हियानि नाश हुन्दे न रहन्दे रहंछु यो शरिर छाडिकन केरि तं जया छे न भ नौला तं
 हसि जति प्राप्ति छे केरियनि शरिर धारि जया छे यो आत्मा नित्य हुनाने भूत भविष्य वर्त
 मान कारण मा यानि तिमि हामि सर्वे नित्य छे ॥२६॥ यस्मा क्वा प्राण भनि सो दोला मुन प्राणि
 हुन्दे बेल हस्त या दादि शरिरे को मात्र धरतु बढतु ऊँछ उधो यनि शरिर मात्र ऊँछ आत्मा को
 त कतौ विगार न भै कन नाशय न भै कन तिनै अवस्था वरो वोर रहंछ तसे शरिर छाडछ अर्का श

गुणाले जान्या हर्ष शोक मोहमा दुवै देन ॥ १३॥ यत्ने यदि शरीर हर्ष भया
उपमा सुखमा नाना कथानमांछ भनौला सुन हे भात सुख दुःख दिव्या का इन्द्रिय का गुण शब्द
रूप रस गन्ध स्पर्शादि मात्रा जन्तु उत्पत्ति प्रलय यनि इनै को ऊँछ अनित्यता शून्यता यनि इनै को हो
यत्ना सन्देह नगर ॥ १४॥ हे पुरुष र्षभ पुरुष हर्षमा वजोतिनि हे अर्जुन कान आवा नाक मुखादि
छाला आदि भया का इन्द्रिय हर्ष रोवा गुण सुन हे न चालनु आदि भया को जति छु दुःख सुख को
वर मान्या पुरुष जो छु न मोक्ष कत या उँछ ॥ १५॥ जो सत्य दार्ढ्य आत्मा जो छु तस्मात्ताना गच्छ मातुं भया
मर्दत इडवै को आत्मा को शरीर को वडो बीच छ भनित त्वज्ञानि हर्ष भन्छन् ॥ १६॥ जमले यो संपूर्ण ज
गत्संग व्यापग रिखे छु तो अविनाशि हो भनि जान कसैले यको नाम गच्छ भया यनि अवश्य हो ना
शन ऊन्या यदार्थ छु नाश गरि गदैन ॥ १७॥ हे पार्थ इ पावत शरीर छु न तजो आत्मा कैले नाश न

अविनाशि न त द्विद्वियेन सर्वमिदं ततं विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुं मर्हति ॥ १८॥ अज वल इ
मे देहानित्यस्योक्ता शरीरिणः अनाशिनो प्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ १९॥ यद्वनं वेदी
हन्तारं यथेन मन्यते हतं उभौ तौ न विजानितो नार्थं हन्ति न हन्यते ॥ २०॥ न जायते म्रियते वा कदा
चित्तायं भूत्वा भविता वा न भूयः अजो नित्यः शाश्वतो यं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २१॥
वेदाविता जिन नित्यं यद्वनं मेजमव्ययं कथं स पुरुष पार्थ कघातयति हतिका ॥ २२॥ वा
साक्षि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरो यराणि तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि
संयाति नवानि देहि ॥ २३॥

ऊन्या यत्ने छ भनि प्रमात गरि न कनु हस्त यादादि को शरीर को धारण गन्या यत्ना आत्मा
काति शरीर मात्रा श ऊँछ भनि जान्या हर्ष भन्छन् आहु आत्मा नाश ऊँछ देन तसर्थ
युद्ध गर हे अर्जुन ॥ २४॥ जन्तु पुरुष यस कत माया भनि जान छु जन्तु पुरुष माया भनि भन्छ
र तजु वै जग जान्या ऊँछ माया जो छ मासु को थो प्रो मात्रा माछु ते यो आत्मा पुरुष जो छ
तो ता कसैले मोर्दैन आहु यनि मर्दैन ॥ २५॥ जमयान कैले वऊन्या कैले न मन्या कैले भ
न भय थो न ऊन्या सधै भै र ह्या को हस्त यादादि अवयव नभ्या को बाल वटु छ कैले न भया
को सत्व रज तम इति ने गुण नभ्या को यत्ने जो आत्मा छ हरि मर्दा मर्दैन ॥ २६॥ हे पार्थ यत्
कनति मि कस्तो जान कैले नाश न ऊन्या सधै र ह्या को कैले न जन्मा को टुक को अर्को थो कत न

या यत्नोपपद्यते कसैकनयनि सादेन आपुयनि मदेन ॥ २१ ॥ मनुष्य
 दृष्टिः अरुनयावत् शरीरमात्रा उक्तं तस्मै गार्किकर्मले अवस्थालेनया मया का शरीरमात्रा
 ॥ २२ ॥ यम आत्मा कन शस्त्रलेका दृष्टेन आगालेयनि यो न्देन यानिले य घालोतुपा उन
 सकेन वतासले यनि मुका उन सकेन ॥ २३ ॥ नका दित्या न यो न्दयान य ध्यालो भै हरा उन्पा
 न मुकन्या यो आत्मा जो छ सधैरक नाश रहिकन सर्वत्र गुणा को कसेले चलिन सवका को
 न स कुवडो स्थिर सधैर हन्या ॥ २४ ॥ कोनै इन्द्रियले यनि आषाकान मुखना क छालाले यनि आ
 सायो हो भनि छु घा इन स कु मनेले यनि चिता इन स कु क्रिया कर्म के हिन भया को यत्नो आ
 मा क ह्या को छ तसर्थ हामिले क ह्या का अनुसाले यम आत्मा कन जा न तिमिले अधिगया को
 नेनं छी दंति शस्त्राणि नेनं द हति यावक ॥ नचैनं के दय त्यायो न शोषयति मादृत ॥ २३ ॥ अ
 क्षयो य मदा ह्यो य मक्ते घो श्रोष्य मेव च ॥ नित्य सर्वगतः स्थानु चलो य सनातन ॥ २४ ॥ अ
 व्यक्तो य मचित्तो य मविर्यो य मुच्यते तस्मादेव विदित्वेन नानुशोचितु मर्हसि ॥ २५ ॥ अथ चै
 न नित्य जातं नित्यं वा मय ले मृतं तथापि त्व महावा हो ने व शोचितु मर्हसि ॥ २६ ॥ जातस्य हि ह
 वो मृत्पुं द्वं जन्म मृतस्य च तत्प्रादय हि हार्यर्थेन त्वं शोचितु मर्हसि ॥ २७ ॥ अव्यक्ता दी मिभूतानि
 व्यक्तं स ध्यानि भात ॥ अव्यक्तं निधना न्येव तत्र काया दिवता ॥ २८ ॥
 पुनर्जाडि देउ ॥ २५ ॥ अरु यनि पुन हे महावा हो हे अर्जुन अवजिं भ्रा बुद्धिले जो शरीर जन्मा दिवे
 र शरीरि सिन संग जन्मा को यो शरीर मर्दिवा यनि संगे मर्द छ भनि थ ह राया को छ तय नि य
 स्वन पुनर्जाडि ॥ २६ ॥ कसो गा भि नो लाज सभया य छि न मारि हनेन मया को मनुष्य यनि
 अवस्य जन्म छ तसर्थ तिमिले न माया यनि इता मने छ यत्ना कार्य मे मय स आत्मा को पुनर्जाडि
 पुनर्जाडि यो पछे न जाडि देउ ॥ २७ ॥ आत्मा को शोक गार् की न जन्मा रहे छ तय नि हस्त वा दाद
 ले युक्त भया को जो शरीर छ यत्को तव डो माया ऊं छ शोक ने ययी रहे छ भनो लात मुन हे अ
 र्जुन यावत् प्राणि छ वेले मयान देव न्या छ न् चालयानि न या इन्पा छ न् हे भात माह मा देव
 छ न् जन्मा य छि न मज्ज्य स म म माह हो तेति म चाल या उन्पा छ न् फेरि मया प्रात यनि चा
 लन या इन्पा न देव न्या ऊं छ न् यत्ता शरीर कानि मित धै शोक का वात गुन ता व्यर्थ ऊं छ ॥ २८ ॥

आत्मा न्यालेयनि थहराइन मकुः शोक मा मोह मा दुःखा का छन भनौ लानिश्च
यहो सुन हे सुन यसे आत्मा कन को हि ये कतय स्या हरता आश्चर्य मानु कैले न देखा को देखो
भक्षन् को हि ये कता आश्चर्य मानु कैले न बोल्या का वचन बोल्छन् आत्मा तय लोयो रहेछ भ
क्षन् को हि ये कत न बुल्या का शब्द आश्चर्य माना सुन्छन् देखि कन यनि सुनि कन यनि बो लि
कन यनि आत्मा यत्ते भनि थहरा ऊन सकेन ॥२८॥ यत्ते छत यनि विवो कि पुन वले गर्नु करो
म कह छ सुन हे भात शं पूर्ण प्राणि का शरीर मा आत्मा जो छ सेवे रक्षा को छ मारि स कनु क
हले यनि छैन त सर्थ मिषा पिता म ह भया अरु यनि प्राणि था वत ईन कानि मित शोक नग
॥२९॥ हामिले कहि आया का कुरा यनि चित ले निश्चय थहरा ईकन आ फ्रा क्षे त्रिय धर्म

आश्चर्य वत् यत्पति का शब्देन माश्चर्य वद दति तथे वचान्य ॥ आश्चर्य वहेन मन्यः शृणो
ति कृत्वा येन वेद न वेद कश्चित् ॥३०॥ देहि नित्य म वधो यं देहे सर्वस्य भात तस्मात्स
र्वणि भूतानि तत्वं शोचि नु मर्हसि ॥३१॥ स्वधर्म मयि चावेक्ष्य न विकंयितु मर्हसि ॥ ४
मां द्वि युद्धा क्षेयो न्यत् क्षेत्रियस्य न विद्यते ॥३२॥ यदृच्छया चो ययनं स्वर्गं धार् मया दृतं
॥ सुविनक्षेत्रिया यार्थ लभते युद्ध मी दशं ॥३३॥ अथ चेन्न मिमं धर्म संग्रामं न करिष्यसि
॥ तत स्वधर्म्यं कीर्त्ति च हितायाय मवाप्स्यसि ॥३४॥

युद्ध मानुरो जनु आ फुकन मान्यी शत्रु लाइ आ फुले मानु यो आ फु धर्म यनि हेर क्या
निमित्त लाइ कल्यारा ऊंछ आ फुले भावन छाजा क्षेत्रिय धर्म युद्ध धर्म देखि जो
कोहि छैन ॥३५॥ हे यार्थ यत्तो युद्ध ता वडो भाग्य भया का क्षेत्रिय हन मात्र या उछ क
तो भनौ ला आ फ्रा दिना ईछाले अकस्मात् आइ मिल्या को स्वर्ग जान्या वारा को छोका
उछाया को यत्ता युद्ध या उनु क्षेत्रिय ले धन्य हो ॥३६॥ यहि आ फु धर्म जो युद्ध छ य
स्कन छार्द छो युद्ध गदैन भन्या आ फु धर्म छाजा का देह मा अवजन्त ल्या का
तिमि भै कन पापि छु छै ॥३७॥ तिमिले यो धर्म छाजा भन्या संग्राम मा महा देव कन
जित्या का वाराइ वरादाह मया को अरु यनि तिमिले गया को कीर्त्ति सेवे हर उछ

जगत्सत्कारकाप्रारोहर्वादेयुगलम्भतिम्राधिकारगर्भान् देहमाधिकारचर्याक
तामार्त्ताभंदापनिबद्धो ॥ १४ ॥ कर्त्ताभयादुयोधनभयाश्रयनिमहारथिनयासंस्तुताम
पाडरलेऽर्जुनभाग्योभयम् इनेदुयोधनादिवीरहर्कोऽनेकप्रकारलेपथागरिया
कातिमिऽर्जुननाक्याहोरेहोयोरेहभानियाहोला ॥ १५ ॥ तिमिलेगयाकोपुष्पार्थको
निदागहैरह्यातिम्राशुजतिहर्बोलनानवोवतावचनतिमिकैतभन्याहन्वडाआदमिला
इयसदेखिवडोडुबअर्कोवोनेभन्यनयानेहन् ॥ १६ ॥ यससगाममाभायोभन्यास्वर्गमा
पुग्याहःशुजितोभन्यारज्यकोभोगगर्भान् इतसहेकोनेयुधतिमिडुगर्भान् इतिश्वय
तयारभैरह ॥ १७ ॥ ऊयकारलेयुद्धगरिकनग्रहहर्कनयानिमायाकोपायनऊन्याअर्थवताउ
हन् हेअर्जुनसुखकनरडवकनवरोवरदेवसुखभयोभनिहर्वनगरडःवययोभनिगाहोन
अकीर्तिचायिभूतानिकथयिष्यान्तिनेव्ययासंभावितस्यचाकीर्तिमरणादतिरिच्यते ॥ १८ ॥ भया
प्रणाडुपातंसंयतेत्वामहारथा ॥ येवान्तवैवकुमतोभूत्वायास्यसिलाधव ॥ १९ ॥ अवाच्यवा
दांश्ववहून्वदिव्यान्तिनवाहिता ॥ निदतस्तवसामर्थ्येततोडुवतरुकि ॥ २० ॥ हतोवाप्राप्यसिस्वर्ग
जित्वावाभोक्ष्यस्यमाह ॥ तस्मादुत्तिष्ठकोनेययुद्धायहतनिश्चय ॥ २१ ॥ सुवडुवेसमेकत्वाला
भालाभोजयाजयो ॥ ततोयुद्धाययुज्यस्वतेवंपायमवाप्यसि ॥ २२ ॥ एवातेविहितासांख्येवुद्धि
येजित्विमाश्रुता ॥ बुध्यायुक्तोययायार्थकर्मदधंप्रहास्यसि ॥ २३ ॥ नेहाभिकमनाशोतिप्रप
वायोनाविद्यते ॥ त्वयमय्यस्यधर्मस्यचायतेमहतोभयात् ॥ २४ ॥

मानसयतिभयोराज्यभयोआयाकोरगयाकोवरोवरदेवजितुर्हानुयनिवरोवैदेविकनकसे
सितप्रीतिरकसेसितकोरुगरयनिछोडिकनयुद्धगर्भान् लाईतयारहोयायलान्याहैन ॥ २५ ॥ हे
अर्जुनयोवाहतिमिलाईयमार्थवलुकोनिरोयनभयाकासांख्ययोगमेलेवताभांयसज्ञान
लेआत्मानिश्वयतिमिलाईभयोहोफेरियनियमेयोगमाआत्माकोआराधनागर्भान् तुद्धि
हंछुतिमिमुनेहयार्थयोवुद्धिमुनिक्याऊंअभनेलायोगमालाकियोवुद्धिह्योवुद्धिले
पुक्तभयाकोमुन्यजोहसंसारेमाजमनुमनुयर्न्यासंसादेवियरुजानदियाकर्मह्य
पासकनयालदह ॥ २६ ॥ यसमोक्षऊन्यावादेभयाकाकर्मयोगमाआरंभगयाकोजोह
वेतिगयाकोजलोनाशऊंदेनतलेयसमोक्षकोवादेकर्मयोगमायाययनिहैनओवठि
दियाकोजलोयसयोगकोआरंभगरिकनभयाकाथोरेधर्मलेपनिवडावडादरदेविव

हे कुरुनन्दन यत्तमोक्षमार्गमानि श्रव्यं ह्यर्था बुद्धिजोष्टं केष्टं हो कि होइ
न भन्ता सदेह भयाक। ससारिवुद्धि के कोना के हित भयाको बुद्धिजोष्टं केष्टं हंगामयाकी हंगामयाकी
हंगामयाकी केष्टं प्रकाको हो विष्टो ॥४१॥ हे पार्थ यत्तम ससारमावेदका वचनली कत यो कर्मग
या फल कुष्ट भनिय से ज्ञानमा प्रीति भयाका यो आत्मा भदा भित हो भानि विवेक न जान्या वृक्ष
मा फल फलपा जस्तो सुदस्व चतनो लक्ष्म यत्तदेष्ट अर्के कर्म को होइ न भानि मोक्षमार्ग चित्तमाजा
न्या हस्वता उष्ट ॥४२॥ तिजोष्ट कर्मको चित्तना आत्मा भयाका काम भयाका स्त्री युक्ते दोल
थ आदिको सुख वलो भानि इष्टा रावत्या स्वर्ग सप्तको पुष्टार्थ भयाका अर्था नृजन्म नृ मर्ग गदे
रहत्या यत्ता निवेदका कर्म वता उत्या हस्व जन्म कुन्या कर्मको फल दिया अनेक प्रकारका कर्म यश

व्यवसायामिका बुद्धिरे केष्ट कुरुनन्दन ॥ वक्र शाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयो व्यवसायिता ॥४३॥ यामि
मा युष्मिना वाचं प्रवदत्यविविधत ॥ वेदवाद्गता पार्थ नो न्यदस्तीति वादिन ॥४४॥ कामात्मनः स्व
र्ग परा जन्म कर्म फल प्रदा क्रिया विशेष वक्रलां भोगे श्रव्य गति प्रीति ॥४५॥ भोगे श्रव्य प्रसक्ता
ना तया यदुत चेतसा ॥ व्यवसायामिका बुद्धि समाधौ न विधियते ॥४६॥ वेणुप विषया वेदानि मे
पुण्यो भवार्जुन ॥ निर्वन्दो नित्य सत् स्थानिर्योगक्षेम आत्मवान् ॥४७॥ यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लु
तोदके ॥ तावान् सर्वेषु देवेषु ब्राह्मणस्य विजानत ॥४८॥ कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ॥ मा क
र्मफल हेतुर्भूमाते संगोस्त्य कर्मणि ॥४९॥ योगस्थः कुरु कर्माणि संगत्यान्काधनं जय ॥ सिद्धसिद्धौ लभो
धृताः समन्तं योग उच्यते ॥५०॥ हरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाधनं जय ॥ बुद्धौ शरणा मन्विष्ट कृपणा क
शनश्चादि कर्म लेयुक्त भयाका वचन ले यत्तम ससारमा कि जियाका वचन देवा उष्ट भोग भयाको सुष्टे
श्रव्य भयाको राजा कुत दोलथ दार् कुत सेवे कामात् इने सुख को रष्टे श्रव्य का गतिक न माव गरा उष्ट
॥५१॥ सुखमार्ष्टे श्रव्य माला गि आयाका शक्त भयाका कर्म का फल वता उत्या निवेदका वचन ले चि
त हरन भया यत्ता मनुष्य हस्व कि ससारका कर्म लाग्या के बुद्धिजोष्ट साध्य योग भयाको मोक्षमार्ग
का समाधि माला गेन अर्थात् तेस बुद्धिले चित्तमाति श्रव्य गरा इदि दैत ॥५२॥ वेदे ले कल्याको कर्म
लेना मोक्ष दित्या रहेनष्ट वेदको काम क्याष्ट व्यर्थ (हेष्ट भनोला सुन हे अर्जुन वेद जो कुत सत्वर जस्त
म सति गराको प्रकार ससारमा तीन गरा छाडि देउ आत्मवान भै रहनु आत्मवान भयाको सेवे के
देवन उन्मत्त न कुत ॥५३॥ आकाधर्म मा कल्या का संपूर्ण वेदमावताया का फल को इष्टान रावनु भया देव
ता का ति मि त्त यनिक कर्म न गर्नु रहेष्ट तव भनोला सुन हे अर्जुन यत्ते जल को प्रये जत स्नान गर्नु पिउनु हो

यो प्रयोजन जो ह्यकृतला उका जलमायनिते हि प्रयोजन सिद्ध कृच्छ्र अहयानि गमात्
 कानन को यनि प्रयोजन तो हेतु सर्थ संपूर्ण कर्मजात्या वां सुरा नेवताया कायावत वेदका कम
 का फल ले चर्ग देवि वडो अर्को प्रयोजन हेतु स्वर्ग भत्या को जन्म मनु सुख भोग गुन याति के प्रयोजन
 ह्यहि ससारि कामना ले कर्म गन्या यसे मरी ले ये से संसा सुख या उनु देवता का निमित्त कर्म ग
 या ईश्वर लोकादि देवता कालोक मा सुख या उनु प्रयोजन त कर्म को सुख भोगादि मान देवि ह्य
 ॥४८॥ प्रयोजन त गाने को मान रहे ह्य कर्मता कदाचित्त यनि रहे न ह्य भनोला मुन हे अर्जुन ति मि
 ले गन्या आधिकार जो ह्य कर्म हे कर्म ग रति मियरुं कदाचित् यनिक ले संकष्ट यया यनिको
 ने अवस्था मायनि गन्या का निमित्त कर्म का फल को ईश्वर राख यो कर्म गरियो कार्य साधोला भन्या
 मन सुवा यान नगुष्टा डि दे उ कर्म ग दे न गन्या हो भन्या कर मायनि प्रीति नगु कर्म न गरि न कन्या क
 रो ह्य ॥४९॥ कर्म का फल को यदि ईश्वर गनु रहे न ह्य भन्या कर्म को न प्रकार ले गन्या हो भनोला मुन हे
 धनं जय योग माति मि रहि कन कर्म ग र योग भन्या को क्या हो भनोला ईश्वर का निमित्त यो शरि
 ला उनु न्यो कर्म ग र को न कर्म कर को यनि मनुष्टा डि दे उ सभन्या को क्या हो भनोला अकुरा को
 त कदाचित्त न मराय कर्म ले देवता सनुष्ट कनानु देवता मला इवियारो मातानु भन्या य सफल को
 न हेत क ॥५०॥ बुद्धि युक्तो जहाती ह उ मे सुकृत दुःकृते तस्माद्योगाय युज्य स्वयोग कर्म सुकौश
 ल ॥५१॥ धर्म ज बुद्धि युक्ता हि फल त्यक्ता मरणी विरा ॥ जन्म बंध विनिर्मुक्ता यद गच्छत्यनामय ॥५२॥

यनि सगत गनु ईश्वर राख न सिद्धि आसिद्धि मावरो वरे भै कन ति मि कार्य ग र सिद्धि आसिद्धि भ
 न्या को क्या हो भनोला मन जो ह्य गान ले निमल उज्या लो ग र राख न सिद्धि हो अज्ञान ले मन ला
 ई न छाजा को आसिद्धि हो ई उवै कर मावरो वरे कन कर्म गनु समतन उ ग या को या गे हो
 ई कर्म व बुद्धि ले युक्त भै कन कर्म प्रकार ले गनु भनोला हे धनं जय बुद्धि योग देवि बुद्धि योग भन्या को
 सम त्व योग भनि जो वता ई आ आं तो हे हो य स योग देवि फल का ईश्वर भन्या का यो मे ले योग कर्म
 गरिया को ति मि ईश्वर ले ग या को हो यो कर्म नि आ शरणे मा ह्य पर मे श्वर मा अ य री ग न्या कर्म
 भया का बुद्धि मा राखि कर्म गरि फल को र काराग भन्या का कर्म जति ह्य तिरु प नु कृत् अप
 न दुःख दिन्या कृत् ॥५३॥ सम त्व योग ले कर्म गन्या मनुष्य का को न कार्य सिद्धि कृच्छ्र भनोला
 मुन हे अर्जुन सम त्व योग माया ले युक्त भया को योग मनुष्य जो ह्य य स योग ले युक्त भया को मनु
 ष्य जो ह्य य स ससा मा वडिया घाट या डुवै की र्ति काल द ह्य अर्थान् याय कन यनि पुराण कन य
 नि अकाल द ह्य ते ति भया यद्धि सम त्व योग को द ह्य ग र घट मा कृच्छ्र य स देवि अर्को य दार्थ के

... भयानिश्चयं कुंछे ताहांयहि तेहियोगजोछ मोक्षकोकराकुंछे यद्यपिकर्मभयाको स
 साको वन्धन हो तथापिय स प्रकार सित गया का कर्म ले मोक्ष दिखत ॥५५॥ समतु बुद्धि ले य
 कर्मया पछि मोक्ष कसो गदि कुंछ भनोला सुन हे अर्जुन हामिले कहिया का बुद्धि ले युक्त भ
 या का जो गि जो छतु कर्म वंध भया का फल यस संसार का घटिया बुद्धि या वतु कार्य छतु ते
 हि फल को ईछा फालिक नति मनुख हत वडो बुद्धि भया का जन्मै वंधन देखि मुक्त भया का
 गीता मुक्त या या का अता मय पद कन जान्द छतु परब्रह्म मालीन कुंछतु ॥५६॥ योग वरोवर
 पदार्थ अर्को रहेन छ भया बुद्धि कसो गदि कुंछ भनोला सुन हे अर्जुन तिमो मोह ले काला भया
 को बुद्धि मोह ले कालो भया को क्या हो भनोला अग्यान ले उत्पन्न भया को अन्याय ले घाटि
 यावतु बाढिया देखि न्याय स बुद्धि ले जव तिमिक न छाडला ताहांयहि निश्चय बुद्धि भया को ति
 रि सुन सुता उतु यहुन यहा उतु इत्यादिया वतु कर्म छतु ई न देखि को वेराग होला ई जतिकर्म छतु
 न जानि गया का सबै वेध रखा छतु भया विरक्त बुद्धि भया को होला ॥५७॥ मोह ले कालो भ

यदा ते मोह कलिलं बुद्धिर्व्यति नरिष्यति ॥ तदा गतासि निर्वेदं श्रोतव्यं तस्यैव ॥५८॥ अ
 ति विप्रतिपत्ता ते यदा स्थास्यति निश्चला ॥ समाधावचना बुद्धिस्तदा योग मवाप्स्यसि ॥५९॥
 अर्जुन उवाच ॥ स्थित प्रज्ञस्य का भावाः समाधिस्थस्य केशव ॥ स्थितधीः किं प्रभावेत किमा
 सीत् प्रजेत किं ॥६०॥

या को बुद्धि ले छाजाय छि आत्मा को ठेगान कुंछा बुद्धि भया पछि कति न्याय मार्थ सिद्ध कुंछ भनो
 ला सुन हे अर्जुन अनेक साधू संग धा उतु सुत सुना उतु इत्यादि कर्म देखि विरक्त भया कि बुद्धि जव
 निश्चय भै कन आत्म ज्ञान मार हलि तस्ति बुद्धि यनि समाधि मान चलिकन परमात्मा ये का प्रजव होला
 तेहि टका प्रभया का बुद्धि यनि जव विकल्प ले रहित होलि विकल्प भया को क्या हो भनोला यो ओहि
 होकि भया सदेहन भया कि बुद्धि जव होला ताहांयहि तिमियोग कन पाउला मोक्ष भया को यहि
 रहे छ भनि जानोला ॥६१॥ अर्जुन विनिगद छतु हे केशव स्थित प्रज्ञ लाई क्या भन्छतु स्थित प्रज्ञ
 भया को मजो छ परब्रह्म कुंछ भनि निश्चय भया को ज्ञान लाई मुनि हक क्या भनतु समाधि मा ह्या
 का बुद्धि लाई क्या भन्छतु स्थितधी भया को टका प्रभै ह्या को बुद्धि लाई क्या भन्छतु वस्या का बुद्धि
 लाई क्या भन्छतु हि इत्यादि चल बुद्धि लाई क्या भन्छतु यो संपूर्ण आग्या गर्नु होला ॥६२॥ भगवान्
 आग्या गर्छतु हे पार्थ सन्यास जो छ मन मा भया को यावतु कर्म छतु ईछा देखि लोभ मोहादि
 संपूर्ण कामना कन त्याग गर्छ होई छ आत्मा ले आत्मा सा अमृतरस पिई कन मनोव भया

को जो छ तेत्कन स्थित प्रज भनि मन्थन ॥५५॥ मन्थन जो गि दुःख माय निमत उडा उदेन आभिक मुता
 केहिराग गर्देन राग भन्या को प्रीति कलै वसु मा जो प्रीति गर्देन कलै दे बि दरा उदेन री स भन्या को यति के हू
 गर्देन त्यो मुनि स्थित धी भन्या को कहि छ ॥५६॥ मन्थन जो छ न्यति एक प्राणि को यति ज्यावत वसु
 को आक्राह सदा दिको शरीर को यति माया राव देन न व छिया वसु या या यति बुनि कु देन न घटि
 या भयो भनि विस्मात मानेन न ते स्ता मुनि की बुद्धि प्राति स्थित भनि छ प्राति स्थित भन्या को यति आत्मा
 र आत्मा भदा भिन्न यदार्थ को विवेक भन्या को बुद्धि हो ॥५७॥ यो मुनि जो छ जब जान का आत्मा मा ऊ
 शन भै कन संपूर्ण ईंद्रिय लाई ईंद्रिय भन्या को मुख हात गोडा लिंग गुड दार कात छाला आवा जि
 प्रोना क मन स्नेह ईंद्रिय लाई ईने का अर्थ भन्या का यति वचन भयो समा उतु भयो हि डनु मेथन

श्री भगवानुवाच ॥ प्रज हाति यदा कामान् सर्वान् यार्थ मनोगतान् ॥ आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थित प्रज क
 होच्यते ॥५८॥ दुःखे च नु द्विगता मताः सुखे च विगत म् ॥ वीतराग भयः क्रोधः स्थित धी मुनि ह
 च्यते ॥५९॥ यः सर्वान् भित्ते हस्त तत् प्राप्य शुभा शुभं ॥ नाभिन दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता
 ॥६०॥ यदा सहर ते चायं कुर्मो दुःखं तीव्र सर्वशः ॥ ईंद्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६१॥
 विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहि न ॥ रसवर्षा सोप्यस्य पारुष्यं निवर्तते ॥६२॥ यतनो ह्यपि
 को ते यः पुरुषस्य विपश्चितः ॥ ईंद्रियाणि प्रमाथी निहरति प्रसभ मन ॥६३॥

गर्ज विचारन गरि वलु शब्द मुन जाडो ग मि मां ता ह डनु मेथन गर्ज मि ठो न मि थो स्या द गर्ज गंध सुगंध
 मुन जा हा ईछा भयो मन डु ना उतु अर्थ लाइ यति सर्व न वा वै चिक न जे स्तो ड ले क छु वा संपूर्ण ह
 ल पादा दि वै चिक न हा ड भिन्न एक ड डो ऊ छ त स्ते न र ह सि त पा य प रा य डु व सुख का ड ले आ
 त्मा अने न जा ता दि देन न त्यो मुनि प्रष्टि त हो ते कि बुद्धि विवेक जान्या हो ॥५८॥ विषयाति वि
 वय भन्या को संपूर्ण छा डिक न निराहार राये र सुख भोग का जो र स छ निर स छा डिक न जो र स
 छ जो रा ग छ पर मा मे मा दि चिक न उ सि मा ला गर्ज शब्द त्य रा दि छा डि दि नु ॥५९॥ हे को ते य व डो
 य त नित ईंद्रिय वै च्या का बुद्ध को कलै बुद्धि मान का विरोल न सक्या ईंद्रिय जो छ न मन क न
 ह छ न ईंद्रिय वै चिक न मन मि च नु व डो क छ ॥६०॥ हिय स्मातु कारणातु नूत कारणा ले या
 वत ईंद्रिय छ न नि संपूर्ण वै चिक न आक्रा व स मा रा वि क न मन ले त त पर भै क न व म्छ त त व
 र भया को आत्म दे वि अर्को न चित्ता ई क न व म्छ त स्कारा ले ज स्का व स मा ईंद्रिय छ न त कि
 ग डु प्राति स्थित हो ॥६१॥ शब्द रूप रसादि सुख भोग को चि न ना न ग न्या पुरुष का ति ने
 रूप रसादि लि त को भे द ऊ छ म द भया या छि का म उ त न ऊ छ ज से का म भयो ता हा प छि

वर्तमानं कुंछ योवत्तु को सुख पाइ हात्पाथा यसले वि घृणारियो भया को व उर्यन कुंछ ॥
६२॥ को व भया य छि समो ह कुंछ समो ह भया को नाय को अनाय को वर नया उपा छ समो ह
भया य छि स्मृति को नाश कुंछ स्मृति को नाश भया को शास्त्र का संस्कार ले भया को समुह
जो छ तत्को नाश कुंछ स्मृति को नाश भया य छि बुद्धि को नाश कुंछ बुद्धि को नाश भया य छि
सर्वे काम नाश भयो ॥ ६३॥ भगवान् जो छन् मोक्ष कारणा कुन् इन्द्रिय वत्स भया को योगि जो
छन् प्रीति ले देख ले शत्रु भावना ले छोडा का इन्द्रिय ले के रिति इन्द्रिय कला कुन् आत्मा
का वत्स मार हा का यत्ता इन्द्रिय ले युक्त भया को योगि प्रसाद कन पाउ छ मोक्ष कुंछ ॥
६४॥ प्रसाद भेकन का कुंछ भनो लाहे अर्जुन सुन प्रसाद भया य छिया वत्तु व छन् सर्व नाश
कुंछन् उ व कानाश भया का ते स योगिका चित्त मा आनन्द कुंछ ते स आनन्द ले सदलो भ
या का चित्त देखि वाडे बुद्धि आये जस्तो भेकन निश्चय कुंछ कहे देन ॥ ६५॥ सो मन्ये योग

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्पर ॥ वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६६॥
ध्यायतो विषयान् प्रसङ्गो ज्ञेय जायते ॥ संगस्तज्जायते कामः कामात् क्रोधो भिजायते ॥ ६७॥
क्रोधाद्भवति समोहः समोहात्स्मृतिविभ्रमः ॥ स्मृतिभ्रंसाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६८॥
रागद्वेषविवेकि ज्ञेय विषयानिन्द्रियैश्चरन् ॥ आत्मवत्त्वे विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६९॥
६९॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ॥ प्रसन्नचेतसो ह्यासु बुद्धिः पर्यवतिष्ठति ॥ ७०॥
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य तच्चायुक्तस्य भावना ॥ तच्चाभावयत शान्तिरशान्तस्य कृतः सुखम् ॥ ७१॥
इन्द्रियाणां हि चरता यन्मनो नु विधियते ॥ तदस्य हरति प्रज्ञा वायुर्नावमिवांभसि ॥ ७२॥ तस्माद्य
स्य महाबाहो निवृत्तिं तानि सर्वशः ॥ इन्द्रियाणिन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ७३॥

मालाग्या को ते कि बुद्धि आत्मा कन थ हर उर्या सकत्या कुन् जस्को चित्त थ गाना मा छेन त्यो
मनुष्य का आत्मा को विचार गर्ना हो भनि मत सुवा यानि कुन्देन आत्मा ति र्को भावना न भ
या को मनुष्य जो छ शान्ति पानि या उन्देन अर्थात् ठेरे पारियं च मा यद छ शान्त न भया को मनु
ष्य क सो गार सुख पाओ ॥ ७४॥ योग मार्ग मान लाग्या को मनुष्य को बुद्धि क्या अर्थ ले हरन कुं
छ भनो ला सुन हे अर्जुन जस्कार गाले तत्तो कुंछ सक हंछु जस योगि को मत जो छ तत्सुखना ला
गिक त अनेक सुख भोग मा डल या इन्द्रिय सित ई नै काम न यदे भेकन घुम दछ तस्ति बुद्धि
जो छ हरन कुंछ वोज दा यानि मिछेन जस्ते समुद्र का ना उ कन वता सले ले गया य छि या कु
उत्तम कुंछ ॥ ७५॥ ई यत्ता कुंछन् हे महाबाहो सुन तिमि ई या वत् इन्द्रिय छन् संपूर्ण सुख

देखि खेचिकन आमे मालगाई चंचल जन नदिन्या योगिकी बुद्धि प्रतिष्ठित हो भनि ह
 ले भन्यो ॥६८॥ संसार को व्यवहार देखाई कन तानिको अज्ञानिको विकल्प ऊँह भनिकह
 छु सुनहे अर्जुन संपूर्ण प्राणी हर्को अथ काल रात जस्तो केहि न देखनु छु तो योगि हर्को
 अत्यंत उज्यालो सूर्य उडाया जस्तो सर्व देवा उज्या ऊँह ति प्राणि हर्को उज्यालो वस्तु जो
 छु सुनि हर्को नो देखु अथारो छु नो क्या हो भनो ला प्राणि हर्को आत्मा अथारो छु ते
 हि आत्मा योगि हर्को उज्यालो छु यावत् सुख भोग छु अथ प्राणिका उज्यालो छु आत्मा कन
 देखन्या योगि हर्का सुख भोग अथारो रात्रि जला छु ॥६९॥ मोक्ष भन्या का स्थित प्रशंग्यान

यानि शा सर्व भूतानां तस्यां जागर्ति संयमि ॥ यस्यां जाग्रति भूतानि सानि शयत्यतो मुने ॥६९॥
 आयुर्यमान मंचल प्रतियुक्त समुद्रमायः प्रतिविशति यद्धत ॥ तद्धत्कामाय प्रविशति सवे सश
 न्ति सा प्रोतिन कामकामी ॥७०॥ विहाय कामान्यः सर्वान् पुमांश्चरति निस्पृहः ॥ निर्ममातिर्ह
 कारः स शान्तिमधि गच्छति ॥७१॥ एवावाप्सी स्थिति पार्थर्त्तनां प्राप्या विमुह्यति ॥ स्थित्वा श्यामत
 कालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमुह्यति ॥७२॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता उपनिषद्सुब्रह्मविद्यायां योगशा
 स्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे भीष्मयवर्णिसांख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥ अर्जुन उवाच ॥

ले युक्त भया का योगि हर्को मात्र ऊँह अर्क को ऊँह न भनि दृष्टा त देखाई कन कह छु सुन
 हे अर्जुन संपूर्ण भय भया को कटे न डग्या हस्ता समुद्र मा संसार का वग्या जल जति छु सं
 पूर्ण ते से मा जल मा युगिक न हरा उँह न ते गारिया वत् सुख भोग का मनो रथ छु तिस
 वे जान ले पूर्ण भया का कटे न डग्या आत्मा मागिक न हरा उँह न जस नोगिक न ते से को मो
 क्ष ऊँह न ते हि मात्र शान्तिया उँह सुख भोग मा मनो रथ भया का युद्ध जो छु तिन को मो
 क्ष ऊँह न जस न मनुवा वार ऊँह शान्ति एक क्षीण माय निपा उँह ॥७०॥ जो संन्यासि य स स
 ता का ईछा अने क वस्तु माई छान राखि कैसे को आसान राखि आँके हात पा उँह को यानि भरो
 सा मायान राखि संसा छोड छु ममता जल लाई छे न मो शरीर मेरो छि मेरो सुख लाई मलाइ छु
 भया यानि जो भन्दे न जस्तु न छे न तो योगि शान्तिक न पा उँह वाच्या को छु तयानि तस्को मो देखे ॥७१॥
 हे पार्थ यो हानि ले कहिया का परब्रह्म सत्य यो व्यवस्था छु जो पाई कन मो ह ऊँह न अत कले
 मायनि ह ऊँह अवस्था भया मायनि हानि ले कछा को ब्रह्म ज्ञान याया प्राप्त य स ज्ञान मार्ग पा
 छि ब्रह्मनिर्वाण ना उँह भया का परम गतिक न पा उँह मोक्ष हवे न भन्या करा छे न ॥७२॥ इति श्री

गवतगीताभाषायाद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ भगवानलेखजहानियदाकोमात् यम्
 लोकले कर्मत्यागगारिस्थितप्रतभैरहनुभतिकहियो ॥ कर्मरायवाधिकारस्ते ॥ यमश्लोक
 ले कर्मैगर्नुहेछभन्यावुद्धिकहियो ॥ ईडईकरामाकनूकरोगयामेरोकल्याणहोलाभनिम
 नमाचेत्तनागारिभगवान्छेउ अर्जुनलेवित्तिगच्छन् हेजनार्दनकर्मभन्यायदिवुद्धिवडोहो
 भन्यातयाईकामतले सांख्ययोगवताउनुभयो ॥ तोयोगच्छाडिकनयसडरलाग्योघोरकर्ममा
 मकनक्यातिमितगर्नुपर्छभनिआगाभन्याकोहेकेशवमलाईकर्ममार्गमानुडुवाउ ॥ १ ॥ हेजना
 र्दनतयाईकामिश्रितवचनलेमेरोज्ञानमोहगराईदित्यामात्रभयो ॥ मिश्रितवचनभन्याकोकर्म

अर्जुनउवाच ॥ ज्यायसीचेकर्मरास्ते मतावुद्धिजनार्दन ॥ तत्किंकर्मणिघोरे मातियो जयसि
 केशव ॥ १ ॥ व्यामिश्रेणचवाक्येन बुद्धिमोहयसीवमे ॥ तदेकंवदनिश्चित्य येनश्रेयोहमाप्नु
 या ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ लोकेस्मिन्देविधाविष्टा ॥ पुराप्रोक्तामयानद्य ॥ ज्ञानयोगेनशां
 रब्धानां कर्मयोगेनयोगिनाम् ॥ ३ ॥ नकर्मणामनरंभा नेकर्म्यं पुरुषोत्तुते ॥ नचसंत्यास
 नादेव सिद्धिमसाधिगच्छति ॥ ४ ॥ नहिकश्चिन्क्षरामयि जानतिष्ठत्यकर्मकृत् ॥ कार्येतेय
 वशः कर्मसर्वप्रकृतिजेर्गुणे ॥ ५ ॥ कर्मेन्द्रियाणिसंयम्य यश्चास्मिन्नतसात्मनः ॥ इन्द्रियार्था

यनितगारिऊन्दैनः ज्ञानयोगनभयामोक्षयतिऊन्दैनमोहभन्याकोअल्मल्याईदित्या ॥ मिश्रित
 वचनलेमलाईनअल्मल्याउनिश्चयगारिठिगतागार्याहेकार्यगमातेरोकल्याणहत्याछ
 भनुहवम् तेसैयाछिलागोला ॥ २ ॥ हेअनधकतियायनभन्याकोतिमिहेअर्जुनमुनमकहंछु
 यमसन्तारमामैलेगर्न्याकार्येसांख्यहकलाईवतायाकोछः कर्मैरुपयोगलेयोगिहकलाई
 कार्येवतायाकोछयोगिभन्याकोज्ञानमिलोम्भनिईछागर्न्याअर्थात्मोक्षकोईछागर्न्याला
 ईज्ञानतेहिज्ञानबुनानिमित्तकर्म ॥ ३ ॥ ईडवैकर्मयकैपुरुषलेछकैवेरगर्नुनमकुक्षरयस
 निमित्तमविस्तारकहंछुमुनहेअर्जुनकर्मभन्याकायज्ञश्राद्धादिआरभनगारिपुरुषजोछज्ञान
 कनयाउन्दैनअर्थात्नादितिर्थमापुगिन्दैनतलेकर्मनगारिज्ञानऊन्दैनकेरिमुनातिमिवि
 ताज्ञानसंपूर्णत्यागगयायनिसिद्धऊन्दैनअर्थात्मायाछाडिकनहिजायनिमोक्षऊन्दैन

नृ॥ ४॥ ज्ञानभयाकोमनुष्यलेकर्मत्यागगति मोक्षहुनेनभन्योकाअर्थभनोलाभुनहेअ
 र्जुनयससंसाकलेजात्यामनुष्ययतिकर्मनगरिहकक्षरायतिरहुनुसकैनेप्रकृति
 देविउत्पन्नभयाकासायासायेदाभयाकासत्वरजतमईतीनगुणलेआप्रावशमात्यायाको
 गुणछाडिस्वतंत्रहुनुतसक्याकोयत्तोमनुष्यजोकर्मगर्हंत्योकर्मअन्यायहुनालेज्ञान
 पाउनुसकैने॥ ५॥ विनाविवेकलेगयाकाकर्मत्यागगयाकोछतियाछसुनहेअर्जुनकर्मिदि
 यभत्याकोवचनहातयाउगुदलिगईयांचईद्रियकनआक्रानियममाराधिचोततयाभेरेहछभं
 त्याजलोयारिकनमननेशदह्यरसगन्धस्पर्शईयादिकोसुखभोगवारवारसजदेनमननेसुख

निमूढात्मा मिथ्याचारसुउच्यते॥ ६॥ यत्किंचिद्विद्यानिमनमानियम्यारभतेर्जुन॥ कर्म्यद्वियेकर्म
 योगमेशक्तसविशिष्यते॥ ७॥ नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः॥ शरीर्यावापि च ते
 न प्राप्सि दुःखकर्मणः॥ ८॥ यज्ञार्थाक कर्मनोत्पन्न लोकोयं कर्मवधनात्॥ तदर्थं कर्मकोत्तेय
 उक्तमंगयसाचर॥ ९॥ महजज्ञाप्रजाः पृथु पुरोवाच प्रजायति॥ अनेन प्रसादिव्यध मेव वोस्ति
 वृकामधुक्॥ १०॥

भोगपियारोमादेजोकर्मगर्हंत्योमूढात्माभयाकोअज्ञानहृदयभयाकोतेज्जनमिथ्यासा
 रिहोभनिकहिहः मिथ्याचारभयाकोयायेमात्रहुत्याकार्यगन्याकहिह॥ ६॥ हेअर्जुनफेरिमु
 नतिमिअधिकह्याकोविद्यायोगन्याजिह्येत्योजात्याहोकलोभनोलाबुद्धिईन्द्रियकनकांन
 छालाआवाजिभोनाकयतियांचईन्द्रियकनमनलेवेविकनचंचलहुनअनेअज्ञानतदिकर्म
 क्रियसुखहातयाउलिगगुडयांचईन्द्रियलेपरमेश्वरकर्मयोगनपरमेश्वरनिमित्तकाकर्म
 कनजोगर्हकर्मकाफलकोईछाकतिभयाकोतोमनिविवेकबुद्धिभयाकोबेहो॥ ७॥ यत्तो
 हुनालेजोजात्याहसंकल्पतगरिकर्मगर्नुभनिकहछुसुनहेअर्जुनतिमिजोछोतिअथकर्म
 गरकर्मकाफलकोईछानरावक्याकारगभनोलाकर्मगदेनगयाभन्याकर्मगर्नुबडोहो
 कर्मछाडिदियायछितिओशरीरयतिरावमन्याहनेयोशरीरगविक्याकामभनोला
 आत्माकोसाधनतहुंयालयोशरीरकोबडोव॥ ८॥ कर्मभत्याकोसंसारकोवत्तन
 होयोकर्मगरिक्याहुंभनोलाभुनहेअर्जुनजगभत्याकोविष्णुकोनामहोविष्णुकेति

मिनगयाकाकर्मफलको ईक्षानगारिकाकर्मवन्धनहृदेतत् यमकर्मदेखि अरु जो कर्म गर्छन्ति
संसारकावन्धनहुन् हे को ते य विष्णुका निमित्त कर्म गर्कस्त भैकन गर्भन्या मुक्तसंग कर्मका फलको
ईक्षानगारिकत अन्त्यथा यो भन्यायो संसाजो छति सिय नि ते स्ववन्धन मायेरेला ॥१८॥ ब्रह्माको आग्ना
हुनले यनिकर्म गर्नु श्रेष्ठ छ कहंछु हे अर्जुन ब्रह्मा जो छन् यग्यसितसंगै ब्राह्मणको विवेक ईती गृजा
तका प्रजाको सिर्जना गरि आग्ना गर्छन् हे प्रजा हो यमज जले ति मिहृ कन वछा उनाति मिहृ क
बल ति मिहृ क कन वछा या योज ज जो छति मिहृ को कामधेनु हो ति मिहृ को ईक्षा पूर्ण गरि दि
न्या हो भनि ब्रह्माको आग्ना भन्याको छ ॥१९॥ यज्ञ जो छ प्रजाको ईक्षा कस्तारहले पुन्या उछ भनि स्वधो

देवा भावयता तेन ते देवा भावयन्तु व ॥ यस्मिन् भावयन्तः श्रयः परमवाप्यथ ॥२०॥ ईष्टा भोगा रक्षि
देवा दास्यन्ते यज्ञभाविना ॥ ते दत्तान् प्रदातव्यं यो भुक्ते स्तेनमेव स ॥२१॥ यज्ञमिष्टासन् सन्नो मुच्य

लात हे अर्जुन ब्रह्माको आग्ना भन्याको मकहंछु हे प्रजा हो यमज जले देवता कन वछा या ति मिहृ अने
कजगमा आक्रु धारमा यनि देवताका भावजव गरेला यम यज्ञ पूजाले संतुष्ट भन्याको देवता जो छ
न् जलवर्षा ईकन अन्तर उत्पन्न गर उतन् अरु यति अनेक वायले ति मिहृ कन वछा उता नु ति मि
हृ को भाउ पुर उता नु यम तारहले परस्परको भावनाले देवता ति मिहृ कन वछा उत्पा देवता क
न वछा उत्पा हेला ति मिहृ को परम कथ्या न होला र्चन को र मोक्ष को ज्या ईक्षा गरेला सोपा
उला ॥२२॥ हे राजा हो ति मिहृ ले गन्याको यज्ञले सन्नो स भन्याको देवता जो छन् ति मिहृ ला
ई वडिया कुन्या मुख भोगा दित्या छन् संसारमा जो मनुष्य देवताले नदी कन भन्याका मुख भोग
कन अन्न वस्त्रादिवस्तु कन देवता लाइन दिकन जो बाछन् लगा उछन् त्यो मनुष्यले देव अर्ह
गन्या हो देवताका सयति चोर्न्यो हो ॥२३॥ ते स्काराले हे अर्जुन जो मनुष्य हल देवता निमित्त
पूजा वलि वैश्व देव दान श्रद्धादि यज्ञादि गारिकन शोष र ह्यको बाछन् ति मनुष्य हल्लाई संपू
र्ण पात कले रहित ऊछ शरीर मायात करु हेन करि मुन जो या पिष्ट हल्ले आफ्नै शरीर मात्र
पोसना निमित्त यका उछन् देवता कन नदी आफ्नै मानवा छन् तिले बायोको सवैयात के हो
ति महा पापिष्ट ऊन् ॥२४॥ यो संसा वक्र भन्याको कलो छ भनौलात हे अर्जुन प्राणि हल
अन्न बाछन् ते स अन्न कार स देखि विष्य ऊछन् ते स विष्य कार स मा प्राणि जन्म ऊछ प जन्म

याकामेधतिमेधदेविजलवर्षश्च अन्न उच्यते जंघ यमसंसार मागयाका यज्ञदेविमेध
लेजलवर्षन्याजंघ यज्ञजोघ्न कर्मदेविजंघ ययमान्प्रोहितैकनकर्मजंघ ॥१४॥
कर्मजोघ्न वंशाभयाकोवेदे हो वेददेविजंघ वेदयतिपरब्रह्मदेविभयाकोभतिजानातिमि-
तसर्थयोवेदजोघ्न संयुक्त प्राणिमायानिवोलिन्यावचनभैकननित्यशरीरमावोलिरो मदे
यज्ञमावल्ह्य यज्ञावेधिगराउछ ॥१५॥ यम प्रकारले जो वक्रधुमदां धुमिकनयामे
श्वरदेविनिष्ककन परमेश्वरदेवि पुनिकन वस्याका यत्कर्मकन नगयाको जन्मव्यर्थ सुन
हेयार्थमकहंछु यम संसार मा कर्म गतानिमित्त पेदाभयाका समुप्य परमेश्वरले देवतानिमित्त
यज्ञकर्म वै हे भयाको उमे पाछि मेधभयाको मेधपाछि अन्नभयाको यमे प्रकारमित्त धुम्या

ते सर्व किल विवै ॥ अज्यते ते त्व घं वाया येयं च त्वात्मकारणात् ॥१३॥ अनाद्रवति भूतानि पर्जन्या
दत्तसंभव ॥ यज्ञाद्रवति पर्जन्यो यज्ञकर्मसमुद्भव ॥१४॥ कर्मवृक्षाद्रवं विद्धि वृक्षान्तरसमुद्-
व ॥ तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञप्रतिष्ठितम् ॥१५॥ एवं प्रवर्तितं चेक नानुवर्तयनीह्य ॥ अ-
घायुरिन्द्रियारामो मोघं यार्थस्त्वीवति ॥१६॥ यत्त्वात्सरतिरेव स्यात् दात्मतु प्रश्नमान-
व ॥ आत्मेनेव स संतुष्ट सत्यकार्ये न विद्यते ॥१७॥ नैव तस्य कृते नार्थो नाकृतेनेह कश्चन ॥
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यवाश्रय ॥१८॥

को माधुमा उदेन जो कर्म गदेन त्यो समुप्य अघायु हो अघायु भयाको क्या हो भनो लावा वंजा
लयति पाये मात्र गयो महायात कि हो त्यो समुप्य इन्द्रियको आराम हो आराम भयाको इन्द्रि-
यले सुखि भैकन समुप्य ते मृ शरीरको वाचन व्यर्थ छ ॥१६॥ न जान्याको चित्त कर्मजोगले बुझाई क-
न कर्मका पार गया का गणिको योगवता उछ न हे अर्जुन आत्मा जान्या जो मुनि छ त्यो आत्मे मा प्री-
ति गर्छ सुख भोग मा प्रीति राख्ते न आत्मे देविकन तृप्ति उछ न अघा उछ न आत्माले त प्रहोला
भत्या ईछा राख्ते न आत्मे मा संतुष्ट उछ सुवर्णादि द्रव्य याया संतुष्ट हुं दोऊ भदै न यम तरुह
ले परमार्थ वस्तु मा प्रीति भयाको त्यो योगि जो छ कार्य गती का अधिकार कन हुदै न ते सले
कर्म गर्नु यदै न ॥१७॥ यम मा क्पा कारणा भति स्वधोला सुन हे अर्जुन तस् संन्यासिका यम संसा-
र माग याको कर्म ले प्रयोजन के हि छैन कर्म नगया यति ति मुनिकन यात कला गे न यम पर-
मार्थ दर्शियोगिको अर्थ सिद्ध गर्ना लाई ब्रह्मादि थावर पर्यंत का कसे प्राणि को पति आश्रय
हुदै न फलाना का शरणा मा यया मेरो मोक्ष हुंदो हो भन्या चित्त राख्ते न आत्मा सिद्ध हुनाले ॥१८॥

यत्तोमहजमासिद्धनुह्यालेआत्मज्ञानतुहनालेहेअर्जुनआजैतिमिलेयत्तोऊउसकन्याहेकर्मरूप
कार्यगरत्योकार्यगर्दाफलकोईछानराविजुतपुखईश्वरकानिमित्तकर्मगर्दछत्योमनुष्यमोक्ष
गतिकनयाउछ॥१५॥हेअर्जुनकर्मभन्याकोसबेप्राणिलेगर्तुनगरिनरहुनयज्ञकाकर्ममायु
नलाग्याप्राप्तपिडलाग्याभयानिसलोकसंग्रहयनिविचारगर्देकार्यगर्देकार्यगर्नेकनजोग्य
छो लोकसंग्रहभन्याकोजांन्यापुखलेगरिआयाकाकर्मकुलमाभयाकाआफुमुलुकमाच
ल्याकाईत्यादिकर्मयनिहेदेकर्मगर॥२०॥जांन्यामनुष्यजुनजुनकार्यगर्दछत्तुतिआजोछत्तु
उहिकार्यगर्दछत्तुजांन्यालेयनियोकार्यआंछाकोहोहामियनिगर्भन्छत्तुजांन्यामनुष्यजुनकर्म

तस्मादसक्तशततं कार्यकर्मसमाचरः॥असक्तोयानरकर्मपरमाप्नोतिपुख॥१६॥कर्मने
वाहिसंतिद्धिमास्थिताजनकादयः॥लोकसंग्रहमेवापि संयश्च कर्तुमर्हसि॥२०॥अद्यदाचरतिश्च
वत्तन्नदेवेसरोजनः॥सयत्प्रमारांकुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥२१॥नतेयार्थाल्लिकर्तव्यं त्रिवलोक
पुकिंचनः॥तानवाप्रमवाप्यवर्त्येवचकर्मणि॥२२॥यदिह्यनंतकर्तव्यं यातुकर्माजितेनेप
॥संभवात्माजुवर्तते मनुष्यायार्थमवशः॥२३॥उत्तरेदुर्गमे लोकानकुर्याकर्मचेदहम्॥शंक
रस्यचकर्तव्यामुयहंत्यामिमाप्रजाः॥२४॥शक्ताकर्मण्यविदांशे यथाकुर्वतिभारतः॥कुर्यावि

निश्चयथहरउछलोकिकहवसृतयानिवेदिगृहवसृतयानिजांन्यालेप्रमानगयाकाकर्मकननजा
याहत्तुउत्तेकनप्रमानमानिकर्मगर्दछत्तुतसथजांन्यालेजानिकनकर्मगर्तु॥२५॥हेयार्थमलाईहे
रतिमि स्वर्गसंभयाताह् ईतिनेलोकसामिलेनगयाकाकर्मकोतेछेनत् ईतिनेलोकसाकोहिछेनयोवी
जथामनुष्याछभनुयनिकेहिछेनयोकर्मगर्दछत्तुसलोकसापुगंलाभनुयनिकेहिछेनतथापि
नित्यनेमित्यक्कर्मछोजाकाछेनत् गर्देछु॥२६॥नगयाहुदिसंसारकेनाशजुन्याछभनिज
नाउछत्तुहेयार्थटकाग्रचित्तभैकनअलस्यसंपूर्णकालिकनकदाचित्त्यातिकर्ममासनलागेन
भन्याअवप्राप्तकायावत्तुमनुष्यछत्तुतिसबेमेरिमार्गपाछिलाग्याछत्तुकर्मगर्दछत्तुउत्तुछत्तु॥२७॥
हेअर्जुननित्यनेमित्यसंसारकास्थितिनिका कर्मछाडिदियांयछि ईतिनेलोककनकष्टजुन्याछ
हराउछत्तुयससंसारमावरांशंकरभैलेगराभन्याईअरुप्राणिजनिछत्तुसंपूर्णआफुआफेम
रिकनसकन्याछ॥२८॥आमेमातृपिभयाकायोगिहृदयानिअकीकाउयकारनिमित्तकर्मगर्दछत्तु
मुनहेभारतजसैकजांन्याहत्तुकर्मकाफलकोमात्रईछारावियससंसारमाकर्मगर्दछत्तुतलेगरि
जांन्याहृदयानितेसफलनराखिनित्कामनालेकर्मनराख्यासंसारडुवलाभन्याअथलेसंसारकाक

याते निवेकर्म गच्छत् ॥२५॥ संसारदेवि कया भया का आत्मज्ञाने वता उया होति जोगि हर्कर्म कया
 नितितवता उछत् भनोला ज्ञानकायनि संपूर्ण कर्म गदै संसारमा दुनि आलाई कर्म गरा उछत् ॥२६॥
 न जान्या हर्कस्तरे हले कर्म गच्छत् भनिसो धौला सुनहे अर्जुन अहंकारले अज्ञान आत्मा भया का
 मूढ हर् अहंकार भया को शरीर हो आत्मा भया को यनि निश्चय दुत्ति अहंकारि हर् प्रकृतिका
 गणले सत्वरजतम ईतीन गणले फलानु चीज या उनु फलाना कन मानु ईत्यादि गणले लोकी कन
 भया का आत्मा भया सवै थोक कर्म गच्छत् यो कर्म मैले गया अहंकार गत सक छत् गन्या मै
 ऊं भति ईश्वर यनि गन्या गरा उया यहि हो भन्या वर नरा विवडा सजन छत् ॥२७॥ नान्या हत्

दांतथा शक्त श्विकी भुलोक संग्रहम् ॥२५॥ न बुद्धि भेद जनयेत् जानाता कर्म तंगिनाम् ॥ योष
 योत्सर्व कर्माणि विद्वान् युक्त समाचरम् ॥२६॥ प्रकृतेः क्यमानाति गुणोः कर्माणि सर्वसः ॥ अ
 हंकार विमूढात्मा कर्ता मिति मन्यते ॥२७॥ तत्प्रविभु महाबाहो गुरा कर्म विभागयोः ॥ गुरा गुरो
 पुवर्तते इति सत्त्वान सज्जते ॥२८॥ प्रकृते गुरा तं मूढा सज्जते गुरा कर्म सुः ॥ तातृ कृतव विदोम
 स कृतव विचारयेत् ॥२९॥ मायि सर्वाणि कर्माणि सन्त्यत्याध्यात्मवेतसाः ॥ निरासी निर्ममो
 भूत्वा मुद्रे श्व विगते ज्वरः ॥३०॥ यमे मतमिदं नित्यं मनुति छति मानवा ॥ श्रद्धावतो न मूयन्तो मुच्य
 त ते ज्ञोमाने न भनिक हंछु सुनहे अर्जुन हे महाबाहो तत्त्व कन जान्या जोगि जो छत् गुरा सार कर्म
 साविता गन्या ई संसारि गुरा दुत् ई आत्मा का गुरा दुत् भनि ई कर्म गनीत् भनि जो तत्त्व जान्या जो
 गि जो छत् गुरा भया का ईद्रिय जो छत् सुखे मा छत् सुखे दोषि अने न जान्या को ईद्रा ईद्रिय गदै
 नत् योष द्विकन कर्म गन्या मऊं भनि अहंकार गदै नत् ईद्रिय को सुखे मा च हो यज्ञादिकर्म
 त विना आत्मा को ईछाले ऊं देन भनि गन्या गरा उया यहि हो भच्छत् ॥३१॥ माया को गुरा ले
 अज्ञान भया का केवल मोह सा दुव्या का मनुष्य हर् शरीर का ईद्रिय का गन्या ले कर्म भया का गन्या
 पति मै ऊं भनि थहरा उछत् संपूर्ण तदे विन्या मन्द बुद्धि भया का तिहर्कन संपूर्ण जान्या जोगि ह
 रत न जान्या हो भनि भन्दे नत् ॥३२॥ उत्तो भयान जान्या मनुष्य जो छत् मोक्ष दुना को ईछा ग
 छि तेले कोता प्रकार सित कर्म गन्या हो भनोला सुनहे अर्जुन आत्म को गराया गदै छु भन्या सित
 ले चा करले साहेव को चा करि गन्या हे आत्म को चा करि गन्या बुद्धि ले मय रमेश्वर मा जावत गन्या
 का संपूर्ण कर्म अर्पन गरि जान्या न जान्या का कर्म मनुष्य संपूर्ण विलुना ई आश्वान रावि मैले
 गयां भन्या अहंकार न गरि युद्ध गरहे अर्जुन ति मो अवस्य कछ्या न जान्या ॥३३॥ हे अर्जुन जो
 मनुष्य हर् ईश्वर का तिमित कर्म गन्या भनि भन्या मेरा मन सा सधैर हंछ सधैर श्रद्धा सित सन सील

भयाका गहो कति यति नमानिक न जो कर्म गहो न तिसुख्य यति धर्म ले पायले सुख दुख ले सुक्त
 जे छे ॥३१॥ ते को विमत्या तो गुन वडो दोष छे हे अर्जुन सुन जो सुख्य हई श्वर कानि नित कर्म
 गुन भतिक ह्या को मेरा मत कनति दग छे न मेरा मत सा रहने न तिसं पूर्ण ज्ञान हरया का वडो सु
 छ हई चे त हरया का विवेक न जान्या हई तिको नाश भया को जानति को उछार जे न ॥३२॥
 हे अर्जुन तिसो भया को नमानि अर्को तर हगर्न को मको हो भनो ला सुन ज्ञान भया को सुख्य य
 ति आ फ्रे स्वभाव जस्तो आधि देखि गारि आया को को मको हो भनि भनो ला सुन ज्ञान भया को म
 नुख्य यति उत्का नित सयति आया को कार्य ते से कार्य जस्तो कार्य वन इ दिया उत्कामन
 पछ आ फ्रे चित्त मानय या को वा छि या कार्य वता या यनि माने न प्राणि हई जो छे ॥३३॥ आ फ्रे

ते ते पिकर्म भिः ॥३१॥ यत्ने तदभ्यसूयतो नानुतिष्ठति से मतम् ॥ सर्वज्ञान विमूढात्मा न विदु
 नष्टानचेतम् ॥३२॥ मद्येष्टाचेष्टतेष्वस्या पृथक्ते ज्ञानवानपि ॥ प्रकृतियातिभूतानि निग्रह किं
 करिष्यति ॥३३॥ इन्द्रियस्यन्द्रियास्यार्थरागद्वेषव्यवस्थितो ॥ तयोर्जुन समागच्छे तो यस्य परिपाथि
 तो ॥३४॥ श्रेयान् स्वधर्मोऽपि गुणः परधर्माच्च नु स्थितान् ॥ स्वधर्मो निधन श्रेयोः परधर्मो भयावहः ॥३५॥

स्वभाव सामान्य या माया का गतिक न जा छे न शास्त्र मा भगवान् को यो वचन रहे छ अर्को वचन गर्दो
 र ह्या छु आ फ्रे सो भाव ह्या डि भगवान् ले भया को मानु भानि को मानु छे ॥३३॥ म पूर्ण प्राणि हई
 आ फ्रे स्वभाव ले कार्य गन्य र ह्या छे न शास्त्र को काम क्या हो भनि भनो ला हे अर्जुन इन्द्रिय का अ
 र्थ शब्द रूप रस गन्ध स्पर्श माराग द्वेष ई दु ई अवस्थ सधै र ह्या का छे न राग भया को आ फ्रे म
 नय या का वस्तु मा प्रीति गुन द्वेष भया को आ फ्रे चित्त नय या को वस्तु मानि को मानु ई दु ई जो छे
 न बादा दि विषय मा सधै वस्त्ये का छे न रति दु वे का वस्त्ये कन शास्त्र जाने न य सति मित राग द्वेष
 जो छे न का छानु नु न्या वा दो को वडा डा कु डं शास्त्र मा चित्त लाग्ना दिने न ॥३४॥ अर्को को धर्म
 पति वा छि या देव्या देखि गत्य हो कि हो ई न भनो ला सुन हे अर्जुन आ फ्रे धर्म जो छे न गुण न भया
 पति क ध्यान गरा उ न्या ते हि हो धै र गुण भया को अर्को को गुण छे त यति अर्को को धर्म गुन चाहि
 आ फ्रे धर्म वडो क ध्यान छे आ फ्रे धर्म ह्या दु दा चाहि मुन भलो छे अर्को का धर्म मा लागि कन
 वा चि न्या छे भया यति तो धर्म अति डर लाग्ने छे ॥३५॥ अर्जुन ले विनि गर्द छे न हे वा धर्म य हा भि
 वंश मा उत्पन्न भया का हे छे धर्म य स संसार मा पुरुष जो छे क्या कारण ले कलै ल गा उ छे पाय
 प भू आ पले ई छान ग या पति वला न् कारे ले धि च्चा हा तल ग या हे गारि पाय मा प्रेरण को गारि छे

आग्याहवम् ॥३८॥ भगवान् आग्यामर्षन् संपूर्णसंसारकोशत्रुजलो अनर्थयारिदिन्याकहंछु
 मुनहे अर्जुनकामभयाको मुखभोगजोख सकलसंसारकोशत्रुख संसारमाडुवाउत्पायनियहि
 छकोधजोख सोयतिकामेजसोख ईडुवैजोगुरादेविउत्पन्नभयाकि कतिवाईकनयनिनअ
 घाउत्पावडोवेदभयाकामहायापिष्ट ईमकनवैरिभतिजान ॥३९॥ ईकोनातरहलेवैरिभितो
 ला मुनहे अर्जुनजसैधुवाले आगेकनछोयतछतसैमयलले अयनाकनछोयदछतसैगर्भ
 कावालवसालले वेधछतसै गरितेस्कामने मुखभोगले रीसले आत्माकतरज्ञानकनछो
 पदछजो आत्माकनदेवनदिदेन ॥४०॥ यस्कासलेश्वरस्य रसस्य शोदिका मुखभोगले
 ज्ञानिपुरुषहृकाज्ञानकनछाकिदिछो कसोयो कामसधैकोवैरि हेकोनेयफेरिकसोयो
 अत्यन्तराग्रीमिठोदेखिन्यावडाडुःखलेखवाउदायनिअघाईनमकु पुचाईयनिनसकुसधै
 अर्जुनउवाच ॥ अथकेनप्रयुक्तोययायंचरतिपुरुष ॥ अनिछयायिवाधैयवनादिवनियोजि
 तः ॥४१॥ श्रीभगवानुवाच ॥ कामद्वः क्रोधद्वः जोगुरासमुद्रवः ॥ महासरोमहायाग्रा
 विद्वेततिहवैरिणाम् ॥४२॥ ध्वमेनावीयतेवाह यथादर्शे मत्तेनच ॥ यथोत्पन्नाहृतो गर्भस्त
 धातेनेदमाहृतम् ॥४३॥ आहते शब्दमेतेन शानिनोनित्यवैरिणा ॥ कामरूपेनकोनेय
 उः पुरेणानलेनच ॥४४॥ इन्द्रियानिमनोबुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ॥ एतेर्विमोहयत्येवशा
 नमाहृतदेहिनाम् ॥४५॥ तस्माच्चन्द्रिन्द्रियाण्योदो नियम्यभरतवर्मा ॥ याव्याप्तं प्रजहिस्व नः श
 नविज्ञाननाशनम् ॥४६॥ इन्द्रियाणि यराण्याहुरिन्द्रियभयरमनः ॥ मनसस्तु पराबुद्धिरेवैर्ज्ये
 भोकेरुह्याको अघाईनसकन्या धानैका मान ईछागर्भ्या अग्निजलोयजाई मुखभोगलेव
 र्यकोधलो भानिले ज्ञानछोयिदिछ ॥४७॥ काममार क्रोधमाशत्रुभावनाध्वभनिकछा कामको
 धमाकारुह्याध्वभनिसोधोला मुनहे अर्जुन इन्द्रियधोवत्वचदतजिष्ठा ध्यान आदिगन्यादशभया
 मतभयायतिजोख न्कामरहयास्थान्जं इनेकाअश्रयमा मुखभोगकोधादिलोभादिरहंछु ई
 ने इन्द्रियमनबुद्धिले उतायाको कामजोख आत्मज्ञानकनछोयिदिछर प्राणिहृकनसोहमायाध्व
 अज्ञानमाडुवाउछ ॥४८॥ हेभरतवर्मा भरतवांसिमाकाधेष्टतिमितस्कारगायै हेतिमिईदशईड
 यकतआकृतावसलैयाउ नियम्यमाराधचंचलजुतनदेउताहांपछिज्ञानकोरविज्ञानकोनाश
 गर्भ्याज्ञानभयाको शास्त्रमाभयाको गुरुलेवतायाको विज्ञानभयाको गुरुलेवतायाको ज्ञान
 को प्रयोजनजोतत्वज्ञानको प्रयोजनतत्वज्ञानछसोहिहो ईडुवैजनाकननाशगारिदिन्यास
 म्पापिष्टकामकनमारतागगर ॥४९॥ हेअर्जुनमुन इन्द्रियओतत्वकचक्षुजिष्ठा ध्यानजोख

रूचशरीरभक्तश्रेष्ठद्वर इने इन्द्रियभक्तमनश्रेष्ठद्वर मनभक्तमनश्रेष्ठद्वर निवृत्तिश्रेष्ठद्वर बुद्धिभक्तश्रेष्ठद्वर आ
 त्माद्वर ॥४२॥ यत्नतरहले बुद्धिभक्तश्रेष्ठ आत्माजातिकन आत्मानेर मनले आत्माकन मनकन समा
 धानगरेर कते चलतुदिकन हे महाबाहो लंवायमान वाहु भयाकातिमिन जानिसकनु चित्तको अ
 भिलाषव छाई दिनाय स कामकन सारत्याग गर ॥४३॥ इति श्री भगवद्गीता सुयनिषदु सुब्रह्म वि
 द्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोग भाषायां तृतीयोऽध्यायः ॥३॥ हे अर्जुन ते आचार्य
 अध्यायमा क ह्याको योगद्वर हे मेले सूर्यकन क ह्याथ्यां सूर्यले यनि वैवस्वत मनुकन क ह्या मनु
 ले आकन पुत्र ईक्ष्वाकुराजा कन क ह्या ईक्ष्वाकले यनि पुत्रकन क ह्या यत्ने प्रकारले कहदे
 संसारमा प्रकट भै कैलायाको अव्ययभक्तको कैले नाश नहुत्या आत्माकन जान्या योगयनि
 निमद्वर ॥१॥ हे परंतप वडोतया विभक्त्या कातिमि हे अर्जुन यमपरं पराले यकाते अर्काकन सि
 रत सुय ॥४२॥ एवं बुद्धे परं बुद्ध्या सत्तम्यात्मानमात्मन ॥ जहिशुभमहाबाहो कामद्वयं दुरासदं ॥४३॥
 इति श्री भगवद्गीता सुयनिषदु सुब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोग नाम
 तृतीयोऽध्यायः ॥३॥ श्री भगवानुवाच ॥ ईमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहं मया ॥ विवस्वतः स मे प्राह
 मुरिक्षाकवे प्रवित्रः ॥१॥ एवं परं परा प्राप्सि मराजर्वयो विदुः ॥ सकलेनेह महता योगेन धुरं
 तपः ॥२॥ स मे वायं मया तेषां योग प्रोक्त पुरातनः ॥ भक्तो मिते सखा चेति ॥ हस्त्यहेतुतनः ॥३॥
 अर्जुन उवाच ॥ अयं भवतो जन्म परं जन्म विवश्मती ॥ कथमेतदिजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥४॥
 कायोऽसले अर्काकन सिकायो यत्ने तरहले संसारमा चल्या कायस योगकन क्षेत्रियक
 लका बुद्धावुठावाट आयाको भनि संपूर्ण राजरिषि हरजांथा अभ्यासगर्था ठेरे समयभयो
 उद्योगको संप्रदाय यर्जु पुरु उतु जोधु सवेष्टा डिगवेष्ट आज काल हर ईरहेष्ट ॥२॥ हे अ
 र्जुन ते हि योगको योग जोधु येले मेले सूर्यकन क ह्याको आजतिमिकन कहं दु अशायियो जो
 गवडोरस्य आकले मात्र बुद्धु अर्काकन न कहं न्याहो तथापि तिमि मेरा वडो भक्त को मि
 त्रयनि होर यमनिमित्त उतम योग ज्ञानकन क ह्या ॥३॥ भगवानले निवचन बोलि क ह्याका मुनि
 कन अर्जुन बोले गर्धन हे श्री कृष्ण भनि मोजन आज काल वडु देवका चरम भयाको सूर्यकाज
 मत मृष्टिका आदि मा अधिभयाको योग अधि सूर्यकन क ह्याथ्या उतले द्वाका कन यहा
 मा भनि वचन बोले द्वाको सूर्यभक्त यनि अधिभे योगवता उतयातिमिकन कस प्रकार
 ले बुद्धु ॥४॥ भगवान् आया गर्धन मेरा ठेरे जन्म वित्या अधिभयाका जति जति जन्म द्वा

तिसवैसजानुछु देपरंतयतिमितावित्याकजन्म एकपतिजान्याछेन ॥५॥ तिसित ईश्वर हो
 धर्मरयायडुवैथोकभयाका कसप्रकारले जन्मनुमर्तु गछौ भनि सोधोला सुनहे अर्जुन मन
 जन्मन्यानाशयतिनजन्माज्ञानयतिकैलेन हराउत्यायावत्प्राणिको ईश्वर उत्यन गत्याया
 तत्यागत्या मान्या व्रहादिस्थावर पर्यंतको स्वामिछेतयनि मेरोवैभुविमायासत्वरजसमो
 गणले उत्यनभयाकि कनआक्रावसमाराधिकतकेहिप्रयोजनदेवाउनानिमित्तयोमाया
 साथसालीकननमनुमर्तुगदछु ॥६॥ कस्ताप्रयोजनमाजन्मछोभनौला सुनहे अर्जुन
 जबसंसारमाप्राणक्षेत्रियवैश्य शूद्र ईचारेजातका आक्रा आक्राजातको धर्महराउ
 छ चारेजातमायायजववदछु तेसोसंसारभयासामजन्मलिछु धर्मवठाउछु पायघटा
 उछु ॥७॥ फेरिसुनहे अर्जुन संसारमासाधू हरकोवढियामार्गमालाग्याका प्राणिहरको
 धीभगवानुवाच ॥ वहुनिसेव्यतीतानिजमानित्वचार्जुन ॥ तांयहंवेदसर्वाणि नत्वं वेत्थपरं
 नय ॥४॥ अजोयिसंनव्ययात्मा भूतानांसीश्वरोयिसन ॥ प्रकृतिस्वामिद्विष्टाय संभवाम्यात्म
 वायया ॥६॥ यदायदा हि धर्मस्य गतानि भवति भारत ॥ अमुत्थानमधर्मस्य तदात्मानं स
 जाम्यहं ॥७॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुःकृतां ॥ धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि
 पुनः पुनः ॥८॥ जन्मकर्मचमेदिव्य मेवमोदेवितत्त्वतः ॥ तत्कदेहं पुनर्जनेति मामेति सो
 र्जुन ॥९॥ वीतरागभयक्रोधा ममयात्मा मुया श्रिता ॥ वहवो ज्ञानतयसा पूतामद्रूपमाग
 ती ॥१०॥
 रक्षागर्ननिमित्तडुहृकोघटियामार्गमालाग्याका प्राणिहरको नाशगर्ननिमित्तसंसा
 रमाधर्मराखनालाई युगयुगमाउत्यनजंछु ॥८॥ हे अर्जुन जोमनुष्यमेरायसुदिव्यज
 नकनसंपूर्णमायावैचिकनसाधुको रक्षागर्ननिमित्तभयाका जन्मकर्मकनजस्ताको
 तस्तो गरिजानोसु त्योमनुष्यशरीरछाडिकनयति फेरिजन्मनुमर्तुयदेन मैछेउलीन
 गरिमोक्षयाउछु ॥९॥ कस्ताकामोक्षजंछु भनि सोधोला सुनहे अर्जुन यत्त संसारमाठे
 रे मनुष्य हरु सुखभोगमा प्रीतिछोयाका संसार डरकनछाआका क्रोधरीसु काल्याका
 केवल सहिजस्ताभयाका मेरा आश्रयमाययाका मदेविअन्यत्रकोहि नदेखनो ज्ञानैरूप
 तयस्यालेयवित्रशरीरभयाका तिमनुष्य हरु मेरा भावनाकन जाछु न मोक्षजंछु ॥१०॥
 तिमिछेउवनिरागदेवरथाछु न कोहियेकलाई पियारोमानि मोक्षगराउदारथाछु न

भनोला मुनहे पार्थय स संसार मा जो मनुष्य जस्तान रहसित मेरो भजना गर्दछन्. जतिको भक्ति लगा
 ई कन मेरो भक्त गर्दछ मयनि उम् मनुष्य लाई उम्को कान अनुसार का फल दिना निमित्त उ
 गन्या सेले भक्ति अनुसार भक्ति गर्छु पियारो मांछु मेरो मार्ग मा पछिला ग्या का यावत मनुष्य छन् म
 वैतर हले मा घा छोडिकन मछे उ पुन्या चारवाट का सिद्धि कन एक देवि अर्को अर्को देवि
 पनि अर्को सिद्धि मा चढे जांछन् ॥११॥ हे अर्जुन यस् संसार मा फल को ईछा गरि आरा
 धना गर्ना छैछन् ईन्द्रादि देवता यनि मेरो आराधना गर्छन् परंतु यो कर्म भूमि डूनाले
 संसार मा गयो को कर्म चाडै सिद्धि जंछ अनेत्र ग्या का कर्म को छैरे काल मा सिद्धि जंछर
 ईन्द्रादि देवता को मोक्ष यनि चाडै जंछेन ॥१२॥ कर्मकारण ले अनेक कर्म ले यनि तसे गति मा
 जान्छन् अर्को को गति या उंछेन न भनि सो धौला मुनहे अर्जुन ब्राह्मण आदि भया का चारवर्ग
 ये यथा मा प्रयच्छते तान् तथैव भजाम्यह ॥ मम वर्त्तनु वर्तते मनुष्या यार्थ सर्वशः ॥१३॥ कांक्षतः कर्मणा
 सिद्धि यजत ईह देवता ॥ क्षिप्रं हि मा नु वे लो के सिद्धि भवति कर्मजा ॥१४॥ चानुवर्त्य मया मृष्टं गुण कर्म
 विभाग ॥ तस्य कर्तार मयि मा विद्य कर्तार मय्यय ॥१५॥ न मा कर्मणि लिख्यति न मे कर्म फले म्यहो ॥
 इति मा यो भिजानाति कर्म भिर्न सवध्यते ॥१६॥ एव जात्वा कृत कर्म पूर्वै रपि मुमुक्षुभिः ॥ कुरु कर्मैव न
 स्माच्च पूर्वै पूर्वतरु कृतः ॥१७॥ किं कर्म किमकर्मेति कवयो यजमोहिताः ॥ तने कर्म प्रवक्ष्यामि यदुजात्वा मो
 क्षसे भुभात् ॥१८॥ कर्मणो ह्यपि वो द्वयं वो द्वयं च विकर्मणः ॥ अकर्मणश्च वो द्वयं गहना कर्मणो गतिः ॥१९॥
 को मे ले निर्जना गरितत्त्व जत मो गण लेर कर्म सम दम सो र्य कवि सेवादि कर्म ले यद्यपि निर्जना गरि
 यो संसार को कर्ता होत यनि मकन अकर्ता जान को हिन गन्या जान के ले ना मन कृत्या मकन जान ॥२०॥ हे अ
 र्जुन जति य क कर्म छन् तिमिलाई लाग्न सकदै न मलाई कर्म का फल को यनि ईछा हुदै नन् जो मनुष्य
 मकन यस्तो हो भनि जान्दछ यो मनुष्य कर्म ले वाधिं देन ॥२१॥ हे अर्जुन यस्ता मकन जानि अधि अधि मोक्ष
 जना को ईछा भया का मुनि हल ले कर्म ग्या का मार्ग ले कर्मै गर हे अर्जुन अधिक राजा हल ले यनि य रा पूर्व
 देखि भै आया को कर्म गरि थोति मियनि कर्मै गर हे अर्जुन ॥२२॥ हे अर्जुन यस् संसार कृत कर्म गर्ना जंछ
 यस्ता बुद्धि भया का कवि हल यनि योहीत जंछन् यसै हो भन सकदै नन् जुन कर्म गरि कध्या रा ज्ञा हो त्यो क
 र्म ति मिलाई कहुंछु जुन कर्म गरि यम संसार देखि मुक्त ज्ञा छौ ॥२३॥ कर्म जो छन् संसार मा ग्या को देखि
 कन बुहिं देनन् अकर्म भन्या का ति न देखि वा हे क जति छन् कर्म वृत्तु कान ययो भनोला मुनहे अर्जुन
 जकारण ले कर्म भन्या को सा हल ले वता या को जज्जर ह तस्तर हसित न बुझि न ज्ञा करो कुरु वृत्तु जो यछ
 वि कर्म भन्या को ग्या का कर्म को पध्दो फल स फल्यार न स फल्य जांनु त्यो यनि कस्तो हो भनोला मुनहे अ
 र्जुन कर्म गरि कन जो गन्या गरा उंछा उहि छ ईश्वर हो भनि ग्या का कर्म ले यध्दो फल स प्री दिछन् यो कर्म

गया का हस्तपादादि इन्द्रियकर्तृ यत्ते मेरा शरीर ले कर्म गरियो भनि यत् अहंकार ले जो कर्म गरिछ
ते कर्म ले यत् जो फल सफल देन न गर्न कर्म राखिछन् भनियनि यो पेछन् कर्म को वाटो गै हो अन्धका
लछ बिना शास्त्र का ज्ञान ले जानि नैन ॥ १७ ॥ हे अर्जुन आम ज्ञान भया को जो गिछ कर्म कन अकर्म देवदह
कस्तो भनौला यत् ससार मा हस्तपादादि इन्द्रिय का व्यापार ले कर्म गया का ज्ञान कर्म गरियो मै जुं भन्या अ
हंकार ले गया का कर्म अकर्म जुं भनि देवदह जस्तै अति चाडो चल्पा काना उमावस्या को मनुष्य हर तीर का
विवेहि जा जस्तो देवदह थहरा इविचार गरि देवेर ना उहि जा को बुझिछ पैले को बुझि मर्वथ हर्छ ना
उहि जा को थहरा उन्मा बुझि जो छ मां चाथ हर्छ तस्तै यद्यपि कर्म न भया को आत्मा छ तथापि शरीर इन्द्रिय म
न उलैका आधार मा जनाले गर्ना गर उन्मा ओहि हो भनि देवि छ जो देवदह संपूर्ण मनुष्य मा को जो गियनि
कर्मण्य कर्मयः यस्य दकर्मणि च कर्मयः ॥ मनुष्य मा मनुष्येण स युक्त कृत्स्न कर्म कर्तुः ॥ १८ ॥ यस्य सर्वे समा
रंभाः काम संकल्प वर्जिताः ॥ शानानिदं च कर्मणा तमाहुः परित्यज्य ॥ १९ ॥ त्यक्त्वा कर्म यत्ना संगति
त्यत् प्रोति राक्ष्य ॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोपि नैव किंचिकरोति सः ॥ २० ॥ निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रह
॥ शरीर केवल कर्म कुर्वन्नाप्रोति किल्बिषः ॥ २१ ॥ यदक्षालाभसंतुष्टो दधातीतो विमत्सरः ॥ समसिद्धावसि
ष्टो च कृत्वापि न निवृत्तते ॥ २२ ॥ गतसंगस्य मुक्तस्य ज्ञानावाप्त्येत चेत्तसः ॥ यज्ञायाचरतः कर्म समप्रवर्ति
ते हि हो यादित यानि ते हि हो ॥ १८ ॥ नमजोगिका गया का कर्म जति छन् कामन ले संकल्प ले जित्छन् सु
षभोग का ईछा मायानि तिकर्म छैनन् ईआदिलोक ईछा मायानि कर्म छैनन् ज्ञानैस्वरूप अग्निले छटियारव
डिया कर्म सबै दग्ध भया का छन् उद्धा का छन् ते स मनुष्य कन जान्या हर यादित भनि भन्छन् ॥ १९ ॥ बु
द्धिमान मनुष्य ले कर्म छाड दिया प्राज्ञ अरु यनि कर्म गर्न छाडनान् भनि आत्म दर्शियनियम प्रकार सित कर्म
गर्छन् जुन हे अर्जुन जो मनुष्य कर्म का फल को आश्रान राखि आत्मा राखि कन द्याई न सकनु चीज या यायनि
ओहे देवि त्रिंजंछ अरु सुख भोग को ईछा राखेन आश्रयानि कसै को राखेन त्यो मनुष्य कर्म लागि रहेछ
तयानि केहि कर्म न गया जस्तो जंछ अर्थात् ते स ले गया का तिकर्म बन्धन जंछेनन् ॥ २० ॥ हे अर्जुन जो बु
द्धिमान पुरुष छ आत्मा केहि करा को यानि मां देन चित्त भयो इन्द्रिय भयो शरीर भयो जस ले जितिरावेछ सु
ख भोग छै अरु को यानि ग्रहन जस लाई छैन शरीर को आश्रय न भया का केवल कर्म गर्छ ते स मनुष्य
कन यनि यायला देनन् अर्थात् नगर्ने कर्म गयो तयानि यायला देनन् ॥ २१ ॥ हे अर्जुन कसै छेउ न
मानि जो मिल्यो उमै लागुछ ज्ञाना दधान भया को जाडो गरि ईत्यादि दुख भया का यनि न भया जस्तो मान्या
रीतराग कसै देखि नगर्ना यायायनि हर्ष विस्मय गर्वा वरो वरै मान्या जो सनि छ त्यो कर्म गर्छत यानि क
र्म का बन्धन ले का छिन्देन ॥ २२ ॥ ब्रह्म ज्ञाना मनुष्य जो छ तसारी क कर्म मा कदाचित् यशो नायानि ते क
न यत्ना जनाले वांछेन जुन हे अर्जुन कर्म भया कर्म का फल भया ईतमा आश्रान भया को धर्म यायदे

विष्णुकाको ज्ञाने मारहाको परमेश्वरनिमित्त कर्म गरि उनेलाई अर्पण गरि आत्माको नै न राखाको त्यो मनु
व्यका गयाको कर्म फल पावतु छ शरीर मार हर्ने न शरीर का कर्म ले वा धिन्देन ॥२३॥ फलको ईच्छा
न राखिकन गयाका कर्म क्या निमित्त हुन ईजा न्छन् भोला मुन हे अर्जुन जो हो मगरि छ दिछ त्यो
ब्रह्मे हो ईश्वर हो हवि जो छ घन अन्न आदि भयाको त्यो पनि ब्रह्मे हो अग्नि जो छ ते समा हो मनु छ त्यो पनि
ब्रह्मे हो हो मगर्न्या कर्त्ता जो छ त्यो पनि ब्रह्मे हो भनिक कर्म लाई एकाग्र ब्रह्म ई कर्म गन्या जो छ पर
ब्रह्म मा युग्द छ मोक्ष कुंछ अरु कर्म फल भोग गर्नु यदै न ते मलाई ॥२४॥ सबै काम तले धर गयाको योग
ज्ञ कहिकन अरु अरु मत का यज्ञ पनि कह छ हे अर्जुन को हि आचार्य हर आत्म ज्ञान भयाका हर कर्म
गर्ना हर देव जग र्छन् यज्ञ ले देवता मनुष्य गराउ छन् भनि म्छन् को हि जोगि हर ब्रह्मे स्व रूय अग्नि आ
त्म स्व रूय यज्ञ र्छन् यज्ञ परमात्मा यकै देविकन यज्ञ र्छन् भनि म्छन् ॥२५॥ को हि बुद्धि मान हर श्री
ब्रह्मार्पण ब्रह्म हवि ब्रह्माग्ने ब्रह्म रण कुत ॥ ब्रह्मे वनेन गतव्य ब्रह्म कर्म समाधिना ॥२६॥ देव मेवा वरे यज्ञ जोगि
न पशु या मने ॥ ब्रह्माग्ना वरे यज्ञ यज्ञे नैवो यशु कृति ॥२७॥ श्री नादि सिद्धि या राय ये संयमा प्रियुजु कृति
॥ शब्दादीन् विषयानये ईन्द्रिया प्रियुजु कृति ॥२८॥ सर्वाणिन्द्रिय कर्माणि प्राणा कर्माणि चापरे ॥ आ
त्म संयम योगागौ जु कृति ज्ञान दीपिते ॥२९॥ इव यज्ञा स यो यज्ञा योग यज्ञा स तथा परे ॥ स्वाध्याय ज्ञान
यज्ञाश्च यतयः स शिष्य वना ॥३०॥ अयाने जु कृति प्राण प्राणे पानं तथा परे ॥ प्राणा पान गती रूद्र प्राणा या
म परा यरा ॥३१॥
तादी जति ईन्द्रिय र्छन् यम स्व रूय अग्नि मा हो म गर्नु ईन्द्रिय भौचिकन बुद्धि मारा वने यज्ञ भन्या को त त्यो हो भन्छन्
अर्जुन त्या जोगि जो छ शब्द रूय रस गन्ध जो छन् ईत्यादि जति ईन्द्रिय देवि उत्पन्न भयाका मुख दुःख र्छन् तिसवै श्री वत्
रु ब्रह्म जिज्ञाना सिका मा कुन यज्ञ ताते यो हो भन्छन् अग्नि स्व रूय ईन्द्रिय मा शब्दादि विषय कुंछन् ॥३२॥ अरु
हन् जान्य जो छन् संपूर्ण ईन्द्रिय का कर्म जति र्छन् प्राणिका कर्म जति र्छन् इलो सातु ईत्यादि जति र्छन् बुद्धिले संपू
र्ण भौचिकन एकाग्र तुल्याई कत जगाया का वल्दा आत्मा का ज्वाला मा हो म गर्छन् यज्ञ ता मे यो हो भनि म्छन्
॥३३॥ सत यात्र मा यज्ञ दान गारि द्रव्य कन पनि ब्राह्मण कत पनि पर ब्रह्म जानि द्रव्य ले जोग गन्या अनेक बुद्धि मान
हर तय स्याकै यज्ञ भया र्छन् तप स्या भन्या को संपूर्ण भौचिकन आत्मे माल गाई रावतु को हि मुनि हर यो
गे स्व रूय यज्ञा र्छन् योग भन्या को आत्मा मा आत्मा मिलाउनु यस्का आड अंग कुन को हि मुनि हर य हन्
पुछाउनु स्वाध्याय नाउ गया को यज्ञ र्छन् को हि मुनि हर वेद का अर्थ को विचार गर्नु जो ज्ञान छ ते हिय जग
र्छन् को हि जोगि हर ब्रह्मे मा रुद्र वा द्या यरादि मात्र लाग्पा र्छन् ॥३४॥ को हियोगि हर उधो जान्या प्रा
णा मा उधो ति र्जान्या प्राणा हो म गर्छन् ते स प्राण ले ब्रह्मा राड पु र्छन् प्रेरि रेचक प्राणो कन छो दन्या
समय मा उधो ति र्जान्या प्राणा मा उधो ति र्जान्या प्राणा हो म र्छन् ना कले प्राणा द्वा र्छन् के रिकुं भ क ना र्छ

प्राणायाममाउभोकोयनिउधोकोयनिप्राणाथनिकनप्राणाकनयनिअपानकनयनिचवतनदीकनरा
 बदधनयसेनिमकारकोप्राणायामयनगर्हयसेमलागिरह्याकाधन॥२८॥ अहवाताकानियम
 मारह्याकाअनकोधारणागर्गजोगिहस्यवन्तावन्धनप्राणोमाऊमध्ववायुमक्षरागारि
 हं हं नूननूनवतासुकनजितहउसेमाअरुवतामकनऊमध्वयानियजजोपादिजनिमुनिह
 रुहन्तिमवेआकुआकुलेगयाकानजनेयापनाशगयाकापाविशरीरभैरहं॥२९॥ हेऊ
 हसतमवडामजनहेअर्जुनतियजगारिकनभयाकोअमृतरसवाईकनसलोवऊन्यामुनिह
 हजनिहन्अथवाजशगारिसक्यायस्त्रिविधपूर्वकलेभोजनजोमनुष्यलेगर्हन्तिजोगि
 हलकेलेयतिनाशनऊन्यापरब्रह्ममाजाहन्जोमनुष्यजशगर्हन्तामिलेकहिआयाका
 जस्येकपनिगर्हन्तिनहलाईकोनैलोकमाहंनन्तेसलेजसलोकमअन्याकासकल
 अयरेनियताहाराप्राणान्प्राणेषुजुहति॥ सर्वेयेतेयशविदो जशक्षयितकल्मसा॥३०॥ नर
 शिष्टामृतभुजोयानिब्रह्मसनातन॥ नायलीकोस्ययतस्यकृतोयऊरुसतम॥३१॥ एवंऊविधाय
 तावितताब्रह्मणोमुखे॥ कर्मजान्विद्वितासर्वामेवज्ञात्वाविमोक्षसे॥३२॥ अथानुद्वयमयाज्ञातता
 नयज्ञपरतय॥ सर्वकर्मखिलपार्थज्ञानेयारिसमाप्यते॥३३॥ तद्विद्विप्रणियातेनपरिप्रश्नेनमेवया॥ उ
 पदेक्षानितेशानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिन॥३४॥ यदुज्ञात्वानयुनर्मेहमेवयास्यसियाण्डव॥ येनभूताय
 शेवेराद्रक्षस्यात्मन्यधोमयि॥३५॥ अयिजेदमियायेभ्यः सर्वभयायकृतम॥ सर्वज्ञानप्रवेवेवहमि
 केहिहंनन्अरुथोकतातेस्काक्यासिद्धऊनान्॥३६॥ हेअर्जुनयमप्रकारकाईअनेकयज्ञजोऊन्संपू
 र्णप्राणराकामुषदेविनिस्वयाकाहन्कर्मदेविभयाकाऊन्भतिजानकायिकवांचिकमानसिकय
 जऊन्आत्मादेविभयाकाहंकवनिहोईनन्आत्माननिर्व्यापारकोहिनगर्ग्ययज्ञोजानिकनक
 र्मगरमोक्षहो॥३७॥ हेपरंतयद्रव्ययज्ञमंदद्रव्यलेआरभगयाकायज्ञमंदाज्ञानयज्ञबेष्टह
 पार्थयावत्कर्महन्संपूर्णज्ञानेमालादहन्ज्ञानेमालीनऊहन्॥३८॥ तेस्तोज्ञानकसोगारि
 ऊहंभनोलाभुनहेअर्जुनतद्विद्विनियेलेगणकाइरागमापरवडोगुरुकामकिगरुगुरुकनसहु
 हभयाकाप्रथमगरज्ञानकोउयदेसलोहगुरुलेकह्याकोज्ञानकोसेवागरवडोअभ्यासगरिविवा
 रगरतत्त्वज्ञानजान्यादिव्यदृष्टिभयाकामुनिहस्यनिमिमिलाईसंपूर्णज्ञानवताऊनान्॥३९॥ हेपा
 रडवजूनज्ञानजानिकनकेरिअज्ञानमाजान्याहंनूनज्ञानजान्याप्रानेयावप्राणिकनसंपूर्णप्रका
 रनेआहंआत्मादेवलाआत्मायनिकोनहोभनोलाभैऊन्यावत्साराहसवेमैमिबदेवोला
 ॥४०॥ हेअर्जुनयथापिअनेकयापधदायनिसंपूर्णयातकिभदायनितिवडायातकिभयायनिता

नैस्वरूप्यनावेसाचव्याप्राप्तपायेस्वरूपसमुद्रतरि पारहोलातवज्ञानभयाप्राप्तपापरहदेन **॥३३॥** ज्ञान
लेकस्तरहसितपायकोनाशगर्हन्मनोलाभनहेअर्जुन जसैयज्ञकोअग्निजोछकाठकनभस्मगर्हन्
तसैज्ञानस्वरूपअग्निनेसंपूर्णकर्मकनभस्मगर्हन् एकयनिराखदेन शरीरमाघटिया कर्मकोफल
पायहोस्तयानिसहजेनकृडाछन् **॥३४॥** हेअर्जुन यससत्तारमाज्ञानबरोवर पवित्रकेहिछैनअरुयाव
नृपवित्रगंगाजलआदिभयाकाजनिबलुछन् सवैज्ञानलेपवित्रकृच्छन्त्योज्ञानयानियोगलेसाधिछन्
कर्मयोगलेसमाधिरनिरनरविचारगारिछेरैमिहिनत् गरिवडुतेदिनयाईछत्योज्ञानआत्मासाक्षा
त् **॥३५॥** जस्तरहलेसाधनागरिअत्मज्ञानमिच्छलोउयायकहछु हेअर्जुनजोमुमुक्षुआत्मापुण्या
कनबडोअज्ञानभयाकोछगुरुकोसेवाजातत्परछुकोनेवातमायानिबुक्छैनसंपूर्णमुखदेखिइंद्रिय

नसत्तरिष्यसि **॥३६॥** यथेधांसिसामिद्वेष्टिभस्मसाकुरुतेर्जुन **॥** ज्ञानाग्निःसर्वकर्मोहिभस्मसाकुरु
तेतथा **॥३७॥** नहिज्ञानेनसदृशपवित्रमिहविद्यते **॥** तत्त्वययोगसंसिद्धिःकालेनात्मविविदति
॥३८॥ भुक्त्वावातुलभतेज्ञानतत्परसंयतोद्विज **॥** ज्ञानलब्धपरांशान्तिमचिरेणाधिगच्छति **॥३९॥**
अज्ञाश्चाश्रधानश्च संशयात्माविनश्यति **॥** नायंलोकोस्तिनयरोनमुषसंशयात्पन **॥४०॥** योगसंन्यस्त
कर्माणि ज्ञानसंछिन्नसंशयः **॥** आत्मवतंकर्माणिनिवधुंतिवतंजय **॥४१॥** तत्मादज्ञानसंभूतहृत्स्थज्ञा
नास्तितात्मत **॥** छित्तैनसंशययोगमातिष्ठोनिष्ठभारत **॥४२॥** इतिश्रीमद्भगवद्गीतासुपनिषद्सुब्रह्म
विज्ञायायोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविवर्धतयोगोनामचतुर्थोऽध्यायः **॥४३॥**

कनवैविवसमाख्याइराखुत्योमुनिमोक्षज्ञानकनअवस्ययाईछ **॥४४॥** यसब्रह्मज्ञानमासदेहमाया
पापिछहोनुनहेअर्जुन ज्ञाननभयाकोआत्मज्ञानजात्याकोअज्ञानभयाकोचितमासदेहभयाको
कृच्छताहांजोछत्योमुमुक्षुउसैवेरजाछसत्तारमाजन्मभयाकोकासकेहिलाछैनतेस्कनयो लोक
पनिछैनयरलोकयनिछैनआत्माकोसंशयमायासुखकोमुखकेहिछैन **॥४५॥** हेधनंजययो
योगलेत्यागगयाकाछन् कर्मजकाजोगभयाकोपरमार्थजानुपरमार्थबुद्धिकर्मत्यागगयासु
निजोछआत्मज्ञानलेसंपूर्णसंशयसदेहफात्याकोजोछकेवलआत्मैस्वरूपभेगयाकोसंपूर्णप्रा
णिकनएकेदेखुतेस्कनकर्मजनिछन्वाधनसकदेन **॥४६॥** हेभारत तसर्थअज्ञानआत्मावात
उत्पन्नभयाकोहृदयमावस्याकोयत्नायोसंशयकनआत्मज्ञानस्वरूपतरवारलेकाहसदेहफा
लयोगमारडुआत्मकासाधनमायनयुद्धगर्भउठतिमिभारतराजाकावडाकुलमाजन्मलियाकोति
मिहेअर्जुन **॥४७॥** इतिश्री **॥४८॥** संपूर्णब्रह्मेजानु कर्मछोडिदिनुभविअधिभत्यांथांसंपूर्णसदेह
काद

उद्धगर्त उठ भनि फेरि कर्म देवा उद्या कर्म त्याग गर्त कर्म गर्त ई दुवै कर्म को घर स्यर विरोध कृत नाले सका
 मनुष्य के देर न गरि सकनु भयो फेरि अर्जुन विनि गछन् हे कर्म कर्म को त्याग गर्त भनि जाना सि
 द्ध कर्म सां ईत्यादि वचन वृथा यो फेरि यति योग सार ह उद्धगर्त उठ भंछो कर्म नाल गा उछो ई
 ईसा जो बाढिया हो एक थहराई कन सलाई आग्या गर्या हिकराग या घर कल्याण कछ भनि नि
 भय गर ई देउ ॥ १ ॥ अर्जुन काति वचन सुवि कन भगवान् आग्या गर्छन् हे अर्जुन यावन कर्म छन्
 ति संपूर्ण छाडि परमात्मा देवि नृपुञ्ज उत्यो संन्यास हो यग्यादिकर्म गरि कन को ईश्वर रावि ईश्वर को
 आराधना गर्त कर्म योग हो संन्यास यानि यो भनि ई दुवै मोक्ष गर उत्या हो वरुन यो संन्यास कर्म भू
 मि हो कर्म छाडि कन आराधना गर्त भन्दा ज्ञान भै कन कर्म छाज भन्दा कर्म योग छेछ् ईश्वर का निमि
 त्त कर्म गर्त तेहि छेछ् हो ॥ २ ॥ हे महाबाहो यत्ना प्रकार सित कर्म गर्त योगि जो छ सधे संन्यासि

अर्जुन उवाच ॥ संन्यास कर्म गण कछ भ युत यो गंच शंसि ॥ यद्येय सत यो रेक तन्मेव हि सुति ॥ श्व
 तम् ॥ १ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ संन्यास कर्म योग धनि श्रेय सकरा वभौ ॥ तयो सु कर्म संन्या
 सात् कर्म यो गो विशिष्यते ॥ २ ॥ श्रेय सति स संन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति ॥ निर्द्वन्द्वो हि म
 हाबाहो सुखं बंधा प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ सांख्य योगो दृढ कृवाणा प्रवदंति न यं शिदिता ॥ एक म
 प्पस्थितः संन्य गुभयो किं दते कल ॥ ४ ॥ यत्तां ख्ये प्राप्यते स्थानं त शौ गै रपि गम्यते ॥ एकं सांख्य

ज्ञान सुख कृतान् भनि ईछा गर्दै न दुःख यर्न भनि गा हो सन्देह न जडोगर्त ईत्यादि सायानि एक नाश
 मांछ यम प्रकार ले कर्म गर्त कर्म बन्धन देवि मुक्त हुंछ ॥ ३ ॥ ई दुई योग मा कन छेछ् हो भनु ज्ञान
 को काम हो ईन जुन हे अर्जुन न जान्या हन् विधि पूर्वक कर्म गर्त सांख्य हो कर्म ले ईश्वर का आराधना ग
 र्त योग हो सांख्य को योग को भिन्ने कल छ भन्छन् तिय शिदिता हो ईन ई दुई मा सका को निश्चय मा
 निकत गया प्रात दुवै को छ के कल दिछ ॥ ४ ॥ क सो गरि के भयो भनी ला सुत हे अर्जुन ज्ञानि
 भै कन कर्म छो डि सांख्य योग मा ला ग्या का संन्यासि मोक्ष स्थान नाई या उछन् जुन स्थान सांख्य
 हर्पा उछन् उहि स्थान ईश्वर का निमित्त कर्म गर्त योगि हर्पा उछन् ई दुवै को छ के कल ज
 गने दुवै लाई छ के जो देव छ त्यो मनुष्य देव नै हो भनि जानु ॥ ५ ॥ हे महाबाहो केरि सुन संन्यास
 भन्दा को विना योग ले या उत वडी कल छ बुद्धि योग जो छ विना कर्म योग ले जन्दै न कर्म जो ग
 सा ला ग्या को मुनि जो छ डि ब्रह्म ज्ञान या उछन् ब्रह्म ज्ञान या या प्रात मोक्ष ऊछ ॥ ६ ॥ कर्म ला ग्या
 प्रात कर्म बन्धन सा क्या न यो रैन भनि छो वो ला सुत हे अर्जुन कर्म योग मा ला ग्या को कर्म ले ईश्वर

को आराधना गर्ना जो छ सुबुद्धि भयाको अज्ञान कानि न भयाको इन्द्रिय यानि जिह्वाको संपूर्ण
जगत्संसार का प्राणिको र आत्मा संके मान्या भयाको मुनि जो छ अरु ले गया संसारि
क कर्म कदाचित् गयो तयति तिकर्म लेशरि मा लिपि देन नु तो मुनिकर्म बन्धन माय देन ॥ १ ॥
॥ कर्म गरियो मैले बाह्या कर्म गरियो जो छटि पा कर्म गरियो भति चित्त मा भया प्राप्त क्यात कर्म
लिपि देत भति सो धौला मुन हे अर्जुन कर्म योग ले युक्त भयाको ब्रह्म ज्ञान जान्या मुनि जो छ न देवि
कनयानि ईने आंखा जून न मता केहि जान्ने न भति सो देखाको आंखा देखि भिन्न आत्मा पुन्या उदेन
आमा मालीन गरा उछ केहि गया यति को ह गयीन मुन्या यति मुनीन छोया यति छुईन मुक्याय
निसुकिन बाया यति बाईन हिजा यति हि डिन मुन्या यति मुनिन चा सफेया यति केरीन भन्या
सवेथी कमा सहि ज्ञान कुंछ ॥ २ ॥ बोल्या यति बोलिन केहि वनाया यति वनाईत केहि व सुलि
या यति मैले लीन निमिष उघाया यति उघारीन चिलाया यति चिजीन इन्द्रिय का अर्थ इन्द्रि
य योग च य यशस्वि स यशस्वि ॥ ५ ॥ संन्यास सु महावाहो उख मा पु म योगत ॥ योग युक्तो
मुनि ब्रह्म अचिरे गाधि गच्छति ॥ ६ ॥ योग युक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रिय ॥ सर्वभू
तात्म भूतात्मा कुर्वन्तपि न लिप्यते ॥ ७ ॥ नैव किंचित्करोमिति युक्तो मन्थत तत्त्ववित् ॥ यशस्व
श्च रावन्स्य शत जिघ्रन्तश्च न गच्छन् श्वयत्नश्च सत् ॥ ८ ॥ प्रलयन् विमृजन् गृह्णन् उत्तिष्ठन् तमि
व नपि ॥ इन्द्रियाणिन्द्रियार्थेषु वर्तन्ते इति धारयन् ॥ ९ ॥ ब्रह्मण्यधाय कर्माणि संगम्य त्का
मेव समजन् इन्द्रियदेवि कुंछ इन्द्रियदेवि कुंछ सुख कुंछन् ईत ले गरि आत्मा कन वाडु कन केहि
कुन्दैत भन्या यहि बुद्धि को धारणा गया कुंछन् र गर्ना म कुं ई भन्छन् तित सो जान्या ह ॥ १० ॥
जम प्रकार ले कर्म बन्धन कुन्दैत तो प्रकार कुंछ हे अर्जुन गया काया बत्कर्म छत ब्रह्म भन्या
को ईश्वर सा देखि कन हे भगवन् ते रौति मित्त कर्म गरियो तं जान्नु भन्या बुद्धि ले कर्म का फल को
मोक्ष को पानि ईछन् राखि जून मुनिकर्म गच्छन् ते मुनि छे उ पाय नि पिन्दै ननु कदाचित् पाये
गरियो तयनि शरि मा ठहरु सकदैतनु कमल का पात मा याति हा ल्या जस्तो भै कन या द
नि शरि मा नलागे बसि जाछन् ॥ १० ॥ चित्त मुद्रिक सो गरि कुंछ भनौना मुन हे अर्जुन कर्म योग
गर्ना योगि जो छन् आत्मा मुद्र हवो मुभन्या निमित्त शरी ले मन ले केवल इन्द्रिय ले यनि संपूर्ण
फल को ईछा छोडि कन आक्रानि मित्त कर्म गच्छन् ॥ ११ ॥ ईने कर्म ले कोहि बांछि छन् कोहि बांछि
दैत भति सो धौला मुन हे अर्जुन कर्म गर्ना योगि जो छन् कर्म का फल को ईछा राख्दै नर सत्ता बले
सुख भयाको निर्मल मोक्ष कन पाउछ ज्ञान न भयाका कर्म गर्ना ह सु जो छन् काम भन्याको फल

तयि
ज
जुन
नछ
हि
रमे
छ
भग
जो
करो
रपि
नौ
ले
ज
तं
ते
पर
ज
कर्म
अन
या
जम
दछ
ला
कन
य

तमिलोसुभंयाहेतुलेकर्मगर्हन् यमसंसारमावादिहन् जन्ममृत्युसुखदुःखव्यवहारगर्हन् ॥११॥
जन्मावृत्तज्ञानसिद्धभयाकोष्ठतेसलेसंन्यासगर्हन् कर्मत्यागगर्हन् श्रेष्ठभक्तिकहंछुमुनहेअ
र्जुनसंपूर्णहिंदियवसमाख्याकोसंन्यासिजोछन् संपूर्णमनलेत्यागगरेरुसुखपूर्वकवत्छन्
नकारलेयुक्तभयाकोउईकान्तडईआंवाडुईनाककाछिइइकमुखमुनद्वारुण्डद्वारयाति
छिइभयाकोशरिमाछतवाडुकर्मगर्हन्तअर्कलाईगराउछ ॥१२॥ गन्यागराउन्याप
रमेश्वरभयापछिईशरुलाईक्यानयायलायैननुभानिसोधोलासुनहेअर्जुनप्रभजोआत्मा
छआपुदेविसंसारउत्पन्नगराउछ यममुलुकगन्याआकुजदैननोप्रभजोछकर्मउत्प
न्नगराउदैनरथभयाघटभयाईत्यादिकर्मभित्तभित्तगरिवनाउदैनकर्मसितफलको
जोजनागरिपरियराईदिदैनस्वभावलेमायाकनगर्नालेआयेउत्पन्नजंछन् ॥१३॥
करोतिय ॥ लिप्यतेन सयायेन पश्यत्रमिवांभसा ॥१०॥ कावेनसावुधा केवनेरिदिये
रपि ॥ योगिनकर्मकुर्वन्ति संगत्यक्तात्मसुखये ॥११॥ युक्तकर्मफलत्वात्का शान्तिमाप्नोति
नौष्टिकि ॥ सयुक्तकामकोराफलेसकोनिवध्यते ॥१२॥ सर्वकर्मातिमनसा सत्यस्या
लेमुखवशी ॥ नवद्वारेपुरिदेहि नैव कुर्वन्कारयत ॥१३॥ नकतत्त्वंनकर्माणि लोकस्य
जजतिप्रभु ॥ नकर्मफलसंयोगस्वभावस्तु प्रवर्तते ॥१४॥ नादत्तेकस्यचित्पायं नवेवमुक्त
तंविभु ॥ अज्ञानेनाहतंज्ञानं तेनमुह्यंतिजंतवः ॥१५॥ ज्ञानेनतुतदज्ञानं येवांनान्तमात्मन
॥ तेवांमादित्येवदज्ञानं प्रकाशयन्ति तत्परं ॥१६॥ तदुद्धयस्तदात्मानं स्तन्निष्ठास्तवरायणाः ॥
परमार्थकोतत्वकहंछुमुनहेअर्जुनभगवानुजोछकसैभक्तकोयायजोछआकुलिदैनउक्तमं
जयकाकर्मगर्हआफेनष्टजंछन्भक्तहुरुलाईकर्मभयायमभयाकेहियनिदिदैनगयाका
कर्मभगवानुलाईअर्थरागयाकातिकर्मयानिभगवानुलिदैननुजगामाथर्जानालेआफे
भनन्तजंछन्अज्ञानलेज्ञानछोयिदियाकोजंछमेलेदियाकोपरमेश्वरयाउछन्दिछन्भ
यामोहमाजाछन् ॥१७॥ ज्ञानेहुरुतामोहमायदैनुनहेअर्जुनलेबुद्धिकनछोयनाअज्ञान
जसमुनिहुरुज्ञानलेवासगरिरायाछन्तिनहुरुकाआत्माकनमूर्यजस्तोउत्पालोगरिरावृ
दछन्तिनहुरुकाज्ञानमापरवृंहसवैप्रकाशछ ॥१८॥ तत्पुरुषजोछपरवृंहउमैमाबुद्धि
लायापरवृहैमामपूरकर्मराखिवस्याकापरवृहैमागतिभयाकाअर्कोवागेनभयाकावृंह
कनपियारोमांन्याज्ञानावैकबुद्धिआत्माकनज्ञानलेसंपूर्णपायसंसारकादोषकल्याका
यज्ञामुनिहुरुजोछन्संसारमामर्जुनमनुयदैनमोक्षजंछ ॥१९॥ तिनिहुरुलेतत्वकसुप्रकार

लेदेविंछभनोतामुनहेअर्जुन जोयव्रंजान्या मुनिजोछन् पण्डितनस्कनभन्छन् समदर्शिः सर्वे प्रा
णिहृकनकोरोवरेदेवत्याहन् संपूराविद्यापद्या कावठियाकर्मगर्भासायकीवांछणमाहस्तिमा
गाईभयाईत्यादिवीरजो गणिमायनिकुताभया चारणलइत्यादि तमो गणिमाकोरोवरे एकेव्रंजदेव
छन् सर्वेव्रंज उहि हो भनिमाछन् ॥१८॥ यमसत्तामाति पंडितहृले गर्भाभयाको जन्मजोछ नि
तियाकोछ वममागरयाकोछ उन् हृको मन यनिवांछणहस्तिचारणलमाकोरोवरे छक्याकारणा
भनोता चारणलादिमा यनि पायपुण्यएकेछ तेम् सत्तामादिमाभयाका पाय सत्ताकादोषन
भयायव्रंजमायुकदछन् भनिसंपूर्णव्रंजानिसत्ताकादोषजतिछन् व्रंजगराईकगतस्का
रणले पाण्डितहृसर्वेव्रंज मारहंछन् ॥१९॥ व्रंजजान्याकोतक्षणाकाकुछ भनिमोभोला मुनहेअर्जु
व्रंजदेवत्या मुनिजोछ बियारोवस्तुयायायनिवृत्तिजुदेन मननपयाकोवस्तुयायायनिगा हो मारे

गच्छस्य पुनरावृत्तिं ज्ञाननिष्कृतकल्मसा ॥२०॥ विजयितयस्यने व्रंजनेगविहस्तिनि ॥ मुनिचेवभ
याकेवः पाण्डिताः शमार्शन ॥२१॥ ईहेवनेर्जितः सगर्गे एवासाये स्थितमत ॥ निर्देवहि समव्रंज त
स्मा व्रंजगिते स्थिता ॥२२॥ नप्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्यायवा प्रियः ॥ स्थिरबुद्धिरममूढो व्रंज
विद्वं ह्राणि स्थितः ॥२३॥ बाह्यस्पर्शं क्षशक्तात्मा विन्दत्यात्मनियत्सुखः ॥ सव्रंजयोगयुक्तात्मा सुख
मक्षयमधुते ॥२४॥ येहि संस्पृशंता भोगा दुःखयोनय एवते ॥ आश्रयतवतः कोनेयनतेषु रमतेषु
नयो मुनिकसोजान स्थिरबुद्धिव्रंजदेवि अर्को नदेवत्या अज्ञानकतिनभयाको व्रंजजान्या व्रंज
मारहाको जान ॥२५॥ अज्ञानछाडिकन छिरबुद्धिजुन्या प्रकारमकहंछु मुनहेअर्जुन बाहिरका सुख
जोछन् मालारचन्दनस्त्री आदिभयाका तेस्मा गयाका चित्तकनवैचि केवलघटिया यदार्थरहा
छन् ईनमा आसक्तनभैकन आत्मा जुन्या मुनिजोछन् कैलेनमकिन्या सुखकाभोगगछतः ॥२६॥
हेकोनेय कुनिका यचतिमिमुनहेअर्जुन जस्कारणालेजो मुन्याहृ इन्द्रियकारस शयस्य शोदि
वाउत्पन्नभयाका सुखभोगकस्ता तिसुखउत्पत्तिरविनाश जुन्या अवता सुखभया यस्से सुखरह
नाभन्दायनिहराई जान्या फेरिकस्ता दुखजमाउत्पत्ति सुखभया अवकोहिदीनमा दुःखयछंरुभनि
जान ईदिया अज्ञानिछन् उन्नेमात्र ई सुखदेविरमाउछन् बुद्धिजो जान्या छन् सोतारमाउदेन ई सुख
कन दुःखेदेवछ ॥२७॥ हेअर्जुन यहिसत्तामा जिउदोछेदेका मकारकोधकारवेगमहतसकछन् काम
भन्याको सुखतेस्कोवेगभन्याको देखिकनभयोछोईकन चिताईकन यनिभयो सुखगतीतिमित्तय
सायकाहात हिजाको पाउ उद्याकोलीग ईत्यादिकामकरवेगकन सहृ कोधभन्याको देखिचि
ताई सुनिकन परिआफना सुवनछ गरिदिया यदार्थजोछ त्योकोधहो तेस्कावेगभन्याको आंगकं

पाठ
मज
छ
गणि
माने
भय
प्राणि
भया
ममे
धः
नर
तिः
॥२५॥
स्य
॥२७॥
प्रका
वा
रउध
द्रिय
महि
रा
ला
पात
तयस
को
त्याग

पाठ्याडांतूकन्या रातानेवज्या ईत्यादि कोध देविभयाकावेगकन जो मनुष्य सहज सकल पो
 मनुष्य बुद्धिमान हो तो मनुष्य सर्वदा सुख हो ॥२३॥ हे अर्जुन जो मुनि आत्मा के मुख कन मुख जांद
 छ बाहिर का मुख कन जानै न आत्मे सित आरा मृग छ देव छ बाहिर छ हस्त सित गन्या की डादि
 गरि आरा मृग जानै न उ मुनियनि आत्मे सादेव छ बाहिर का सूर्य अनिको उज्जालो उज्जालो
 मानै न तो जोगि जो छ ब्रह्म स्व रूप भयाको मोक्ष कन या उछ ॥२४॥ केरि मुन हे अर्जुन बडो ज्ञान
 भयाको सखि हू याय संपूर्ण नष्ट भयाको संसय कति न भयाको आत्मा जित्याको संसार का
 प्राणिको कल्याण चिंतना गन्या पर ब्रह्म नाली न उछ न ॥ केरि मुन हे अर्जुन काम को ध देवि मुक्त
 भयाकारि निराग छाजा का जोगि हू का चित्त जित्या का आत्म ज्ञान भयाका यत्ता संन्यासिका
 न मोक्ष भयाको यनि जिउ नै माछ सखे अधिवाट र ह्याको छ ॥२५॥ ध्यान ले आत्मा कन देख न्या
 ध ॥२६॥ शक्ती है वय सो छु प्राक शरीर विमोक्षणात् ॥ काम को धो दुव देगं सयुक्त ममुखी
 नर ॥२७॥ यो न सुखोत्तर राम स्तथा तज्येति रेव च ॥ सयोगि ब्रह्म निर्वानं ब्रह्म भूतो विगछ
 ति ॥२८॥ लभते ब्रह्म निर्वानं मृगय क्षीण कल्मषा ॥ छिने द्वै वायतात्मानं सर्व भूता हिते रता
 ॥२९॥ काम को ध विमुक्तानां यतीनां यत चेतसां ॥ अभितो ब्रह्म निर्वानं वर्तते विदितात्मना ॥३०॥
 त्य शत्रु कृत्वा बहिर्वाद्या श्वश्रु श्वे वा तरो भुवो ॥ प्राणापानौ समौ हत्वा नासाभ्यंतर चारिणौ
 ॥३१॥ यते ह्रिय मनो बुद्धि मुनि मोक्ष परा यरां ॥ विगते छा भय को धो ए सदा मुक्त एव स ॥३२॥
 प्रकार कह छु मुन हे अर्जुन बाह उत न भयाका शब्द रूपा दिया वतु इन्द्रिय छ नृति कन बुद्धि
 वाट भिन्न न हलि बाहिरै राखि कन उवै आंखि भुमा अंतर माने न कन राखि उभोति रचन न्या प्राण
 र उधोति रचन न्या अयान इ उवै वा गुला ई वरो वर गराई कन ना के भिन्न राखि ॥३३॥ संपूर्ण ई
 द्रिय जिति मन कन जिति बुद्धि कन जिति मोक्ष मात्र गति हो अर्को के हिय नि छैन भन्या चित्त
 नहि संपूर्ण चित्त को ईछा छोडि डर पानि सवै देखि न राखि सव कानि जु मुनि सदा सर्वदा प्रा
 णाया मलै आत्मा को आराधना गर्छ तो सखे मुक्त छ ॥३४॥ ते स्ते कया बुद्धि भनि सो धो
 ला मुन हे अर्जुन संपूर्ण यज्ञ को रत यस्याको देवता का भै कन भोग गरि दिन्या स्वर्ग मर्त्य
 पाताल को ति नै लोक को स्वामि संपूर्ण प्राणिको पियारो भिन्न यत्ता मकन जांद छ र तो
 तपस्या गन्या मुनि जो छ मोक्ष ऊछ ॥३५॥ इति श्री भगवत् गीता भाषायां ॥ ४ ॥ कर्म फल
 को आश्रान सखि नीत्य नै मितिक कर्म जो छ जो मुनि गर्छ तो मुनि संन्यासिको संपूर्ण कर्म
 त्याग गन्या हो तो जोगि हो कर्म का फल को ईछा न राख न्या यनि तेहि हो ते स्का अति साध्य

क्रिया रहने ते स्नेय गगन अग्नि माझ मनुय देन लोक न गगन पतिवोला उदेन ॥ २२ ॥
हे पार्थ जस कन संयास भानि मुनि हक मंडन ते मै कन योग जान कोहि जोगि हस्यनिक कर्मका
फल को त्यागन गरि स कल्पन छोडि जोगि हुंदेन संयास भन्या को यनिक कर्मका डिहुं छुं डुवें
को गति ये के हो ॥ २३ ॥ जून मुनिका तव स्यामा वहुना को ईछा छ ते मुमुनिले कर्म ले योग क
न गर्नु वनाया को छ तो मुनियोग वहुना प्रात कर्म त्याग गरि संयासि जून सहजे सक छ ॥
२४ ॥ मुनियोग वहुं भतिक स्तर रहने जानु भनौला मुन हे अर्जुन जब ईंद्रिय का शब्द रूप रस ग
ंध स्पर्शादि सुख माता गेदेन ईछा छाड छ कर्मका फल को ईछा गेदेन यस ससार मा सुख
भोग र फल को का सुख यनि ईछा न राखि कर्म गछ तो संयासि जो छ जोग माव छे छ भनि
कहि छ हे अर्जुन ॥ २५ ॥ जब जोग ययो ताहां पछि अरु प्रयोजन न भया को यस ससार

भोक्तार यज्ञ तयसां सर्वलोक महेश्वर सुहृद सर्वभूतानां ज्ञात्वा मातामि मुमुक्षुति ॥ २६ ॥
इति श्री भद्र गवत् गीता सूयनिषदु सुब्रह्म विजाया योग सास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवाभिषा
पर्वणि संयास योगो नाम पंचमोऽध्याय ॥ ५ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ अनाश्रित कर्म फलं का
यं कर्म करोति यः ॥ सं संयासी च योगि च न निराश्रित चाक्रियः ॥ १ ॥ यं संयासमिति प्राहुः योगं
त विद्विषा राडव ॥ न ह्यसंयस संकल्यो योगी भवति कश्चन ॥ २ ॥ आरुक्षो मुने योगं कर्म
कारणमुच्यते ॥ योगारूढस्य तस्यैव समकारणमुच्यते ॥ ३ ॥ यदाहितेन्द्रियार्थेषु न कर्म
चिंतयज्जते ॥ सर्वसंकल्प संयासि योगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥ उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमव
सादयेत् ॥ आत्मेव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥ ५ ॥ बंधुरात्मात्मतस्तस्य येनात्मेवात्मना जितः ॥

देखि आत्मा को उद्धार गछ भनिक हं छु मुन हे अर्जुन तो योग मावहुना को मुनि जो छ आत्मा ले गरिकन
ससार स मुद्र मावहुना को आत्मा का उद्धार गछ जोग मावहुना उछ आत्मा कत बुर्ज दिंदेन आत्मा को
बन्धु ईष्ट भन आत्मे छ शत्रु यनि आत्मे छ वाहिर का ईंद्रिय सुख को ईछा छोडि ईश्वर को आरा
धना गरि दिन ले ईष्ट भन उद्धार गछ वाहिर को सुख का सेवा गरि ईश्वर को आराधना छोडना ले
शत्रु भन आत्मा कन डुवा उछ ॥ ४ ॥ आत्मा जो छ आत्मा को शत्रु मित्र कसो गरि जे छ भनौला मुन हे
अर्जुन जस्का आत्मा ले गरिकन आत्मे जित्या को छ अन्न कर्ण ले वाहिर का शरीर ईंद्रिय का सुख भो
ग कन जिति राखे छ तो आत्मा आत्मा वहु भन्या को हो अन्न कर्ण ले शरीर ईंद्रिय न जित्या को बुद्धि
लाई पति न जित्या को आत्मा को शत्रु तेहि छ आत्मा को शत्रु आत्मे छ ॥ ५ ॥ आडो गर्मि मा सुख डु

खमा मानभयामा अयमानभयामा यनि समवरोवर रह्या ह्यविस्मादन गन्या आत्मा जित्याको
शरीर इन्द्रियन जित्याको सान्निहितभयाको कसैदेविरसिरागनभयाको यरमा माह्य हो
॥ १ ॥ ज्ञानभयाको शास्त्रको अर्थ जानु विज्ञानभयाको आत्मा जानु ज्ञानले विज्ञानले भाये धर्म
आत्मा अध्यायाको कूटस्थभयाको अचल कतिन उग्या स्थिर आत्मा भयाको संपूर्ण इन्द्रि
यजित्याको यवरुं गो सुवर्ण रूके मान्या आत्मा काममाधिमा चित्त उगा उग्या योजो जिवो ना
उछ ॥ २ ॥ दाम्भा भया मित्रभिया इनमा कसैको यक्षयात गन्या शत्रुमा मित्रमा मधस्थ
उवैको वढिये चित्तनागर्ता माधुभयाको शास्त्रदेवि अकेन जान्या इमाधुमार पायिष्टु मा
पनि वरोवरै बुद्धिभयाको सदैस साइ ह्ये मयदेवना तो समबुद्धि ना उग्याको जोगिकहिं
ह ॥ ३ ॥ यस्व कएले योग ऊँ छ भनि क ह्या अवजोगको विधिक हं छु मुन हे अर्जुन योजि जो
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तत तस्मैव शत्रुवत् ॥ ४ ॥ जितात्मान प्रसांतस्य यरमा माह्यः ॥ शीतो
धुषुषु रेवु तथा मानायमानयोः ॥ ५ ॥ ज्ञान विज्ञानतु प्राप्ता कूटस्थो विजितेन्द्रियः ॥ ६ ॥
त इत्युच्यते योगि सलोष्टाश्मकांचनः ॥ ७ ॥ मुह्यन्मित्रा युदासीन मध्ये स्थ द्देव्यवधुवः ॥ साधु
वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥ ८ ॥ योगियुं जीत सतत मात्मानं रहसि स्थितः ॥ एकाकी य
त निनात्मानि रासीर्य एग्रहाः ॥ ९ ॥ धुमे देशे प्रतिस्थाप्य स्थिरमानसमात्मनः ॥ नापुच्छितं वा
ति नीचं वैलाजि कुशोत्तरं ॥ १० ॥ तत्रैकाग्रमनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः ॥ उपविश्या सने युष्मा
द्योगमात्मविशुद्धये ॥ ११ ॥ समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलस्थिरः ॥ संप्रेक्ष्य नासिकां गुह्यं दि
शश्चानवलोकयन् ॥ १२ ॥ प्रसांतात्मा विगतभी ब्रह्मवा एव ते स्थितः ॥ मनसं यम्य सचित्तो युक्त
ह आत्मा तहलाई साथी नलिकतय कलै अन्नकर्ता शरीर संपूर्ण इन्द्रिय जितिया उला बाउला
ला उला दिउला भन्या आत्मा संपूर्ण छडि एकान्तस्थल मायवत भया वडार भया ईसादि ज
गमा योग गर्ता कनला गोम् ॥ १३ ॥ पवित्रजगमा आ फुले ध्यान गर्ता निमित्त वसुना लाई थी
र आसत विछाउनु मनाके अज्ञोपनिन गर्नु वज्रते हो चो यनिन गर्नु पैले कश विछाई कन
तेम् माथि मृगको छाला बछ्याउनु उम् माथि कवल वस्त्र विछाउनु जो छ ॥ १४ ॥ तेम् आ
सनमा वसि कत एकाग्र यर मे श्वरमा मन लगई चित्तका इन्द्रियको क्रिया भयाका चित्तले ई
न्द्रियले गर्ना कार्ये जनि छन् वाहिरका व्यापार तसै जितिकन वसुमा गरई आत्माका सु
द्विनिमित्त अन्नकर्ता मुद्धिनिमित्त लाई जोगियो छ योग गरोम् ॥ १५ ॥ शरीर भयो शीर भयो
घांति भयो वरोवर गार्ठा डेर रह्या नचलाई कन कतिन वसुमाई कन छिरा विने चले यनि

कोने दिशामान होरि आक्रे ताको दुयो होरि विरग र अचन नदिन ॥१२॥ आत्मा कन सात गरइ
 मुक्ति केहि न जको न गरि सवे कर को डर कालि ब्रह्म चर्य व्रत मारहि उरु काले वा मान चुकि स
 र्वत्र बा म न वै चि म न मा चित न गाई आत्मा ह्य म जो छु य सता म ईश्वर मा स्का प्र चित न ला
 ई म लाई मा न दे वि के वल मे री शर रा मा य रि स मा वि चित न गाई व सो म् ॥१३॥ यति गरि
 योग गया को फल क्या छ भनि सो धो ला मुन हे अर्जुन य म् प्रकार सित तप स्या गे र्मा त्यो मुनि जो
 छ म न जो छ ज मा ग रा या को के वल आत्मे क न दे व त्या सर्व दा आत्मे का से वा मा ला ग्या को
 जो छ के रि ज न्म नु म र्ते त य र्मा ब डो मे रा स्था न क न या उ छ् मो क्ष ऊं छ ॥१४॥ योगि ने गु
 नि ये म् कहं छु मुन हे अर्जुन ठे री वा म्या जो गि मि कु ऊं दे न वा दे न वा म्या को य नि सि दु ऊं दे
 न म न के नि द्रा भ या य नि ठे री मु त न्या य नि सि दु ऊं दे न स वै जा गि र ह न्या य नि के ले न मु त न्या
 आ सी त म त्पर ॥१५॥ युं ज ने वं म दा त्मा न योगी नि ये त म न्म ॥ शां ति नि र्वा रा य र मां म त्त स्या
 म क्षि ग क्ष ति ॥१६॥ ना त्प श्र न्त त्तु यो गो ष्टि न वै का त्त म न श्र तः ॥ न चा ति त्व प्र शी ल स्य ज ण तो
 नै व च र्जु नः ॥१७॥ यु क्त हा र वि हा र स्य यु क्त चे ष्ट स्य क र्म सुः ॥ यु क्त स्त प्रा व वो ध स्य योगी भ व
 ति दुः ख हा ॥१८॥ य दा वि नि य तं चित्त मा त्म न्ये वा व ति ष्ट ते ॥ नि स्पृ हः सर्व का मे भ्यो यु क्त ई
 शु च्य ते त दा ॥१९॥ य दी यो नि वा त स्थो ने ष्ट ते सो य मा स्मृ ता ॥ यो गि नो य त चित्त स्य युं ज
 तो यो ग मा त्म नः ॥२०॥ य यो य र म ते चित्त नि रु द्धं यो ग से व या ॥ त मे वै वा त्त मा त्मा न प र प ता
 त्त नि नु ष्य ति ॥२१॥ सु ख मा त्म त्तिकं य त्त दु ष्टि प्रा ष्ये म ती द्रि य ॥ वे ति य त्त न्ने वा य स्थि त
 य नि यो ग मि दु ऊं दे न ॥२२॥ यु क्त आ हा र भ या को आ धा अ न ले आ धा को आ धा पा नि ले ज रे
 भा ग वा ड व ला ई रा वि पे द को पु री ग र्मा र्ग रा ध मा न भि क्षा म र्मा क र्म मा हि दु द हि दी वो न्
 हा स मा उ द आ रू स सा र का य रि यं च क चि द्वा न ग रि आ क्रा जु त्काम मा ग या जो ग भ्र ष्ट ऊं
 छ ति का म ते म् प्र का सित जो ग छ् दु ई प्र ह र रा त्त स ति क न उ द्या प छि नि द्रा ले यी डा त ग
 रि न्या जो छ ते म मु नु ष्य को वि ना डु रे वे यो ग मि दु ऊं छ ॥२३॥ चित्त के ले स मा धा न के ले भ यो
 भ नि जा नि छ भ नो ला मु न हे अर्जुन ज व स पू र्ण का म दे वि चित्त वै चि आत्मा मा ल ग या प छि अ ने
 न ज्ञा न ई ष्या ग दे न आत्मे मा ला गि र हं छ स पू र्ण वा हि र का चित्त दे वि वि र क्त चित्त ज व ऊं छ ते
 सो भ या य छि स मा धि मा चित्त ला गे छ भ ने छ ॥२४॥ ए का प्र चित्त ग रि जो ग ग र्मा को उ य मा
 ग छ् मु न हे अर्जुन ज स्ते ज ग या को व ति व न म न ला गि दि या क ति न ड गि स्थि र ज्वा ला र हं छ त
 ते आत्मा मा न ल गाई त मा धि मा व त्या को चित्त स पू र्ण वा ण जि त्या को य सो जो गि ध्या न त य त्या

को
 र
 त
 न
 ग
 र
 ते
 न्या
 श्र
 च
 त
 ॥२४॥
 २५॥
 न
 जो
 नि
 च
 न्या
 वा
 क
 र
 क
 न
 व
 का
 थ
 प

कोचित्त सपूर्णवाजित्याकोऊधमति योगजात्याहमंछन् ॥११॥ तेजोदीपकोज्ज्वलाजसोवानि
ह्याकोजोगिकाचित्तवृत्तिभैकतजवरहनलाग्यो आत्मैताईमानपियारोमानिरहं केरिआमानेअ
तकरालेवडोसंधिली उज्जालोयामात्माकनजोतिस्वरूपआत्माकनदेवदेहेहे सकलशरीरकोआ
त्मासुखकुंछ ॥१२॥ आत्माकोसुखकस्तरहलेऊधमनौलासुनहेअर्जुन इन्द्रियलेयनिकैलेन
गयाकोनजात्याकोसंपूर्णसुखमन्दायनिवडोपियारोसुखवृद्धिलेमानगरिन्या ईसुखमयाप्राप्त
इन्द्रियकोक्याकामरहेछन्भतिअरुसुखदेखिविरक्तगारिदियाजोसुखहतेस्कनजवजात्यो
तेसुखेविअनेनबुद्धिकदाचित्तयनिजादेन तेसुखमाबुद्धिनिश्चलभैकतरहयाकोजोचित्त
तत्त्वदेखिआत्मादेखियामजादेन ॥१३॥ हेअर्जुनआत्मायाउत्पावुद्धिजवयायो सर्वत्रयाउ
त्पाकरोयाईसक्याअवयाउत्पाकरावांकिकेहिछेनभन्यामनऊछजुनसुखमारहयातत्त्वजा
श्चलतितत्त्वतः ॥१४॥ यलज्जवायरलाभं मन्यतेनाधिकततः ॥ यस्मिन्स्थितोनडः खेनगुह्यापि वि
चास्यते ॥१५॥ तंविद्यादुःखसंयोगे वियोगयोगसंज्ञितं ॥ सनिश्चयेनयोक्तव्योयोगोनिर्विघ्नचे
तसा ॥१६॥ संकल्पप्रभवान्कामान् त्यक्त्वा सर्वानसेवतः ॥ मनसेवेन्द्रियग्रामं विनयस्य समतत
॥१७॥ शनैश्नैरुपरमेवुध्यादतिगृहीतया ॥ आत्मसंस्थमनः कृत्वा न किंचिदपि चिंतयेत् ॥
॥१८॥ यतोयतोनिश्चलमति मनश्चंचलमस्थिरं ॥ ततस्ततो नियम्येतदात्ममेव वृत्तं नयेत् ॥१९॥ प्रशा
नमतसंस्थानं योगिनसुखमुत्तमं ॥ उपैति शान्तिरुजसब्रह्मभूतमकल्पमः ॥२०॥ यजनेवसदात्मानं
जोगिविगतकल्मः ॥ सुखेनब्रह्मसंस्पर्शं मत्पंतसुखमश्नुते ॥२१॥ सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूता
निचात्मनि ॥ ईक्षते योगयुक्तामा सर्वत्र समदर्शनः ॥२२॥ योभायशपाते सर्वत्र सर्वं न मयि पश्य
न्नाजोगिजोहकसे उरवययायनिकेहिमादेन शस्यलेहात्पायनिजितडगाउदेननपाईसकतसुखपाई
वाहिरकाउरवपाईवाहिरकाउरवसहनकतिगाहोमादेन ॥२३॥ हेअर्जुनतेमृताउगयाकोपरमार्थ
कनजात्याप्राप्तत्योनिश्चयमानिकनएकाग्रचित्तले गरिकनसमाउछ्योरायायाप्राप्तअरुवीजमा
ईकाराबुदेन ॥२४॥ हेअर्जुनसंकल्पभन्याकोयोगकर्मगर्हृकार्येसिद्धऊनुरुभनिमनमासंकल्प
गरिमयाकायावत्कर्मकनतिकर्मदेखिअभिलाषभन्याकोयनि यकार्यगनयायाकार्येसि
द्धगर्हाऊनुरुभन्यात्राम् यमअभिलाषकनछाडियावत्इन्द्रियछन संपूर्णकन मनलेखौचिकन
वसमारखिकनैचलननदिनु आत्मैमाआत्मनगाईरमावत् ॥२५॥ पहिलेगरिआयाकोवाहिर
काकर्मलेमनस्थिरनभयाकसोगारिमनस्थिरगराउभनौलासुनहेअर्जुनआत्माकननिश्चयगारि
धराराउत्पावुद्धिलेसुखसुखगरिमननगाईआत्माभाषीतिगरिवसोसुआत्माभामनलाग्या
पछिअरुकेहिवसुयनिचित्तनानगरिवसोसुआत्मैमात्रदेखिवसोसु ॥२६॥ एजोगराकाप्रभा

वले यदि मन आत्मा देविकले स्तक सो गर्नु भनी ला सुन हे अर्जुन शब्द सुना कन रां ओ हे न कन रां प्राधाना
 कन मिठो अरूप नि अनेक वाहिर का सुख निमित्त आत्म देविकली ति नि कलि छु मया येक जग न र
 हन्या च चल मन कन जना ते ते वाट ज्याई कन आत्मे माल गाई कन आत्मे का वसू माग रिखो सुः ॥२४॥
 जसु जोगिका यस्त र हे र मन सात छ आत्मे माला गि सुख भया को छ योगि गन सांन छ आत्मे मा योगि
 सुख भया को छ जो गुरा शा न भया को अनेक जो गुराले उत्पन्न भया को सुख भोग अश्वर्ये ईश्वर
 न भया को वृद्धे जस्तो पाय पुराण सुख दुःखादि को नैन भया को संसार का दोष पाय शरीर मान
 भया को ते सु जोगिक न सेवे सुख भया यनि वडो सुख मिल्यु ॥२५॥ हे अर्जुन यस् प्रकाशित आ
 त्मा को समाधि गत्य आत्मे माला गिर हन्या स पूर्ण पाप नष्ट भया को जोगि जो छ सुखे सिहित
 गर्नु न परियर मात्मा रक्षा का अत्यन्त वडो सुख कन पाउछ ॥२६॥ योगिका समाधि माला ग्या आत्मा

ति ॥ तस्या हंत प्रणश्यामि सत्त्वेन प्रणशति ॥२७॥ सर्वभूतस्थितं यो मां भजते कत्वमास्थितः ॥ सर्वथा व
 र्तमानो वि स योगि मायिवर्तते ॥२८॥ आत्मोपम्येन सर्वत्र समं यश्च पतियोर्जुन ॥ सुखं वायदि वा दुःखं
 स योगी पर मो मत ॥२९॥ अर्जुन उवाच ॥ यो ययोगस्त्वया प्रोक्तः सांख्येन मधुसूदन ॥ एतस्या हं तु व
 श्यामि च चल त्वास्थिति स्थिरा ॥३०॥ च चल हि मन कृष्ण प्रमाथिवल वद ॥ तस्या हं निग्रहं मन्ये

भया को सर्वत्र यावत् प्राणिमावरो वर देव त्या सम दर्शि सति जो छ यावत् संसार का प्राणिमा रक्षा
 का आत्मा कन वर मात्मा कन स पूर्ण प्राणिमा रक्षा का आत्म मा देवि छ ॥३१॥ यो मुनि संसार यावत् का
 आत्मा भया को मन कन वृद्धा देवि किमिला भुजना ययेन का जीव मा सर्वत्र रक्षा को देव दह व
 लादि प्राणिक न यनि मै ईश्वर कन देव दह केवल मरे जस्तो आत्मान भया को वडा मन रज्जु जस्तो
 तनि यनि देवि पति ठा डार हनेन ॥३२॥ जुन मुनि सर्वत्र प्राणिमा रक्षा का यनि सर्व प्रकार भया
 को यनि कर्म गरि भयो कर्म त्याग गरि जु सुके प्रकारे संसार सार ह्या यनि तो जोगि मै ईश्वर मा
 पद छ कसे ले यनि थुनु सकन्या छैन ॥३३॥ ज्ञान मा यनि जगत् संसार मा वडो कृपा भया को भ
 व हो भानि कह छु सुन हे अर्जुन यावत् जगत् संसार को प्राणिका दुःख सुख देवि आत्मा जस्तो मा
 नि दया वत्त छ आत्मा आत्मा कन अर्की को आत्मा कन वरो वर मान छ आत्मा कन सुख भया य
 नि सुख अर्की कन गर उछ अर्की को दुःख देवि ति दुःख आत्मा वि हो छ तो जोगि वडो बुद्धि भया
 को मेरो जस्तो आत्मा भया को हो ॥३४॥ संसार वरो वर देव तु वरो वरे ले यनि सकतुर हेन छ भनि
 अफले निश्चय गरि बुद्धि भया अर्जुन विनि गछत हे मधुसूदन मधुना मगया का देत्य कन मा
 न्यति मि हे कृष्ण जगति मिले सत्त्व बुद्धि ले संसार ये के देव तु भया बुद्धि यो जु न योग वता उतु भ

याको समस्तको चंचल स्वभाव भयाको वज्रतुल्यताले मजो हुने सुयोग कन देव देन ते सुयोग क
न देव न्या चंचल भयाका थिर स्वभाव कन यनि देव देन ॥३१॥ हे कृष्ण जस्कारणले यो मन जो छ
वडो चंचल भै कन वजाको रैले यावत् ईदिकत विरोरि आशुवत् मावले योग रिराखे छ ते सु
मन कन धुतिवत् स्यात्प्राप्तः प्राण धुत्पायनिकापिन मान्दु वरु यो प्राण धुत्प्राप्तः सहज होला भया ज
स्तोमा छ ॥३२॥ अर्जुन ले विनिगयाको मुनि कन भगवान् आणा गर्हन् यो मन जो छ अतएत चंचल भयाका
थाउं सागविकन न सकनु छ यस्मा सदेह छैन तनि श्रय हो पाउनु नहे को ते य अभासले र वैराग्य ले निग्र
हन गर्न सकि छ अभास भयाको आज यनि भोलियनि निरन्तर आत्मैको विचार गरि कन मन लाई वाशि
लाउनु वैराग्य भयाको यस संसारको सुख भोगादियावत् यदार्थमा विरक्त ऊर्ज संसार जिति सुख
छन् सबै दुःखेदियादे धनु वैराग हो ते सुमन कार अभासले र वैराग्य ले यनि मन कन ठे गाना
गराउनु सकि छ ॥३३॥ हे अर्जुन यो जो गजो छ अभास वैराग्य ले मन धे वि आत्माको विचार गर्ना

वा योरिव सुदुःकरं ॥३४॥ श्री भगवानुवाच ॥ असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलः ॥ अभ्या
सेन तु कौन्तेय वैराग्येन च गृह्यते ॥३५॥ असंयतात्मनो योगो दुःप्राप ईति मे मतिः ॥ वश्यात्म
नानुयतता शक्यो वा पुमुयायतः ॥३६॥ अर्जुन उवाच ॥ अयति श्रद्धयो येनो योगाचलितमान
सः ॥ अप्राप्य योगसंमिद्धिं कां गतिं क्लृप्तम गच्छति ॥३७॥ कचि नो भय विभ्रष्ट छिन्नाभ्र निवन
श्रपति ॥ अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥३८॥ एतन्मे संशयं क्लृप्तं ह्येनमहस्य
शेषतः ॥ त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्तानेद्युयय धने ॥३९॥ श्री भगवानुवाच ॥ पार्थ नैवेह नापत्र

मनुष्यले मात्र याई सकनु छ भया मेरो विचार ताय हि छ अभासले र वैराग्य ले मन कन जिति
हामिले कहि आयाका उपाय ले आत्माको विचार गर्ना योग याउनु सक न्या छ यो गन याई सकनु
छैन ॥३५॥ योग माला ग्याय छि कदाचित् योग मारहन सके न भया ते सुजोगिको कृतगति होला भ
नि अर्जुन विनिगदन् योग मार्ग लाई बलियो गरि न समान्ताको पुरे जोगिन भयाको श्रद्धा वडो भ
याको संसार त्योति हो आत्मै मात्र श्रेष्ठ यदार्थ हो भनि ईश्वर मा श्रद्धा भयाको संसार समयमा योग
देखि मन डग्याको योग मारहन न सक्याको योग कि सिद्धि त ते सले याउनु सके न त्यो मनुष्य कृतग
तिकन याउं छ हे कृष्ण ॥३६॥ हे कृष्ण ईश्वर ब्रह्ममा पुग्या वाटो न जान्या दुई लोक भ्रष्ट भयाको भो
गका श्रद्धा ले संपूर्ण संसारको कर्म छोडेर संसार देखि गयो योग याउनु न सकनाले य लोक य
नि न पायाको त्यो मनुष्य वाडा हरया जस्तो नष्ट अछि कहि मति ऊंछ ॥३७॥ हे कृष्ण यस्कराको
मलाई वडो सन्देह छ यो संपूर्ण कालिदिना कनाति मिसमथ छो तिमि देखि अर्को सन्देह का गिदि
याको हि छैन तेस्को कृतगति ऊंछ आज्ञा गर ॥३८॥ अर्जुन कावचन मुनि कन भगवान् आणा
गर्हन् हे पार्थ यो भ्रष्ट भयाका तेस्को यस् संसार मा यनि य लोक मा यनि नाश हुदैने हेतात
क्या कारण भनी ला कल्याण गर्ना मनुष्य ईश्वरको आराधना गर्न को ईछा कृत्याको हियनि दुर्ग

निमाजादेन ॥ १५ ॥ योगमाचुतभयाकोमनुष्यजोह्मश्रममेधादियज्ञगर्वापुन्यात्माहृत्पुण्याईद
 कालोकमायुगिठेरेसम्पुष्टभोगगरियसंसारमावडायवित्रकूलमाष्टस्वर्गवडोभयाकोज
 गमावडोबुद्धिमानभैजन्म ॥ ४० ॥ अथवाचोमनुष्यवडोबुद्धिभयतयस्त्रीकाकूलमाजन्मलिख
 यम्संसारमायम्प्रकारकोजन्मवडाइत्यभहसहननयाईसकनुह ॥ ४१ ॥ हेकुरुनन्दनकुरुयति
 माजन्मभयाकाहिअर्जुनतेस्तकूलमाजन्मभयाकाचोमनुष्यजोह्मपूर्वजन्ममाभयाकोजन्मको
 पर्यासयोगजनालेतेसजन्ममायनिउहिजन्महुहयोगमालागिआत्मकोसाधनगर्ह ॥ ४२ ॥ पू
 र्वजन्ममाभयाकोअभ्यासलेतेहिपूर्वजन्मकाजोगमार्गमालाग्याकोबुद्धिहुनालेईछानगयाय
 निफेरिबुद्धियोगेमालगाउहयोगजानुबुद्धिभनिलाग्याकोमुनिजोह्मवेदलेकहाकाकर्मना
 दिमोक्षमार्गमासहजेपुकर ॥ ४३ ॥ वडायतलेआत्मज्ञानयहिलाग्याकायायनहभैसुखशरीर

विनाशस्तस्यविद्यते ॥ तदिकध्यागकृत्कश्चिदुर्गतिनातगच्छति ॥ ४० ॥ प्राप्यपुण्यकृतानुलोका
 नुबिवाशास्वतीसमा ॥ भुवितांश्रीमतांगेहेयोगभ्रष्टोभिजायते ॥ ४१ ॥ अथवयिगिनामेवकुलेभ
 वतिधीमता ॥ एताद्विदुर्ध्वभतरलोकेजन्मयदीदृश ॥ ४२ ॥ तवतबुद्धिसंयोगंतभतेयौवदेहिकं ॥ य
 ततेचततोभूयःसंसिद्धो कुरुनन्दन ॥ ४३ ॥ पूर्वाभ्यासेनतेनैवेहियतेहोवशोयिस ॥ जिज्ञासुरपियोग
 स्यशब्दब्रह्मपिवर्तते ॥ ४४ ॥ प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगिसंभुज्जुकिन्विषः ॥ अनेकजन्मसांसिद्धुस्ततो
 यातिपरंगति ॥ ४५ ॥ तयस्त्रीभ्योधिकोजोगिज्ञानिभ्योयिसतोधिकः ॥ कर्मभ्यश्चाधिकोयोगितस्माथा
 गिभवार्जुन ॥ ४६ ॥ योगिनामपिसर्वेषां मज्जतेनातरात्मना ॥ अकृतावर्तभजतेयोमांसमेयुक्तं तसोमत

भयाकोअनेकजन्मदेविगारिआत्मकोतयस्यालेसिद्धभयाकोजोयाउनुकरोहोसोयाईचुकाकोयसोसि
 द्रभयाकोचोयोगिजोह्ममोक्षगतिकनजाह्नु ॥ ४५ ॥ हेअर्जुनतयस्त्रीभन्दोयोगिवडोहोतयस्याभ
 न्याकोवडाकष्टलेचाद्रायनगर्वायोगिभन्याकोआत्मज्ञानमालाग्याचाद्रायनमालाग्याभन्दाव
 हज्ञानमालाग्यावडोजानियोभन्दायनियोगिवडोजानिज्ञानीभन्याकोसास्त्रमासंपूर्णभयाको
 जानीकर्मिष्ठभन्दायनियोगिवडोकर्मभन्याकोअग्निहोत्रादिकर्मगर्वातसधहेअर्जुनतिमिजे
 गिहोआत्मज्ञानमालाग ॥ ४६ ॥ हेअर्जुनजुनयोगिमईश्वरहोमेमाअनकर्णलगाईआत्माभै
 मामिलाईवडोथद्वागरिजोमेरोभजनुगर्हनुवरमात्माकोआराधनागर्हनुतेजोगिजोह्नु
 रुद्रभन्दायनिआदित्यभन्दायनिअमृतसंपूर्णजोगिभन्दायनिश्रेष्ठहोभन्यामेरोमनह्मअथाति
 सर्वेभन्दातेहियोगिश्रेष्ठहो ॥ ४७ ॥ इति श्री ॥ ॥ भगवान्आज्ञागर्हनुमेरोभक्तिजुनुप्रकारले
 जह्नुसोप्रकारकह्नुमेमाअसक्तमनभयाकाईश्वरमामिलायाकोमनभयाका मेरोआश्र

यभयाका अर्कोको आशाकासाका समाधानमा मन लगायाका योगे साक्षित दिया कायस्तातिमि
भै कन संसय मेरा वचन को कतिन मानि मैले बतायाको साचो मानिस मयभयाको प्रतापवलयरकन
हे स्वर्गदियुक्तभयाका मकन साक्षात्कार गणितांत सकल्या छैन सो जानम कहं छु सुन ॥ १ ॥ हे
अर्जुन तत्त्व ज्ञान ले सहित भयाका ज्ञान कन कति वाकिन राखि कन म कहं छु उन ज्ञान जान्या य छि फेरि
अर्को थो कहु हुनु वाकि रहन्दैन संसार मा जान्या कुरे जानि छ ॥ २ ॥ भगवान् विषय कि ज्ञान उध्वम
छ सुन हे अर्जुन संसार मा हजार मुखमा कदाचित्को हियेक मोक्ष साधना गर्ना हो भंछ नृत्ति सिद्ध
हउ मायानि मलाई साक्षात्कार गजान को सकछ को हियेका दमात्र जान्दछ ॥ ३ ॥ हे पार्थ वृ
धि जल तेज वायु आकाश मन जुन मन ले अहंकार गराई दिछ उद्धि भयो उद्धि कन भनौ ला सुन
हे अर्जुन मद मोह मा यछ अहंकार भयो अहंकार भयाको यानि वडो ऊं मैले यति गय्या भन्या यो
॥ ४ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता सूयनिषट्सु ब्रह्मविजायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
भीष्मपर्वणि योगगर्भे नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मया शक्तमना यार्थ
योगयुजन्मदाश्रयः ॥ असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यासितं दृष्ट्वा ॥ १ ॥ ज्ञानं ते हं भविष्यमिदं वक्ष्या
म्यशेषतः ॥ यदु ज्ञात्वानेह भूयो न्यत् ज्ञातव्यमवसिष्यते ॥ २ ॥ मनुष्याणां सहस्रेषु काश्चिद्यतति सिद्धये ॥
यतना मायि सिद्धानां कश्चिन्मा वेति तत्त्वतः ॥ ३ ॥ भूमिरापो नलो वायुः खमनो बुद्धिरेकव ॥ अहंकार इति
यन्मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥ अथ रेयानि तत्त्वान्या प्रकृतिविद्धि मे परा ॥ जीवन्भूता महाबाहो यथेदं धा
र्यते जगत् ॥ ५ ॥ सप्त धो नी निभूतानि सर्वानि सुपदारणे ॥ अहंकारस्तजगत् प्रभव प्रलयस्तथा ॥ ६ ॥
मत्त परतरान्यत् किंचिदस्ति धनं जय ॥ मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणि गणा उव ॥ ७ ॥ एतो हं मयुको
अहंकार भयो यति आध प्रकार प्रकृतिजो ह्यत् मेरा मूल प्रकृति देखि छुनियाका संसार साधेत जस्तो भैक
त प्राणिक न उतारि छ ॥ ८ ॥ हे महाबाहो ई आठ भन्दा यनि अर्को मेरो प्रकृति जीव जन्मा जुन प्रकार ले यो
संसार धारण गय्याको छ ते स्तन मेरो प्रकृति हो भनि जात ॥ ९ ॥ हे अर्जुन संपूर्ण प्राणि जानि छत् इने आठ
प्रकृति येक पर प्रकृति वेत् खेत कमा उन्मा ज ज्ञावाट प्राणिये डाऊं छत् यस्तो जान हे अर्जुन जानिक
छाका प्रकृति छ सवे भन्दा श्रेष्ठ ते हि छ तस निमित्त यम संसार माको उत्पन्न गर्न्या नाश गर्न्या मै ऊ
र ॥ १० ॥ हे धनंजय उत्तर देश देखि हजार कोटि दोल धल्पा उन्माति मि हे अर्जुन परमेश्वर जो मछ
म देखि अर्को संसार मा के हि छैन यो स के यावत् जगत् छ जस्तै धागा का डोर मा मणिको माला उ
नियाको ऊँ छ तस्तै यो संसार जान ॥ ११ ॥ ऊँ प्रकार सितति मि मायो उनियाको छ भनौ ला सुन हे अर्जुन जल
नार मजो छ सो मऊ रस मा जल उनियाको छ हे कौतेय चद्र मार सूर्य मा उज्यालो काति मै ऊँ संपू
र्ण वेद प्रभाव भयाको ओंकार अधर मै ऊँ आकाश मार हाको गुरा जो शब्द हो मै ऊँ यावत् म

नृपयच्छेत् इतमायुस्वार्थमैकं पुरुषार्थभयाकोऽयम मनुष्यमात्रं हि ममैकं ॥८॥ पुन्योगं
धमयाको दृष्टिमाको मुगधमैकं अग्निमाको तेजज्वाला ममैकं याव जीवको आयुजो ह सोयनि
मैकं तयस्विहृको जाजोगमिभूषतृषा सहनु स्यजोतयस्याह सोयनिमैकं ॥९॥ संपूर्ण
जगत्संसारकाचलचलयावत् ज्ञानको चीजित्यनगरा उत्या सकनजान कलोभनौला जुने
नजात नस्यकारको हनु उले उले प्रकारको गरा उत्या केलेताशन ऊत्या तेस्को बीजमकनजा
न बुद्धिमानशरीरको अन्नकर्ण उत्या लो गरा उत्या बुद्धिमैकं ॥१०॥ हेभरतव भवतवाकाश
रीरसाको कामरागभयाको बलमैकं कलोभनौला धर्मगर्वा यरा कनमैकं संपूर्ण प्राणिमा
पापनलाग्या शास्त्रियजो सुबद्धतु सोमैकं ॥११॥ अत्यन्तिक हंछु मुनहे अर्जुन सत्वगुणदे
खि उत्यन्तभयाका समदमादिसवेवरो वरे भैरहनु उपाकार्गुर् इत्यादिभावजो ह तमोगुणदेखि
निस्वयाका शोकमोह अज्ञान आदिभयाका जो भावहनु मदेखि भयाका जान परंतिभाव
नेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ॥ प्रणव सर्वदेवेषु शब्दः खेयोरुखंतु ॥८॥ पुरोयोगधृष्टिवा
च तेजश्चास्मि विभावसौ ॥ जीवन सर्वभूतेषु तयश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥ बीजमां सर्वभूतानां वि
द्वियार्थसनातन ॥ बुद्धिर्बुद्धिमतमस्मि तेजस्तेजस्विनामह ॥१०॥ बलं बलवताचाहं कामराग
विवर्जित ॥ धर्मे विस्मृतेषु कामोस्मि भरतवर्भ ॥११॥ ये चैव सात्विकाभावा राजसास्मा मसा
श्च ये ॥ मत्तट वेतिता निविद्धि न त्वहंतेषु ते मयि ॥१२॥ त्रिभिर्गुणमयि भावे रोमिः सर्वमिदं जगत् ॥
देवि ह्यवा गुणमयि मम साया दुरत्यया ॥ मामेव ये प्रयच्छंते मायामेतां तरंतिते ॥१३॥ न सा दुः कृति
नो मूढा प्रयच्छंते न राक्षसाः ॥ मायया य हत ज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥१४॥
कावत्समा महेन मोहकावत्समातिहृत् ॥१२॥ संपूर्ण जगत्सारह्याका इतीन गुणमाहो को जानै न
भनौला कया अर्थ भनौला मुनहे अर्जुन इतीन गुणभयाका हर्षविस्मात सोकमोह सुखदुःख आदिभया
का तिभावले संपूर्ण संसार मोहितह अज्ञानसाव्याको ह ईभावदेखि याति र ह्याको केले यतिना
शन ऊत्या सधैर ह्याको सकनदेवत्या यो दुनि आजो ह सोकमोहादिकालिकन मला ईदेवदेन ई
वन सकदैत ॥१३॥ ते सभावकन भारिति मिलाई या उत कया युक्तिह भनौला मुनहे अर्जुन सत्वजुतम ई
तीन गुणभया कियर मेधर देखिभया कि वडा कथितसितयनि फालि सकदैत यस्मि मेरी मायाजो ह जो
मनुष्य संपूर्ण याय धर्म सुखदुःख छाडि मेरा शरणा मायह तेहि मनुष्यमात्रे ते स माया कनतई मला
ई न भजन्या मायाका या ऊन सकदैत ॥१४॥ तिमि मायया प्राप्त माया छु तन्यारहे छु दुनि भाति मि
लाई भजदैत भानि सोधौला मुनहे अर्जुन मनुष्यका अधर्म घटिया कर्मगर्वाति जो हनु नगर्ता क
र्म वटिया सो हनु मायाले ज्ञान ह राई दिया का वडा मूढ ऊहनु राक्षसभावमा लाग्या का अर्काको

मोहितनामि ज्ञानाति मासि भय य मयय ॥१३॥

जीवमान्या छुद्रवचनवोननु ईयादिसालाग्याका यस्तापापिष्ट मलाईमारेननु अनेक दुःखमोहादि
मायछन् ॥१५॥ कस्तो ज्ञानिआनिमिकन भजछ भनि लोको ना मुन हे अर्जुन चार प्रकार कामनुष्यमाका
उत्तमजन यो संसार दुखेमा बुडाउत्या हो भन्या जन जो छनूति मेरो भजन गर्छन् मेरा शरण मायछन्
ऊरुऊरुचा भनी ला मुन हे भर्तव्य भरो गभयो देवादिभयो राजादिमनुष्य वा भयाको दुःखभयो
शोकभयो ईतीन प्रकारका दुःखले आवर्तभयाको पीडितभयाको शरणलिन्याको हिनभयाको य
त्तिकस्तो छ भनि जान्या कोहि ईष्टाभयाको अर्थको ईष्टाभयाको स्त्रीपुत्रवटेश्वर्यादिसंयत्तिय
रनेश्वरदितातु भन्यामनभयाको तेस्तो जानिया वत्सकल संसार छ सबैयामेश्वरे भन्या ज्ञानभयाको
चोरे ईचारतर्हको मनुष्य हर् मलाई भजछन् मेरा शरण मायछन् ॥१६॥ ईचारमा छेदकन भनी
ला मुन हे अर्जुन ईचारमा जो जानिछ ईश्वर यहि हो भनि जो न त्वजान्छ त्यो सबै मे मालाग्याको दुःख
के मकन जानिभक्त गर्छन् त्यो चोरे माछेछ हे ज्ञानिमित्त हो भनी ला जानि मनुष्यको म दओ पियारे

चतुर्विधा भजंते मां जनाः सुकृतिनोर्जुन ॥ आर्तो जिज्ञासु र्थार्थि ज्ञानि च भक्तवत्सलम् ॥१७॥ तेषां ज्ञानि नि
त्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ॥ प्रियो हि ज्ञानिनो मयि महत्त्वममाप्रिय ॥१८॥ उदार सर्वदेवेने ज्ञानि त्वामे
न मे मतं ॥ आस्थितः सहियुक्ता मा मामेमुन मां गति ॥१९॥ वज्रनां जन्म मने ज्ञानवान्मा प्रययते ॥ वासु
देवः सर्वमिति समहन्मा सुदुर्लभः ॥२०॥ को मे स्नेसे हेत तावाः प्रययते इत्यदेवताः ॥ तत नियममास्थाय प्र
हृन्मानियताः स्वया ॥२१॥ ये योयायां तनुं भक्तं श्रद्धयार्चितुमिच्छति ॥ तस्य तस्या चलां श्रद्धां तामेव विदधा
म्यहं ॥२२॥ मतया श्रद्धया युक्तं लस्यारधनमीहते ॥ लभते च तत कामान् सयेव विहितान् हितान् ॥२३॥

छु ज्ञानिमनुष्ययानि मेरो वडो पियारे छु यलनिमित्त भक्त मा ज्ञानि छेदुख सबै भन्दा ॥१७॥ अर्जुन ज्ञानि छनूति पवि
संसारदेखि विरक्त भयाको केवल अर्कीको आसन राखि मेरा शरण माययाकाति उदार चित्तभयाका हृदयानि मे
रा श्रविके पियारा छन् धातुतानि मेरा आत्म हो भन्या मेरो निश्चय छ जत्कारण त्यो ज्ञानि जगत्संसारको सध
र्मा सारहाको माहिजस्तो मे ऊरु भगवान वासुदेवभयाको मदेखि यकोहि छैन भनि आमे भित्रसंपूर्ण देवया
चित्तकते उलनूत दिन्या आमे माल गायाको त्यो जानि मेरे उत्तम गतिमा जाछ मोक्ष गति या उछन् ॥१८॥ अर्जुनो
हे अर्जुन छेरे जन्ममा ज्ञानको पर्यय भै आत्मज्ञानको निश्चयभयाको ज्ञानि जो छ सबै संपूर्ण वासुदेव हो भनि मेरो
शरीरमा सारण यछ त्यो जस्तो वडो आदमि या उनु दुर्लभ छ नयाई सकनुछ ॥१९॥ यो आत्मकेवल वासुदेव हो भनि नि
श्चय गर ईदिया क्या छ भनी ला मुन हे अर्जुन जो जो चित्तनाग्याका छन् पशुपुत्रदोलध ईत्यादि यस्का मनोले ज्ञा
नहरयाका आक्रम्यभावले पूर्वजन्ममा ग्याका जुन जुन कर्म छन् उनी उनी कर्ममा लगान्ति कर्मका अनुसा
र देवता या उछन् उनी देवताको आराधना गर्नाले देवता धेरे रहन्छन् भन्या बुद्धिभयाकाति न हर् आमा भैकन
शरीरमा रयाका मकन जान्छेनन् ॥२०॥ जुन जुन मनुष्य जुन जुन देवता कन भक्ति पूर्वक श्रद्धालगाई कन पुजा
गर्नाको ईष्टा गर्छति मनुष्य हर्का उनी उनी देवता कन कति न चल्न्याथि श्रद्धामा मगन गर ईदिछु जान्याले

कर्मगर्वालाई यो कर्मगर्न जानितसु पुजाज तादि माउनको वित्तन गाई दिनु भन्दा हेनुले ॥ २१ ॥ मेने गर
ई दिया का ते सुश्रुताले त्यो मुक्त भयाको त्यो मनुष्य जो छ ते सदेवताको पुजागत वडे भक्ति लगई छ भ
क्ति लगाई कन पुजा गया का ते सदेवता देखि आ फुले ईछा गया का संसा को निमित्त भेले वताया
का बाटिया फल कन याई छ ॥ २२ ॥ हे अर्जुन आत्मज्ञान फलया का क्षात गरि अरु देवताको पुजा
गर्वा होरा बुद्धि भया का तिन हुन को त्यो कर्म फल मिष्टा को जो छ छे रैन रह्या चोडे हराई त्या जछ
गणय त्यादि देवताको पूजा गर्वा गणय त्यादि देवता याई छ न मेरा भक्त हल मलाई याई छ न त्यो
बरो वरै छत यति त्यो दुनि आं वडे सुर्व जछ के लेन छन ज्ञाना जो ची ज्ञाना यो त्यो पुग्या यत्ना आत्म
स्वरूप मेरो सेवा न गरि चोडे न छ ज्ञाना फल ईछा राख छ ॥ २३ ॥ हे अर्जुन बुद्धि न भया का तिन
हल का सकन साक्षात्कार देवि न्या संसा देखि यर ई नैन जाले अरु प्राणिलाई देखाई देवि

अंत वसु फलने सां न दुव न्य न्य मेध सां ॥ देवान् देव यजो याति म दुक्ता यांति मामपि ॥ २३ ॥
अव्यक्त व्यक्ति मायनं मनुष्ये मामवुद्ध्यः ॥ परभाव मजानतो मामव्यय मनुजमं ॥ २४ ॥ नाहं प्र
काशः सर्वस्य योगमाया समारुतः ॥ मूढो यं नाभिजानाति लोको मम जमययं ॥ २५ ॥ वेदाहं सम
तीताति वर्जसाना निचाजुन ॥ भविष्या निवभूतानि मातु वेदन कश्चन ॥ २६ ॥ ईछा देव मनु
थेन दंड मो होन भारत ॥ सर्वभूतानि समोहं सर्गे याति यांतय ॥ २७ ॥ येषां च तर्गतं यायं जना

न्या जलो माई छ न ति सुर्व हल के ले नाम न ज्ञाना सवै भदा वडे सवै ची ज भंदा यति उत्तम जावत सं
सा मा एछा का मेरो भक्त न बुद्धेन ॥ २४ ॥ हे अर्जुन सत्वर जतम ईती न गण को आत्मा भया
को जो माया छ ते स माया लेन छो पिया को यत्ना मछु सवै को देव न छेन यो लोक जो छ वडे
मूढ छ न न जन्म न्या सकन जादेन ॥ २५ ॥ हे अर्जुन यो सकन संसार जति प्राणि छ न अविभ
या का याति प्राणि छ न मजां दछु आन कान को याति मजां दछु अव उपस ज्ञाना जो भविष्य छ न निय
निसवै जां दछु यो संसा ता सकन जान सकेन ॥ २६ ॥ तिमिक न जान नदिया क्या छ भनो ला
पुन हे अर्जुन हे भारत ईछा देवा देखि वाटि आं वलु को अभिता व ईछा तमिको वसु देवि विरक्त
जुन देव ई ई देवि उद्या को जो छंदे छ भन्या को हर्ष विस्माद भया काले गराया को जो मो
ह भन्या को हे यांतय ते लो हले आत्मा कन अधारो नुन्या ईछो विदि छ न रावत जग सं पूर्ण मो
हित जछ मोहित भैया जछ भनो ला सर्ग भन्या को संसा मा जन्म नु सर्ग यमे जन्म ना मनी सा म
वै दुनि आला गद छ ॥ २७ ॥ यो दंड मो ह फलिक न तिमि नाई देवन कस्ताने सक छ न भनो ला पुन हे अ
र्जुन गुन गुन सुर्व कर्म गर्वा क्षमा मछ न तिन हल का अन्न कर्ण माया पंडेन पाप को नाश भया को

ऊँछतिनहर् हर्षविस्माद मोहदेविमुक्तभयाकोमेरुनिमित्तदृढवृत्तभयाकामकनभजदछत् ॥२५॥
निक्यानिमित्तनिमित्तकनभजदछत्भनोलाभुनहेअर्जुनजोमनुष्यमेरेअस्मायत्गारिमेनिरचितेनगाई
मैकनमांदछत्तिमनुष्यहर् पावंहर्षतत्कनसंपूर्णजांदछत् तिनहर् आत्मामारुणाकाजनिवस्तु
छत् नियाति संपूर्ण जांदछत् आत्मकोसाधनगर्भानिछत् नियातिसवैजांदछत् ॥२६॥ हेयार्थजोम
उष्यमकन यावत्प्राणिभंदायनिवडो यावत्देवताभंदायनिवडो संपूर्णजज्ञभंदायनिवडोदेव
छत्चित्तदेगानग मेकनदेवन्या तिनहर् सरणसमयमायनिमकनजांदछत् ॥२७॥ ॥ इति
बी ॥ ॥ पूर्वाध्यायमा साधिभूतानिदेवमां योश्लोक भगवानलेगयाकोमुनिकन विलारगारि
वर्थभुनाकोईछभयाकोअर्जुनविनिगछत् हेपुरुषोत्तमत दुलभन्याकोक्याहो कर्मभन्याको
क्याहो अधिभूतभनिकसुनाईभंछत् अधिदेवभनिकस्तवभंछत् ॥२८॥ हेमधुसूदन एकश
नांपुरण्यकर्मणा ॥ तेद्वंमोहनिमुक्ता भजनेमांदृढवृत्ताः ॥२९॥ जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्यय
तंतिते ॥ तेब्रह्मनद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मकर्मवाखिलं ॥३०॥ साधिभूताधिदेवमां साधिमतंचयेविदुः ॥
प्रयानकानेयिचमां तेविदुर्मुक्तचेतसः ॥३१॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासुयानिबन्धब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेभीष्मपर्वणिविज्ञानयोगोनामसप्तमोऽध्यायः ॥३२॥ अर्जुनउ
वाचः ॥ किंतुब्रह्मकिमध्यात्मं किंकर्मपुरुषोत्तम ॥ अधिभूतंचकिंप्रोक्तं सधिदेवकीमुच्यते ॥३३॥ अ
धिजज्ञः कथंकोत्रदेहिस्मिन्मधुसूदन ॥ प्रयाणकालेचकथं ज्ञेयोलिनियतात्मभिः ॥३४॥ श्रीभ
गवानुवाचः ॥ अक्षरं परमं ब्रह्म स्वभावो ध्यातुमुच्यते ॥ भूतभावोद्भवकरोविराजः कर्मसंज्ञितः ॥३५॥
रीरमा अधिजज्ञभन्याकोकोहो प्रयाणकालमा मरणसमयमा बुद्धिमानलेकसुप्रकारतित ति
मिजाईजांनु ॥३६॥ अर्जुनलेस्वध्याकावचनभगवानाग्यागछत् हेअर्जुनअक्षरभन्याकोकेले
नहराउन्यायरमात्माजोछ सोयरब्रह्महो तेहिव्रह्मकोस्वभावजोछ उमैजलोमानु ब्रह्मैजलो आ
त्माकनमानु जोछ त्योअध्यात्महो प्राणिहर्कोउत्पन्नहुनुजोछ त्योविराजहो देवताकोनिमित्तछत्
चरुभयाका मजपूजागर्भकामहो ॥३७॥ हेदेहभतांवर संपूर्णप्राणिमाश्रेष्ठनिमिहेअर्जुनअधि
भूतभन्याकोक्षरभावहो क्षरभावयानिताशक्त्या जोउत्पन्नहुंछ यावत्प्राणिहुंछ अधिदेवभ
न्याकोपुरुषहो कुरुपुरुषभनोलासूर्यमंडलकामाहमावस्थाकोहिरण्यगर्भजोभगवान्छ पुरु
षभन्याकोतेहिहो यसदेहिमा अधिजज्ञभन्याकोमैजुनविध्वनाउगयाकोसंपूर्णजज्ञकोअभिमा
नभन्याकोयज्ञकनजान ॥३८॥ हेअर्जुनअतकालभन्याकोमरणसमयेतेसवेनामामैनाईस
पुष्टिकनजोकलेवरछाईछ त्योमनुष्यमेरेभावकनवैकरुठमाजांछत् मकनसमुध्याकापुरण
नेमैमानीनऊँछ यत्मासंदेहछैन ॥३९॥ हेकोनेय यत्कलेवरकनछाउत्यासमयमाजस्कनस

५३
मुहिमर्द्ध उमेकनया उर्द्ध जुन जुन देवता कन समहि शरि र्छार्द्ध उर्द्ध नै उर्द्ध देवता का भावना लोभा
दित भया का देवता का वाधाने वासित भया को उमे देवता जलो भया को ते मे देवता मा युग ॥
॥ ते लोभया अधिदेवि मिहिन क्यार्गु पयो मर्ते क्षर समभ्याना कुन्ये हे छ भती ला सुन हे
अर्जुन ते सुनिमित्त संपूर्ण वेनामा बांदा वस्दा हिंदा मुत्ता मा यनि शास्त्र लेक ह्या अनुसार
मा यनि मेरे स्मरण दे प ह दे देविको अभ्यास भया प्राण ह्या वदना वदना मा यनि समहि छ
मरण भया को ठाठा छैन उठ युद्ध कर्म गर क्षेत्रिय को कर्म नडाई गर मजो यामेश्वर छु मेमा

अधिभूत क्षरोभावो पुरुषश्चाधिदेवता ॥ अधि यज्ञो हमेवात्र देहे देह भूतांश्च ॥ ४ ॥ अनकाले
जमा मेवे स्मरण काले वर ॥ यः प्रयाति समद्रावं याति नात्पत्र संशयः ॥ ५ ॥ यं यवाधि स्मरण भाव
त्यजत्यनेक लेवर ॥ तं मेवे तिको तेय सदा मद्राव भाविनः ॥ ६ ॥ तस्मात् सर्वेषु कालेषु सामनुस्मर
युद्धव ॥ मय्यर्थित मनो बुद्धिर्मा मेवे व्यस्य संशयः ॥ ७ ॥ अभ्यासयोग युक्तेन चेतसानान्यगामि
न ॥ परमपुरुषं दिव्यं याति यार्थं नु चिन्तयेत् ॥ ८ ॥ कविपुराण मनुशासितार मणोरणिभ्यां स
मनुस्मरेद्यः ॥ सर्वस्य धाता मच्चित्तस्य तादित्यवर्णनमस परमात् ॥ ९ ॥ प्रयाण काले मन
साचलेन भक्त्या युक्तो योगवलेन चैव ॥ भुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् सतं यत्पुरुषमुपैति दि

मनयति बुद्धि यति लगा उ मेमा भुमी लाई श्वर माली न होला संदेहन मान ॥ १० ॥ हे पार्थ अभ्यास का
योग ले युक्त भया का चिन्तने अभ्यास ग्या को वांवा आ मेमा बुद्धि लगा उ ते मे योग ले युक्त भया
का चिन्तने त्यो चिन्तयं कस्तो नान्य गामिनः अम संसार सुख भोग निर्न गया काले मे कन चिता उ
हे शास्त्र लेक ह्या का अर्तिकत सम ह दे पा वं सु जो दिव्य पुरुष कन या उ ला मूर्य मंडल जलाय
र वं ह कन या उ ला ॥ ११ ॥ हे अर्जुन जो मनुष्य यत्ना म कन सम ह छ पुराण भया को अधि भंदाय
नि अधि देविको कवि सरा जा न्या तिनै मे जो क को सा सना गन्या सा सना भया को अधिक सा
उ म कल संसा को पालना गन्या जो देवो मे कुना ले त चिताई सकनु र्द्ध भया को मूर्य जलो
चित्त लाई उ मा लो ग र दिव्या वर्ण भया को अथ काल अज्ञान ह्य जो छ त स दे वि पा भया को
॥ १२ ॥ योगि जो छ वडा भक्ति ले युक्त भै कन मरण समय मा कति मत न ड गाई कन अधि देवि
का योग को वल ले चित्त धि र ग किन पै हे ह दय क मन का चित्त ले वल मा ग र ई कन वना स रूप
प्राण कन उ भो नि र आया का सुख माना डिकन उ भो कि कन उ ई आं बिका मा ह मा ते स प्राण कन
रा बिका मनो भ मदा दि कालि संपूर्ण वरो व दे वि अधिक ह्या का पुराण पुरुष कन चित्त नाग
रि दे ह ह्या जा प्रात ते हि जो आदित्य को वर्ण भया का दिव्य पुरुष कन या उ छ यत्ना कुना ले अधि

देविको अभ्यास चाहिछ ॥१०॥ हे अर्जुन वेदज्ञानामनुष्य हउ नो छनू न स भगवान कन अक्षर भंड
नू अक्षर भन्दाको केलेनाशत कन्या ऊनू भंडनू बीतराग भन्दाको जो निहउ बीतराग भन्दाको
तपूर्ण माया कन्याका जो निहउ उले अक्षरमा वनू छन नो न ऊछ जुन अक्षरमा भगवान कन ई
छा भन्दाका मनुष्य हउ वृक्ष चर्य वन बाह्या गदिगुका शरणमा यछनू तेहि अक्षर यक्षकन सं
क्षय गति मि लाई क हंछु ॥११॥ हे अर्जुन शरीर का जनि धार छनू धार भन्दा यनि मुक्का भित्र य
ध्यावा दो अर्थात् ईन्द्रिय जनि छनू नितु नाई नित्य मृमा रा विवम गति हृदय कमल मा मन रा विचल
न नदि धुनि रा वि आत्म का प्राण कन उभो निरगया काना डिवाट चढाई योग मार्ग ले वृक्षा राउ मा
ते स प्राण कन रा वि यका प्रभगवान मा चिन नाई हे रिगर्मा करे क हंछु ॥१२॥ जुन जो गिथे हे क
य ॥१०॥ यदक्षर वेद विदो वदति विनति यद्यत यो विन राग ॥ यदि छनो वृक्ष चर्य चरति त ते यदं संग्रहे
रा प्रवक्षे ॥११॥ सर्व क्षण एतं यम्य मनो हृदि निरुध्य च ॥ मूर्त्ता ध्यायामन प्राण मास्थितो योग धार
रा ॥१२॥ अमित्य काक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मा मनुस्मरन् ॥ यः प्रयाति त्यजं देहं स याति परमां गतिं ॥
१३॥ अनं यचेताः सततं यो मां स्मरति विनश्य ॥ तस्याहं सुत मे पार्थ निमग्नस्य योगिनः ॥१४॥
नामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखानयमशुभतं ॥ नापुनंति महांत्मानं सति हि परमां गताः ॥१५॥ आवृक्ष
भुवना लोकाः पुनरावर्तिनोर्जुन ॥ मामयेत्यनुकीनेय पुनर्जन्मत विद्यते ॥१६॥ महश्च युगययं न मह
यं दुर्लभं विदुः ॥ रात्रियुग सहस्राणां ते होरात्र विदो जनाः ॥ अथ का छतयः सर्वा ग्रह ते होरा
रा का जज्ञो गतिकन अक्षर जस अक्षर प्राणि भनि छ प्रणव भन्दाको धानि नो ह हो ने स अक्ष
र को वन वृक्ष हो ने स अक्षर कन जपे गर्जने स अक्षर को अर्थात् महु मलाई अक्षर समुद्दे जो
त न्यासि प्राण त्याग गर्ह तो य म गतिकन नांद छनू ॥१३॥ हे पार्थ जुन जो गि अनेत्र अर्काति विनन
लाई मे मा चित्त ह का गलाई निरंतर एक अक्षर यानि मनाइ न विरि वाचं ज्ञान संग्रम सलाई स मु
हंछ निम्ये मे य मेश्वर मा ध्यान भन्दाका जो गि को नाम भूल भंडने स ले सधे मलाई यन्दाको
छ ॥१४॥ तिमिलाई पाई कन कया ऊछ भनो ना सुन हे अर्जुन तिमि वडो आत्मा भन्दाका जो गि हउ
मलाई पाई कन दुःख रा ह्या धर जज्ञो यो शरीर धारण गति के जन्म नुय दैन आक्रय योग का सि
द्धि ले पर वृक्ष माली न भन्दाका तिन हउ संसार कारो गक्षु धान वाजा डोग मि ई त्यादि के रि वे
ह नुय दैन ॥१५॥ हे अर्जुन वृक्ष आदि भन्दाका या वत् प्राणि छनू ति ह नार बाट ले संसार मा आउ
छन के रि सुन हे को नेय मलाई या या धान के रि जन्म नुय दैन सबै दुःख दे विमुक्त ऊछनू ॥१६॥
वृक्षा को प (मा) मु सुन हे अर्जुन ह जा युग जांदा विराट् छ ह्य वृक्षा को ये क दिन ऊछ यो वृक्षा को रा
त्रि दिन यति छ भनि जां त्या जो मनुष्य छनू रात्रि दिन मात्र जां त्या ऊनू काल कन जितन सकसा हो

५५
इतनु दिन गति न कुनाले एक दिन गयो अर्को दिन गयो यसै गरी ब्रह्माका दिन पुगछन् काल
का वसमा पुगछन् जाँछन् ॥१७॥ ब्रह्माका अहोरात्र पुगदा कसो कुँछ भनीला सुनहे अर्जुन
ब्रह्माको जव दिन विद्या उँछ ब्रह्मानव उँछछन् तेस समयमा अधिदेविको स्थावर जंग
मादि प्रजायवत मनुष्यादि यावत् प्रजाछन् तिस पूर्ण छंदेछ ब्रह्माका रात्रि समयमा ब्र
ह्मा सुष्यायाछि धेले देवियाका स्थावरादि प्रजा जति छन् संपूर्ण हर उँछन् ॥१८॥ हे
पार्थ जो मत ग्रामछ स्थावर जंगमादि यावत् भूत प्राणि जो छन् त्यो हुँदै कुन बाहु छोरे
तत्को पति छोरे यत्ने गरी हिँड्यो सो संसार जो छ ब्रह्माको रात्रि भया प्राप्त ब्रह्माको

मे ॥ रात्र्यागमे पुनीयते तत्रैवाव्यक्त संज्ञके ॥१९॥ भूत प्राण स एवायं भूया भूया प्रतीयते ॥
रात्र्यागमे वशः पार्थ प्रभवत्येह रात्रिमे ॥२०॥ परतस्मात्प्रभावो नो व्यक्तो व्यक्तो ज्ञानातनः ॥
यः सर्वेषु भूतेषु तस्य सुखा विनश्यति ॥२१॥ अयं क्लेश इत्युक्तं तस्मात्तु यमांगति ॥ यं प्रा
प्य नति वर्जते तच्छ्रमयस्मिन्मम ॥२२॥ पुरुष स एव पार्थ भक्त्या भ्यस्तन्यया ॥ यस्यांत
स्थानि भूतानि येन सर्वं सिद्धं ततः ॥२३॥ यत्र कालेन त्वमावृत्ति मावृत्ति वैवयो नः ॥ प्रयातायां
नितं कालं वक्षामि तत्त्वम् ॥२४॥ अग्निर्ज्योतिरहः शुक्ल एवमासा उन्नयमानः ॥ तत्र प्रयाता

तत्र न कुनाले उँसे हर ईजाँछन् जव ब्रह्माको दिन विद्या उँछ तिमूत प्राणिके रिकेरि कुँछन् ॥
१६॥ उँ अक्षर वा निष्कृताको अर्थ वनाई सक्या तेस अक्षरको स्वरूप दि अक्षरले कहँछु सु
नहे अर्जुन अधिक ह्याका स्थावर जंगम पदार्थ देखि अव्यक्त छ मनले चिनाईनु मुखले भ
न जति मात्र छ देखनु समाउनु केहि छैन त्यो अक्षर सनातन छ सनातन भन्याको केलेना श
न जन्मा सबै रहन्या यसै संसार जसो भनीला अन्य हो अन्य भन्याको क्या हो भनीला सो देख
न्या बल पदार्थ देखि विजातीय छ संपूर्ण जगत् संसार मानव भया यानि तेस अक्षरको नाश हु
दै न ॥२०॥ जो अक्षर कहि आभो व्यक्त गरि देवन समाउत न भयाको तेस अक्षर कन पदम गति
भँछन् तेस अक्षर कस्य रम गति पाया प्राप्त यस संसार चक्रमा फिर्त जन्म मर्त्य वदेन त्यो अक्ष
र मेरो पदम हो विष्णु यद जत्कन भँदछन् सोहि हो ॥२१॥ त्यो अक्षर कसो गरि पाईनु भनीला
सुनहे पार्थ अक्षर स्वयं पुन वजो छ संपूर्ण माया कालि र काय बुद्धि ले भक्ति गरि पाउँछ त्यो कसो प
रुव छ सुन जस पुन वका भिन्न वाट यावत् सकल संसार ह्याको छ तेसमा ह्याका संसार कसो गरि
पेडा कुँछ भनीला जसो माग वात घडा पेडा कुँछ जसो मुखले कडा कुँछन् तसो प्रकाशित ते

पुरुषले जगत जनिह संपूर्ण व्याप्य को ह ॥ २२ ॥ सगुण बांहरा को उपास ग या को निर्गुण को उपास ग या
को पति मार्ग चला उछु सुन हे भूत र्व भ अक्षर रूप जो बं ह छ तो उपासना ग र्पा कर्म ले उपास ग र्पा पति नु
न सम य मा म रिक न संसार मा ज नु मनु योगि ह र्ग दे न नु जुन समय मा म रिक न के रि ज नु मनु प र्छ
विस्तार सुन म क ह छु ॥ २३ ॥ विष्णु मा पु ग्या उ त र मा र्ग क ह छु सुन हे अर्जुन सगुण वं ह ज न्या संन्यासि तो ह
न मो श री र्छो डिक न अग्नि देवता मा पु ग छ न ता हा य छि जो नि देवता मा पु ग छ न अ ह भ न्या को दिन देवता
मो पाई क न भुक्त य क्ष या उ छ न देवता भुक्त य क्ष मा पु ग्या प्रा न छ मे हा को उ त रा य रा देवता मा पु ग छ न
पति पा या प्रा न विष्णु य द जो य र वं ह ने न क न या उ छ न मो क्ष जं ह ॥ २४ ॥ हे अर्जुन जो गि जो ह क र्म जो ग क र्म
पात्र ग र्पा जो ह यो श री र्छा डिक न भू म देवता मा पु ग छ भू म भ न्या को अभि मा न ते स्मा पु गि क न रा त्रि देवता मा
पु ग छ ता हा य छि कृष्ण य क्ष देवता मा पु ग छ ता हा य छि ह मे हा का द क्षि रा य रा देवता मा पु ग छ य मे ग

ग छंति वं ह वं ह विदो ज नाः ॥ २४ ॥ भू मो रा त्रि स्त था कृष्ण व र मा ला द क्षि रा य न ॥ त च चा न्द्र म न्यो ति र्जो
गी प्रा प्य नि वर्त ते ॥ २५ ॥ भुक्त कृष्ण ग ती हो ते ज ग तः शा श्व ते म ते ॥ एक या या न ना ह ति म न्य या व र्म ते पु
नः ॥ २६ ॥ नै ते सृ ती या र्थ ज्ञा न नु योगी मु ह्य ति क श्व न ॥ त स्मा त् सर्वे सु का ले षु योग यु क्तो भ वा र्जु न ॥ २७ ॥
वे दे षु ज जे षु त प स्तु चै व दाने षु य त्पु र ण्य फ ल प्रा दि षु ॥ अभ्य ति त्त सर्व मि दं वि दि त्वा योगि य रं स्था त्त मु पे
ति वा ष ॥ २८ ॥ इ ति श्री म द्भू ग व द्गी ता सु य नि व न्त्सु ब्र ह्म वि प्रा यां योग शा स्त्रे श्री कृष्ण अर्जु न सं व्वा दे भी ष
प र्ब णि ब्र ह्म योगो ना मा ष्ट मो ध्या यः ॥ ८ ॥ श्री भ ग वा नु वा च ॥ ई दं तु ते उ ह्य त म प्र व क्षा म्य नु सू य वे ॥

रि च द्र लो क मा पु ग छ ते स लो क मा आ फ र क र्म अ नु ता र्का सु च भो ग ग र्छ क र्म को सु च भो ग ग र्छ स क्पा प
छि मे घ मा ला ज न जां ह मे घ दे वि पृ थ्वि मा य र्छ पृ थ्वि वा प पुरुष मा य ग छ पुरुष दे वि स्त्री का ग र्म मा ज
छ य मे ग र्छ कि र्छे र ह छ ॥ २५ ॥ भुक्त कृष्ण ई ड ई ग ति जो ह नु ज्ञा न ले ग रा या को मार्ग ज्ञ ना ले से तो उ त र
ग ति क न ज्ञा न ते स द क्षि रा का लो मार्ग द क्षि रा ग ति ई ड ई जो ग ति ग र्छ न सं सार का नि मि त्त ग ति ह नु ह
क जो ज्ञा न ग ति ह ने ल्ले के रि ज न्मा उ दे न अ के जो क र्म ग र्छ ते स ले आ वर्त न ग र्छ उ छ ज न्म नु म नु ग र
उ छ ॥ २६ ॥ हे या र्थ ई ड ई वा ति क न मो क्ष ला ई से तो ग ति सं सार का नि मि त्त का लो ग ति हो भ ति ज्ञा नि
त प स्या ग र्पा मु नि ह र्ग जो ह नु क दा चि त य नि मो ह मा य दे न नु अ ज्ञा नि ज्ञ दे न नु त स्का र ण हे अर्जु न सर्व द
उ त ता व त्ता वां दा हि ड्दा सु र्दा पा नि यो ग यु क्त हो आ त्मे क न चि ता ग र ॥ २७ ॥ हे अर्जु न जो गि जो ह आ
फु ले पा हि य हा ई क न अभ्या स ग या दे व मा दो ल थ अ नु सार ग या का य त मा व ड का छि ले ग या का न
प स्या मा गो दान भु मि सु व र्णा दि दान दि या मा जो फु ल दे वि ह ते स फु ल क न हा मि ले क हि आ य क्ता ज्ञा न
लो ति मि क न नि लो म भै वा स कृ ष फ ल का न जि क मा जो जां दे न नु यो स पू र्ण भुक्त कृष्ण ग ति क त जो दे ह क न
बा र्द छ ति यो गि जो ह नु आ ष जो य र म य द ने क न या उ छ ॥ २८ ॥ इ ति श्री ॥ अष्ट म ध्या य स गु रा व
ह को ज्ञा न क हि यो के रि निर्गु न ज्ञा न को वि स्तार वं ह ज्ञा न को वि स्तार ग रि बु ह्म उ ना नि मि त्त न व म अ

ध्यायमाभयाका भगवान् आजागच्छन् हे अर्जुन यो ज्ञानतिमिक त मे ले जो क ह्यां सो व डो ग ह्य डुरमा
 कन कहन न कुन्या तिमि मे राव डो भ क नो ले क ह्यां के रि ति मि शास्त्री य ज्ञान ते मे ज्ञान ले गरि भया
 को जो ब्रह्म ज्ञान छ जुन ज्ञान पाया प्रा त संसार का कर्म बन्धन दे वि मोक्ष डो छ ॥ १ ॥ हे अर्जुन यो क हो
 ज्ञान छ भनो लारा ज ग ह्य भयाका संविता गर्तु कैसे कन न कहन कहिना लुका उता वस्तु मा को राज
 श्रेष्ठ त ज्ञे पा उता विजा को शास्त्र को राज भयाका व डो उत मय वित्र ग रा उता व डो उत मय वित्र प्र
 त्यक्ष पा उता दुःख न गरि ईक्षा गर्ने मात्र मिलन्या के वल धर्म स्वयं सुख ले गरि न सकनु केने
 नाशन कुन्या य सो ज्ञान कह छु ॥ २ ॥ हे य र न य य स ज्ञान धर्म को स ह्य जा न्या को ईक्षा कल
 रूप को ईक्षा न भयाका पुरुष जो छ न मलाई पा उत सके व न मर्मा को भयाका संसार मा वारं का
 जन्म छ म छ दुःख ग छ ॥ ३ ॥ अव ज्ञान वना उ छु सुन हे अर्जुन यो या व संपूर्ण जगत् संसार छ मे ले

ज्ञान विज्ञान सहितं यदु ज्ञान मोक्ष मे भुभात् ॥ १ ॥ राज विद्या राज ग ह्य य वित्र मिद सत्तम ॥ प्र
 त्यक्ष वगम धर्म सुमुख कर्तु मव्यय ॥ २ ॥ अ अ द्धाना पुरुषा धर्म स्या स्य वांतय ॥ अशायमा
 निवर्तते मत्सु संसार व र्त्तते ॥ ३ ॥ मया तत मिदं सर्व जगद व्यक्त मूर्तिना ॥ मत्स्थानि सर्व भूता
 नि त वा ह्ये व्यवस्थित ॥ ४ ॥ न च मत्स्थानि भूतानि यश्च मे योग भिष्वरः ॥ भूत भूत च भूत
 स्थो ममात्मा भूत भावनः ॥ ५ ॥ यथा काश स्थितो नित्यं वायुः सर्व जगम हान् ॥ तथा सर्वा
 णि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥ ६ ॥ सर्व भूतानि को त्रेय प्रकृतियां नि मा मिका ॥ क

संपूर्ण गरिया को छ कला मै ले व्या प्र गरिया को छ ब्रह्मादि स्थावर यर्जित याव प्राणि छ नु मे मा
 र ह्या को छ ई को आधा मे छु य स भूत प्राणि मात सूर्य को कि राले उ ज्वालो ला ग्या ई गरि
 ला ग्या को मात्र छु यो ज गत मे रो आधा रे मा छे न ॥ ४ ॥ हे अर्जुन ई भूत प्राणि ईश्वर मार ह्या का छ
 नु भनु यानि कल्पना मात्र हो संसार संग म छे न तिमि मे रा देवि योग के हेर कस्तो भनो ला ईत भू
 त प्राणि को संग म मिलन उठ नु व छु छे न ता यानि जगत् संसार को आधा रे मे छु भूत प्राणि मा छे न आ
 त्म स्व रूपे भूत प्राणि को उ त्पन्न गरि दि छु ॥ ५ ॥ हे अर्जुन कस्तो भनो ला जलै संपूर्ण पृथिवी व्या प्र गरि
 न्या व डो जो वायु छ या व न आकाश छ खालि था उ छ ने स्मा सदा पि दे छ ला गिर ह्या को क ते छे न त
 जै संपूर्ण भूत प्राणि मे रो आधा रे मा छ नु ई न मा मला गिर ह्या को छे न यो स्तो ज्ञान ॥ ६ ॥ हे की
 त्रेय जे व प्रलय काल हु छ ते स समय मा या व भूत प्राणि छ नु सवे मे रा सत्त्व रजस्त मो गुण वा
 भया कि मेरी व डो मा या छ नु मृष्टि ग न्या समय मा मे उ त्पन्न ग रा ई दि छु ॥ ७ ॥ ठ का को अर्को
 ठे कन कुन्या वता म जलो क से को संगत ग न्या यत्ता तिमि क सो गरि मृष्टि ग छे भनो ला सुन
 हे अर्जुन मे रा व डो मा या छ ते स्मा या मार हि कन म जो छु या व न भूत प्राणि संपूर्ण युक्त भयाका
 मा या का व स हुना ले आ कता मनो ग्य न भयाका हुना ले के रि के रि सि र्जना ग छु ॥ ८ ॥ मा या

का आश्रयन गरि जगत् सृजना गर्वा यस्तानि मि कन धर्म रया यक्यातला देन भति सो धौला
सुन हे अर्जुन हे धनंजय य धिय संसार दुःख सुख या य धर्म ले हो चो अन गो भया को मैले सु
जना गया को छुना यानि कर्म का वन्धन ले ना धिन्देन संसार सृजना गर्वा मेरो जो कर्म छ
ते कर्म का फल को ईछान भया को सत्या पि जस्तो भै र ह्या को यो संसार मैले बना आं सब
ओऊ भया अभिमान न भया को हुना ले कर्म को यास मा य देन ॥ ८ ॥ माया न भया का उदा
सिति मि जगत् संसार का वना उत्या यानि मि माया न भया का क्यान भनौला सुन हे अर्जुन
हे को ते य सत्वर जन म ईती न गुण भया कि जति विजा प्रकृति भंछनु तो माया ले चितना
गरि दिछनु ते स चितना गया का माया देखि जो चल अचल या वत्संसार उत्य न हुंछ य
स्कारण ले यो संसार फिदै र हन्या हुंछ मेदै जन्म दे गछ म लाई वना उनु स के देन ॥ १० ॥

पक्षि य पुन ज्ञानि कत्या दो विमु जाम्य हं ॥ ७ ॥ प्रकृति स्वाम वष्टु भ्य विमु जामि पुनः
पुनः ॥ भूत ग्राम मि संकृत्स्न सुवशं प्रकृते वशतः ॥ ८ ॥ न च सांता नि कर्माणि निव
धंति धनंजय ॥ उदासी न वदासीन म सक्त ते सु कर्म सु ॥ ९ ॥ मया ध्ये क्षेप प्रकृति सु
यते म चर चर ॥ हेतु तानेन को ते य जगद्वि प र्वि वर्तते ॥ १० ॥ अक् जानति मां मूढा मा
नुषि तनु माश्रितं ॥ परं भाव म जानतो म म भूत म हे श्वरं ॥ ११ ॥ मो घासा मो घे कर्मा
णो मो घ ज्ञाना विचेतसः ॥ राक्षसी मासुर चैव प्रकृतिं मोहि निश्चिता ॥ १२ ॥ महात्म

हे अर्जुन मूढ मनुष्य विवेक न जान्या अज्ञानि हरु जो छनु मेरा भाव जानै ननु ता यनि कस्तो भा
व भनौला संपूर्ण भूत प्राणि को ईश्वर संपूर्ण गर्वा गर उत्या य म तत्त्व यस्तो जां देन न ता
पनि मनुष्य का देह मा आश्रय गर्वा हो भनि म कन जानै छनु फलाना काश री मा दे
वता छ फलाना काश री मा देवता छैन भनि जनना गछनु ॥ ११ ॥ निमिलाई न जाना का
त गर ई दिछ भनि सो धौला सुन हे अर्जुन यर्थ कर को अभिलोष भया का मजस्तो ईश्वर
छाडि कन श्री युत्र दो लथ को आश्रय भया का म कन मां देन न फल दिन्या म लाई न मानि
कर्म गर्ना ले पर्थ कर्म गर्वा हुनु य सानि मित दृष्टा ज्ञान भया का वंजो ज्ञान न भया को
चेत हर या काति न हर राक्षस मोहनि माया व्यवस्था ज्ञाना नेस्तो भाव या छिला
या का दुनि आं म लाई गन्देन ॥ १२ ॥ ति आ आदर कस्त ले गछनु भनि सो धौला सुन हे
पार्थ छुद्र चित न भया को मुनि हरु तो देव ता को स्वभाव लिया का सवै कन करि वर देव
नु धै र्ये र हुनु दया गुर्न श्रद्धा गुर्न ईत्यादि भाव भया का म ईश्वर देखि अने न मन न भ
या काति न हरु या छि जल तेज वायु आ काश ईय च भूत मंदा ये हे के ले नाशन हु

न्यामकनवडाआदलेमान्दछन् ॥ १३ ॥ हेअर्जुनतिसंन्यासिहस्तमकनएकतारे
 किर्तनगछन्कोनैइद्वियजाईयानियायलाउन्देनधर्मेचित्तनागछन् ॥ १४ ॥ व्रतभयाका
 जछन्मुखलेयतिबोलनुयतिवानु हातलेयतिलिनुआंखलेयातेहेनुकानलेयति
 सुनुलिगलेयसामात्रजानुमनलेयतिचिताउनुमन्याह ॥ १५ ॥ व्रतभयाकाजछन्घटिआं
 मुन्यायनिघटियादेव्यायनिघटियाबोल्यायनिघटियागंधभयायनिअघियाद्वियति
 सधेमेलाईनमस्कारगछन् ॥ १६ ॥ हेअर्जुनकोहिसंन्यासिहस्तमकनज्ञानयज्ञलेयग्यग
 छन्अन्यावत्कर्मछाडिज्ञानलेमेरोयज्ञगरिपूजागछन्ज्ञानलेयग्यगयाहस्तुइप्रका
 रलेमेरोमेवनगछन्देवताभन्याकोउहिवावृत्तहोभन्याएकवसान्याज्ञानलेमेरोमेवन
 गन्याकोहछन्सूर्यचन्द्रशिवमरायतिइत्यादियनिभिन्नभिन्नदेवताछन्सबैमाविष्णु
 लाकाछन्भानिविशदस्वयज्ञानलेमकनमान्याकोहछन्विश्वसंसारसुखभयाकोभजो

नस्तुमांयार्थदेविपुक्रतिमाश्रिता ॥ भजंत्येनन्यमनसो ज्ञात्वाभूतादिसव्ययं ॥ १७ ॥ सत्तनकी
 र्तयंतोमा यतंतश्चहव्रताः ॥ नमस्यंतश्चसांभक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥ १८ ॥ ज्ञानयज्ञे
 नचाप्यन्यो यजंतोमानुयासते ॥ एकत्वेनपृथक्त्वेन वक्रधादिश्रुतोमुखं ॥ १९ ॥ अहंकर्तु
 र्यजतः स्वधाहमहमोषधं ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहमानिरहकृतं ॥ २० ॥ विनामहस्य

छअनेकप्रकारलेमानिछु ॥ २१ ॥ कस्ताप्रकारलेविश्वसंसारका मुखभैतिमितानिहोभानिसो
 सोलामुनहेअर्जुनकनुभन्याकावेदवादनिकन्याकाकर्मजनिछन्मैकुंयग्यभन्याकाधर्म
 शास्त्रवादनिकन्याकासंन्यातर्पणवलिबैश्वदेवइत्यांचयज्ञआदिभन्याकायज्ञजनिछन्
 सोमैकुंपितृभस्वधामनिजोअन्नजलदिछन्सोमैकुंसंपूर्णप्राणिकनअन्नआदिभन्या
 काऔषधमैकुंदेवताधितरुजुनसंत्रलेदीकनसंतुष्टहुन्छन्तिमंत्रमैकुंजलघुजविनाके
 हिकामवन्देननुकोहिसंतुष्टहुन्देननुत्योघजमैकुंसंत्रयाद्रिकनहातलेहोम्याकोसुबाको
 जोहविद्रव्यहसोमैकुं ॥ २२ ॥ हेअर्जुनयसजगत्संसारकाबाबुआमाबसकर्मलेवाच्याभनि
 सिकाउत्याधानावरजुइसंपूर्णमैकुंजानुपदार्थजोछन्धावित्रयदार्थजोछन्उंकारअक्षरजोह
 सग्वेदयजुर्वेदसामवेदअथर्ववेदइसबैमैकुं ॥ २३ ॥ हेअर्जुनमतिभन्याकोसंसारमागयाका
 कर्मकोफलमैकुंभन्याभन्याकोसबैकनपालतापोसनगन्याप्रभुभन्याकोसबैकोस्वामिप्राणि
 हस्तलेगन्याकोरुताग्याकोविचारगन्यासाक्षिसंपूर्णप्राणिहकोनिवासविताउनुसबैकोसर
 राउःखकनहर्न्यासबैकोउपकारगन्याइत्यसबैकोउत्पन्नगरुत्यास्थानसबैलेमन्यास्थानज
 समावसिछत्योस्थानविधानभन्याकोधर्मबाहिछभनिजोवस्तुगविछसबैकोचाहिन्याभैरवा
 कोसकलसंसारकनउत्पादिगन्याबीजजलोत्योबीजअव्यक्तकेलेताशनहुन्याइसंपूर्णमैकुं ॥ २४ ॥

हे अर्जुन मजो छु मूर्ख भेक न कति क की रण ले न ता उ छु कति क की रण ले जल वर्सा उ छु आठ भे हास मंसा
र देवि गृहा मिलि छु के र लिय क जल कन उ छु नामि चारे मे हा कन सम्म छो डि दि छु अमृत देवता ले वा म्या
संसार को नाश हुन्या मृत् सु सन भन्य को भया काय दार्थ अमृत भन्या को न भया काय दार्थ सवे मे छु ॥ १८ ॥ जो ध
र्म यज्ञ गार्धर्मा मा भया का आत्मा को साधना गार्धर्मा को मन भया का कन गतिक न जान्छु भनि सो धी
ला मुन हे अर्जुन त्रिविजा भया को दो द क धर्म केवल ते हि धर्म जान्या सो मयान गार्धर्मा च गव्या दि भयो ईया दि
पवित्र वस्तु वा म्या संपूर्ण थावतु हराया का उ मे सो मयान यंच गव्य ले शरीर का या यन क भया का यत्ना ति
कर्म हन् अग्नि हो मा दिय त ले गण या ति ब्रह्मा ह् अन्विका मूर्ख ईया दि अनेक स्वरूप भया का म क
न छु उ च ह ले पूजा गर्छु हां प्राय सकर्म ले स्वर्ग वास ह व भु भनि प्रार्थना गर्छु तिमनुष्य हन् ते स पुंण्य का क
लने देवता का र जाई ई ई नै का लोक मा पु ग छु तिम ई लोक मा पु गिक न देवता ले गर्वा दिव्य सुख भोग पा

जातो माता धाता पिता महः ॥ वेद्यं य वित्र मोक्ष गृह क साम यजु रे व च ॥ ११ ॥ गति भर्ता प्रभु साक्षी निवा
सः शरणं मुहत् ॥ प्रभव प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययं ॥ १८ ॥ तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्यमृतं नामि च ॥
अमृतं चैव मृतं च सदसश्चाहमर्जुनः ॥ १९ ॥ त्रैविजामां सोमया पूत पाया यज्ञे रिक्ता स्वर्गं नि प्रार्थयते ॥
ते पुण्य मासा यजु रे लोक मा स धां ति दिव्या न् दिवि देव भोगान् ॥ २० ॥ ते तं भुक्त्वा स्वर्ग लोकं विशालं क्षी
रो पुण्य मर्त्य लोकं विशन्ति ॥ एवं त्रयी धर्म मनु प्र यत्ता गता गतं काम कामालभन्ते ॥ २१ ॥ अनन्या श्वि
तयं तो मां ये जनाः पर्युपासते ॥ ते वां नित्या भियुक्ता नां योग क्षेमं व हाम्यहं ॥ २२ ॥ ये यन्ने देवता भ
क्ता यजन्ते श्रद्धया न्विताः ॥ ते य मा मेव को ते य यजन्त्या वो धि पूर्वकं ॥ २३ ॥ अहं हि सर्व यज्ञानां भोक्ता च प्रभु

उ छु ॥ २० ॥ तिमो मयान गार्धर्मा हन् वडा सुख भोग भया का स्वर्ग मा अनेक सुख ह्जा वर्ष गार्धर्मा कन
पुण्य का फल कर्म स कि या या छि के रि मर्त्य लोक मा संसार मा जन्म हुं छु यत्ने तर ह ले केवल के द क धर्म
माला ग्या या छि यज्ञ गर्मा ह्म के रि न मि कन यानि पूर्व जन्म मा आ फु ले गया का कर्म का वासना हुना
ले वै ध के धर्म या छि ला ग छु र स्वर्ग मा जानु संसार आ उ न् संकल्प गार्धर्मा मना ग या को का सकन या
उ छु मोक्ष हुन सक दे नन् ॥ २१ ॥ हे अर्जुन बुद्धि मान हन् अरु क ले कन के हि न जन्मा ए के ई श्वर
उ हि ना रा यण मा त्रे हो भानि आ मे हो मे रो चि जना ग रि मे रो आ रा धना गर्छु मजो छु तिमनुष्य हन्
का स धे आ मे का स मा धि मा ला गि र हा को भ क्त ह्म का योग क्षेम कन पु या ई दि छु योग क्षेम भन्या
को यानि विघ्न गार्धर्मा सिद्ध गार्धर्मा मोक्ष मा पु या ई दि छु ॥ २२ ॥ यावत् देवता ना ति मि र हा छो अ न् दे
वता को आ रा धना गर्मा ले यानि ति मि छे उ पु ग न्या हो क्वा नि मि त जन्म नु मर्त्य य छ भानि सो धी ला मुन हे को
ते य जो मनुष्य हन् अ न् देवता को भक्ति गर्छु वडा श्रद्धा ले शास्त्रिय बुद्धि ले आ रा धना गर्छु न त यानि ति
न ह ले गया को विधि पूर्वक हुं दे नन् ॥ २३ ॥ तिम ह ले गया को भक्ति क्वा नि मि त विधि पूर्वक हुं दे न
भानि सो धी ला मुन हे अर्जुन जत्कार रण ले वे दो क्त भया वेद शास्त्र भया यानि या वन् यज्ञ गर्मा मे छु
ति न ह ले यो त न्म गार्धर्मा न् दे नन् तत्त्व भन्या को जत्ता को तत्ता गार्धर्मा ई ज्ञान त सक दे नन् र विघ्न पद
करा

पाउं देन न तसर्थति जो छन संसासाजना न छन योगफल देवि च वंति वस छन ॥ २४ ॥ हे अर्जुन देवता
हम को वडा भक्ति ले वत गारि आ एवता गन्या मुनि हन उने उने देवता हम कन पाउं छन वितर को वत गन्या
हम नर्या गन्या हम वितर देवता कन पाउं छन भूत भग्या को वितर क भया मानु गण भया इत्यादि
को पूजा गन्या इने भूत गण मायु गछन मेरो पूजा गन्या मछे उयु गछन ॥ २५ ॥ मेरो पूजा गुंव
ओ सुक्ष्म छहे अर्जुन जो मनुष्य तुलशी आदि भया काय व फूल भयो फूल भयो मलाई वडा भक्ति
ले जो च हाउं छ मयानि ते मय व पुण्यादि कन वडा भक्ति लेनी कन स काय आत्मा कन मात्र देव न्या
ने लको पूजा भोग गछ ॥ २६ ॥ जम्का एग ले यलो दुं छ तम्का एग ले ति मिय लो मर हे को ते य सु
कार्ये जति गछे जो अति मा हो म गछे वे दो क अथवा धर्म शास्त्र ले क ह्या अनु सा वा ह्य एग क
न सुवर्णादि द्रव्य जो दान गछे इन्द्रिय शरीर कन वे निवस मा ग राउं न्या तय स्वी हन नय स्या जो

रेव च ॥ ननु मामपि जानति तत्वेनातश्च वंति ते ॥ २४ ॥ यांति देव वंता देवान् विदुन्यांति विदुवताः ॥
भूतानि यांति भूते ज्ञायाति सञ्जाजितो विमा ॥ २५ ॥ पबं पुष्यं कलं तोयं यो मे भक्त्या पृथ्य छति ॥
तदहं भक्त्युपहत मश्नामि प्रियतामनः ॥ २६ ॥ य करोषि यदश्नासि यजु होषि ददासि य
न ॥ य तत्पश्यसि को ते य तत्कुर्वस्य मदर्यणः ॥ २७ ॥ भुभा भुभ फले रेवं मोक्ष ले कर्म वन्दने ॥
संन्यास योग युक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ॥ २८ ॥ समो हं सर्व भूतेषु न मे द्वेषोऽस्ति न प्रिय ॥
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते ते सुकाम्यहं ॥ २९ ॥ अविचेतु दुःख एव हि भजन्ते मां मनस्यभाक् ॥

जो गछे गर्न सक देन न त्यो सेवे मै लाइ अर्थ राग रा ॥ ३० ॥ हे अर्जुन य म्य कार सिन कर्म गया या छति मि
जो छे सुख दुःख गराउं न्या भुभ अ भुभ ज मनु मनु गराउं न्या कर्म का फल स्वल्प वधन देवि मुक्त हो
ला छुटो ला कर्म का फल त्याग गर्नु जो संन्यास धर्म छने सुधर्म ले युक्त भया को अन कर्ण भया का
ति संसा देवि मुक्त हो ला मछे उयु गो ला ॥ ३१ ॥ तिमि अर्का को भक्त आ कु भक्त भया रा ग द्वेष भ
या कार ह्या छे आ क्रै भक्त को मा व गारि ह्या छे उति आ का गति मा त हे न छे भनो ला मुन हे
अर्जुन संपूर्ण प्राणिमा आ क्र भक्त अर्का को भक्त मा ति रो वर छु जो मेरो होइन य राई को हो भ
न्या हो व मलाई छेन आ क्र हो भनि पियारो मेरा को हि छेन म कन अनि जलो मान मुन हे अ
र्जुन जले अणो ताप्या प्रांत सेवे को ज जो जा छन यो आ कु हो य लो जा जो कानि देउ यो पर
ई हो य लो जा जो रहन देउ भ देन जले मेरा शरण माय न्या आ के दुःख वा छु त दछन मेरा न ज
क मान य न्या आ के दुःख पाउं छन फेरि मुन हे अर्जुन मनुष्य हन ले भक्ति ले राग द्वेष फलिक
न मलाई सम हूँ मयानि राग द्वेष के हीन रा वि भक्त हन कन भज दछु अणो देवि जो जो भया
का मनुष्य ले राग द्वेष के ही देवि देन ता य न्या मनुष्य देवि अणो ले यानि राग द्वेष के ही गारि

देन न जैतान ॥ २८ ॥ हे अर्जुन यद्यपि महापापिष्ठ हो घटिया आचार भया को होना यनि मेरो भक्ति
गर्त लाग्यो मेरा शरण माययो भया न्यो मनुष्य साधु मानिह कयानि मित भनौला संपूर्ण त्याग
रि अर्क कन कसै कन न भजि सका प्रमे कन सांता ले त्यस्तो यनि साधु बोला उछ धर्मात्मा ता मेरा
शरण मायया पाछि कयान बोला वै नरु ॥ २९ ॥ यो उरा चारिक मू प्रकार ले धर्मात्मा बोला यो भनि
सो धौला सुन हे अर्जुन यो पापिष्ठ यनि मेरा शरण मायया विनिके चोडे धर्मात्मा होई जांछ उमेक्ष
न सा सात चित होई नाछ आज सम भगवान कन न जानि पाय गारियो अउ प्राप्ति पाय गयि छैन
भगवान का शरण मायया निमित्त जान हेर भंछर अधिका पाय मे कन अर्थ राग र्छ सांता चित राग
उछ हे कोने यनि मि जान कसै हव जयनि मेरो भक्त वेर जा देन नाश हुने देन ॥ ३० ॥ प्रजापति राव्या
को अधिकार न भया पापि मनुष्य यनि मलाई भया प्राप्ति तर्द छनु सुन हे पाथि मया मुद्र भया

साधु रेव समन्य संभ्य गधा वसितो हि स ॥ ३० ॥ क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शब्द क्वांति निगच्छति ॥ को ते य
प्रति जानिहि तमे भक्तः प्रणश्यति ॥ ३१ ॥ सा हि यार्थ स्यादभिय ये विद्युः पाय यो नयः ॥ स्त्रियो वैश्या
स तथा भूद्रा स्ते विद्याति यरां गति ॥ ३२ ॥ किं पुण ब्राह्मणा पुण्या भक्ता राजर्षय तथा ॥ अनित्य
म सुखं लोकः सिमं प्राप्य भजस्व मां ॥ ३३ ॥ सत्यना भव मद्रु को मद्याजी सांन मन्कुरु ॥ मामेवैश्या
सि युक्ते च मात्मानं मन्यरा यणः ॥ ३४ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता सुयानि षट् सूत्रं ह्यविद्यायां यो
गशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भीष्मपर्वणि राजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ९ ॥

वैश्य भयाई जो छनु यद्यपि पापिष्ठु पूर्व जन्म का पाय ले उरु न भया का हुनु तथापि केवल मे
रा शरण मायया प्राप्ति यनि यर म गतिक न जांछनु विष्णु पद कन पा उछ ॥ ३२ ॥ तियापि हनु यनि
मेरो भक्ति गारि वै कुरा था उछनु सह जै ले मे मा भक्ति हुंछ यम निमित्त हे अर्जुन चोडे मरि न्या म
धे उरु हनु या सुख कति न भया को यो लोक मा जन्म मे कन व्यर्थ जन्म न फल भजो म मेरो सेवा
गर् अन्क्यान पा उरु देन न सुन पुर्व जन्म का पुण्य ले जन्म भया का नि ब्राह्मण हनु भक्त जो राज
म वि क्षोत्रिय हनु भया ई कान कया कुरा छनु ॥ ३३ ॥ तिम्रो सेवा अकार ले गर्त भनौला सुन हे
अर्जुन चित मा मै लाई राखि मे मा भक्ति लग उ मेरे निमित्त यज्ञ पुजा गय्य गार यस्तो चित गारि मे
रो भक्त गारि म ईश्वर मा समाधि लाया प्राप्ति केवल मे जसा भया को नि मि आ म रूप कन पा उला
विष्णु पद कन पा उला ॥ ३४ ॥ इति श्री ॥ ९ ॥ भक्त हनु निश्चय मलाई जानि कन न हनु भया
हो याले भगवान जो छनु केरि जान वता उछनु हे महावा हो केरि यानि क हंछु सुन हे अर्जुन आ
मा उरु जालो गारि देवा ईदिया मेरा वचन निमित्त मेरा वचन सुना को वडो पियारे मां न्या नि मिलाई

कहिकत संसारका कल्याणनिमित्त कह्यु ॥ १ ॥ अनेक कल्याणको पनियारमेश्वर कनकुसुन कवीनछ
मुनहे पार्थजावतदेवताछनुनियनिमलाइनिश्चयगारिजादेनतु कयाअर्थभनौलादेवताभन्यायनि
महर्षिभन्यायनिमयेहेकोआदिपेहुनालेईसंपूर्णमेलैउसन्नगरायाकोहुनालेसकनज
जाकोतसोगारिबुहनसकतैनतु ॥ २ ॥ हेअर्जुनजोमनुष्यसकनकेलेनजानाकाआजहुम
निनान्दछइतभन्यायहिलेकाकोहिहोइन सबैभन्याआदिईनैहुंभनिजान्दछसोमनुष्य
जोछजावतमनुष्यमाबुद्धिमानहोतेसलेजानिकनमयाकानजानिकनगयाकायनियप
संपूर्णपायदेबिमुक्तहुंछ ॥ ३ ॥ संपूर्णलोककामहेश्वरकसोगरिभयोतिमिभनिसोधीला
मुनहेअर्जुनअतकर्णउज्यालोगराउनुजोछयोबुद्धिहोआत्माआदिभयाकायदार्थकनजो
उभयभयो जान्याकोजाननविर्सुसमुद्रावतुअसंसोहकोछआफुकनमान्यछतेयनि

नमेवेउमुरगणाप्रभवन्नमहर्षय ॥ अहमादिहिंदवानां महर्षिनाचसर्वस ॥ १ ॥ योमाम
जमनादिचवेतिलोकमहेश्वरम् ॥ असंमूढसमर्थेषु सर्वपापेषुमुच्यते ॥ २ ॥ बुद्धिजा
नमसंसोहः क्षमासत्यदमसमः ॥ सुखदुःखभवोभावोभयश्चाभयमेवच ॥ ३ ॥ अहिंसा
समतानुष्टिस्तयोदानयशोयशः ॥ भवतिभावभूतानां सत्तत्त्वपृथक्विधाः ॥ ४ ॥ मह
र्षयः सप्रपूर्वचत्वारो मनवस्तथाः ॥ मद्राबासानसाजातास्थालोकईमां प्रजा ॥ ५ ॥ एवंवि

तेमूदेबिडुष्टभावनातगर्नुतेस्काविगारमानयधुक्षमाभयो जस्तोमुन्याकोजस्तोदेष्टा
कोजस्ताकातसोगारिवोलनुजोछयोसत्यबचनहोवाहेरकोइन्द्रियश्रोत्रत्वक्चक्षुजि
काश्राणावाक्याणि पाउयस्त ईदृशइन्द्रियवसमान्याउनुजोछदमहोमकनअनक
र्णिकतचंचलहुन्यानादिनुससहोचितलाईआनन्दभयोभन्यामुखहोचितलाईताय
भयोभन्यादुःखहोउत्पादिकुनुजन्मनुभवहोयेदाहुनुअभवहोहुनुडरपाउनुत्रासहो
दनुअभयहो ॥ ४ ॥ प्राणिकोपीडातगर्नुअहिंसाहोसवैप्राणिमावरेवरचितराखनुसमताहो
मनसासत्तोषराखनुनुष्टिहोइन्द्रियवैचिकनजाडोनृवागमिभोकसहिकनप्राणिमावरेवर
चितराखनुधानादिलेशरीरकनपीडादिनुनयहोमुयाचनाईविधिपूर्वकइव्यदिनुदानहोधर्मानि
मित्तगयाकोकिर्तिहोअधर्मअदिन्याआयकिर्तिगयाकोयशहोबुद्धिआदिभयाकाजनिभाव
यदार्थकहियाईजोछनुप्राणिकाकर्मअनुसारव्यवहारसंसारमाचलाउनानिमित्तमदेबिभया
काहुनु ॥ ५ ॥ हेअर्जुनअधिमप्रहृषिहृसावर्णिमनुआदिभयाचारमनुयोगाहुजोछनुतिमेषा

चित्तद्वन्द्वविभक्त्या साधने युक्तभयाकाहुत् मेरा मानसियुक्तद्वन्द्वमनलेजिनाई कनभयाकाहुत् यत्तापेगाह
 जताकोयानेसंगहो सगभियाकोसंसारचक्रमाधर्ममागनेकेकु ईनकोरहयाजगातेहिछुनियोगाह
 जताप्रजायतियेसंसारकासावतुप्राणिछुनईनेऊन ॥ ६ ॥ हेअर्जुनयमेराविभूतियोगकनविस्तार
 गरिकनईश्वरसर्वत्रहेछुईश्वरनभयाकोकाहेरहेनछुभनिबुद्धिकनयोगजताकोततो गरिकनजो
 जानदछुन तोयोगमाचंचलहुन्देन योगलेयनिमोमनुष्यवलियो गरिसमाईछु येछुकरमासन्देहछे
 न ॥ ७ ॥ क्यानिमित्तविभूतियोगबुद्ध्यायछिमनथीरऊछुभनिमोबोलासुनहेअर्जुनयोजगसंपूर्ण
 जोछुमेवात्मयाकोछुसंसारकोयाननागर्जयनिमेरेवाटऊछुमेमायोसंसारचक्रकिईछुयोनिश्चय
 बुद्धिसुष्ठुतिमालाग्याकोआत्मजानाकोबडोईछुभयाकायगिडितहलुसलाईभजदछुमेराशरणमाय
 ईछुन ॥ ८ ॥ हेअर्जुनतियगिडितचित्तयनिमेयरमेश्वरमालगाउछुन यरमेश्वरेमाप्राणलगयाकाऊ

भूतियोगश्चममयोवन्तिनवतः ॥ सोधिकंयेनयोगेनयुज्यतेनात्रसंशयः ॥ ९ ॥ अहंसर्वस्यप्रथमोमत्त
 सर्वप्रवर्तते ॥ इतिमत्वाभजतेमावुःकाभावममन्विता ॥ १० ॥ मन्विताममृतप्राणावोधयन्त यरस्यरम् ॥
 कथयन्तश्चमानित्य तुव्यान्निचरसन्तिव ॥ ११ ॥ नेवासततयुक्तानाभजताप्रीतिपूर्वकम् ॥ ददामिबुद्धियो
 गतवेनमासुययान्तिने ॥ १२ ॥ नेवामेवमुक्तयार्थमहमज्ञानजतव ॥ नाशयम्यात्मभावस्थी ज्ञानदीपेन
 भाभ्यता ॥ १३ ॥ अर्जुनउवाच ॥ परं ब्रह्म यद्रामययित्रं यरमभवान् ॥ पुरुषं शश्वतं दिव्यमादिदेव
 मजं विभुं ॥ १४ ॥ आऊग्यामृषय सर्वदेववीनारदस्तथा ॥ असिनोदेवलोव्यास स्वयंचैवब्रवी

छुन यरस्यरआकेजस्तोसाधहलुसितभयाआकेआत्मासितभयोतयनिमेरावराक्रमभयाका
 मेरायशभयाकाकठाहानेआत्मबुद्धाउछुन मेलाईबुद्ध्याज्ञान तेसेज्ञानलेचित्तबुद्धाउछुन
 मलाईजादछुनरसन्तोषगदछुनरमाउछुन ॥ १५ ॥ मलाईबुद्धनानिमित्तभयोनिरन्तरएका
 ग्रभेमेमालाग्याकासनलाईवजोपियारोमानिस्त्रियुत्रकोमायामारमेराशरणमायारिमे
 रोमेवामालाग्याकोयज्ञातियोगिहलुकनबुद्धियोगदिछुन उनबुद्धियोगलेयोगिहलुमकन
 पाउछुन साक्षात्आत्माकनदेवन्याबुद्धिदिछु ॥ १६ ॥ संपूर्णबुद्धिनाशगारिदिन्याआत्मज्ञानकोय
 निमेनाशगारिदिछु सुनहेयार्थसईश्वरछुनिबुद्धिमानयोगिहलुकाईश्वरकोश्रुताहवसुभना
 निसित्तअज्ञानलेभयाकोआत्मकोअधकारसवेनाशगारिदिछुमेरास्वभावभयाकोज्ञानजोछु
 तेहिआत्मासादीयजगयाजस्तोगराईदिछुउज्यालोदेखतछु ॥ १७ ॥ भगवानलेसक्षेयगारिविभू
 तियोगवतायाकोमुनिकनचित्तमाअधिकोविस्तारसुनाकोईछाभयाकोअर्जुनजोछुनविनिगदछु
 न हेभगवान्तिमिजोछोसर्वव्यादिछोतिमिकनयरत्रसुभंछुन यरमधामभानितिमिकनमच्छुनउ
 ज्यालोकनउज्यालोगराउज्यादिव्यपुरुषभनिकनभजदछुसवेभयाआदिकेलेनजान्यातिमि

कनभजदछन् तिनै लोक आत्मारहाका सबै भक्तवडा प्रभृतिमिकनभजदछन् ॥ १२ ॥ कोभक्तभनि
 सोधोला मुन श्रीकृष्णयावत् ऋषिछन् वशिष्ठादि ऋषिहस्तदेवस्तुषे जो नारदछन् असितमुनि
 भया देवमुनिभया व्यासमुनभया इत्यादि मुनिहस्तले तयाई लाई परमधामभनिभदछन्
 तयाई यनियर ब्रह्मजन् सबै को ईश्वरजन् भनिभनु कछन् ॥ १३ ॥ हे केशवयो सबै ले निमिकन
 परमधाम परब्रह्म इत्यादि भन्या को मेले तव डोलांचो सांन्या का अर्थ ले भनोला जुन कर
 रिषिहस्त गथ्या सोहि कर तयाई वा आग्यागर्जु कछ यलनिमित्त ईकर एक दीनयनि होई
 न हे भगवान् तयाई को प्राडु भाव भन्या को साक्षात्कार जाननु तादेवतायनि सत्ते ननु देत्ययनि
 सत्ते ननु ॥ १४ ॥ को जानदछन् भनोला मुन परब्रह्मोत्तम हे भूतभावन संपूर्ण प्राणि को अमिलाष
 पुयाई दिन्या हे भूतेस भूत प्राणि कारवा मिदेवता कायनि देवताति मिहे जगत्यते हे जगत्को

विमे ॥ १५ ॥ सर्वमेतदृतं मन्य जन्मावदसिकेशव ॥ नहि ते भगवन् भक्ति विदुर्देवानदानवा ॥ १६ ॥
 स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं परब्रह्मोत्तम ॥ भूतभावन भूतेस देवदेव जगत्यते ॥ १७ ॥ वक्तुमहर्ष्य
 शेखेण दिव्याह्यात्मा विभूतय ॥ याभिर्विभूतिभी लोका निमास्तु व्याप्यति कृषि ॥ १८ ॥ कथं विद्या
 महं योगिन् स्त्वांसदाय रिचित्रयन् ॥ केवुकेव च भावेवु चित्तो मि भगवन् मया ॥ १९ ॥ विस्तरेना
 मनोयोगं विभूतिञ्च जनार्दनम् ॥ भूयः कथयतु त्रिहिं शृणु नो नास्ति मे मृतम् ॥ २० ॥ नारायण ॥

मालनागर्ज्या प्रभृतिमिजोछो आकुलाई आके देवछो कोन प्रकार ले भन्या आत्मस्वरूपयतिमि आ
 के मानदेविछो तिमिदेवि अर्को तिमिकन देवन कन सकछ ॥ २१ ॥ हे कृष्ण तिमिकन साक्षात्का
 रवृत्त को हियनि सत्ते ननु रतिमिछे उ विजि गर्हु तिमो योग कहन तिमि सामर्थ्य छो दिव्यभयाके
 शम्भु जानले जानिन्या तयाई को आकु विभूति आग्यागर् आत्मविभूति भन्या को आकु विस्तार
 आजागर कनु विभूति भनु होला जो ना विभूति लेयो संसार व्यापित गरि रहा काछो यो विस्तार
 गर हे भगवान् ॥ २२ ॥ हे महायोगिन् जो मछुति मोचिता गर्हु बुदोक सप्रकार ले तिमिकन ना
 उ संसारमा भया का कनु कनु वस्तु माति मोचिना गरि मेले ध्यान गर्नु ॥ २३ ॥ बाहिरतिरि
 र्या चित्त भया का यनि कनु कनु वस्तु चित्त ना गर्दा तिमै चित्त ना गया जस्तो हुंछन् हे जनार्दन के
 रि विस्तार गरि तिमो विभूतियोग को आग्यागर् जो ना ऐश्वर्य ले संसारमा कहिया काछो आ
 मयोग आग्यागर् तिमो अमृत जस्तो वचन मुनिकन मेरा कान अघाउ देननु वारंवारुं
 ना को ईछा गर्हु ॥ २४ ॥ अर्जुन ले विजि गया को मुनिकन भगवान् आग्यागर्छन् हे कृष्ण
 छ कनु वंति मा वडा अछु तिमि हे अर्जुन अत्यन्त वठि यामेरा आत्मा को विस्तार विभूतियो
 ग कन पैले कहछु मुन मेरा यस विभूतियोग को अन्त पाई सकनु छेन वडो विस्तार छु तिमि

कनसंक्षेपनेकहं॥१८॥ हे गणकेश संपूर्णभूतप्राणिकाश्चनकर्णमावस्थाकोजिवात्मा
मेकं जावत्संसारकोऽद्यानिमाह्यनिश्चयनिमेकं॥२०॥ वाह्यादित्यमाविष्मना
माद्यादित्येमेकं उज्जालोयदार्थमाश्नुमानजोसूर्येष्टतुतिमेहं यकावत्तवायुमामरीचि
नाउगयाकोवायुमेकं यावत्ताराश्चन्द्रमामेहं॥२१॥ तारवेदमासामवेदमेहं जा
वत्देवतामायनिइन्द्रमेहं संपूर्णइन्द्रियमामनजोह्रसोयनिमेहं भूतप्राणिमात्रे
तजोह्रश्चनकर्णकोबुद्धियनिमेहं॥२२॥ येगाहृद्रमार्शकरनाउगयाकोमेहं यक्षदे
वतारक्षसमाकवेरयनिमेहं अष्टवसुमायावकभन्याकोयनिमेहं जावत्तयवतसामे
ह्यवतभन्याकोमेहं॥२३॥ जावत्पुरोहीतमाहृहस्यतिनाउगयाकोब्रह्मपुरोहीतभनि
मकनजानयावत्सेनाकोमर्कस्कन्दभन्याकोस्वामिकांतिकमेहं यावत्तदीतलावमा

श्रीभगवानुवाच॥ एतत्तेकथयिष्यामिदिव्याह्यात्माविभूतय॥ प्राधानेनः कुरुष्वेष्टना
स्त्यसोविस्तरत्यमे॥१९॥ अहमात्मागणकेश सर्वभूतासयस्थिताः॥ अहमादिश्च
मध्यश्चभूतानांमत्तवच॥१५॥ आदित्यानांमहंविष्मज्योतिवारविर्गमान्॥ मरी
चिमततामस्मिनक्षेत्राणांमहंशशि॥२०॥ देवतांसामवेदोस्मिदेवानांमस्मिवास
य॥ इन्द्रियानांमनश्चास्मिभूतानांमस्मिचेतनां॥२१॥ रुद्राणांशुंकरचास्मि वि
तेशेयक्षराक्षसांवसूनांयावकचास्मिमेहं शिखरिनामहम्॥२२॥ पुरोधसां
वपुरव्यमांविद्विषार्थहृहस्यतिम्॥ सेनानिकंमहस्कन्दः सामामस्मिसागरः॥२३॥
यानिसमुद्रमेहं॥२४॥ संपूर्णरिषिमाकोभृगुनाउगयाकोमेहं संपूर्णवचनमाहका
क्षीप्रणवमेहं॥२५॥ संपूर्णजग्यमाजयजज्ञमहं संपूर्णस्थावरमाहमालयेय
वतमेहं॥२६॥ संपूर्णवक्षसाश्चक्षत्रमकुं संपूर्णदेवमृषिमानारदयानिमेकं यावत्तगन्धर्वाको
चित्ररथनाउगयाकोगन्धर्वमेकं जामिदेविनोगलिन्यासिद्धहर्माकायिलमुनियानिमेकं॥२७॥
संपूर्णद्योतामासमुद्रमथनगर्दानिस्वयाकोउज्ज्वलानाउगयाकोद्योतामेकं संपूर्णहातिमाहै
रावत्तनाउगयाकोमेकं जावत्तमनुष्यमागजाक्रुत्यामेकं॥२८॥ संपूर्णशस्त्रास्त्रमावज्रमेकं
जावत्तगार्हमाकामधेनुमेकं उत्पन्नगराउगयाकाकामदेवमेकं संपूर्णसर्वमावागुकिमेकं
॥२९॥ हेअर्जुनयावत्तनागमाश्चनत्तनाउगयाकोनागमेकं जलमारुहाकोदेवतामावरुण
मेकं जावत्तपितृदेवतामाश्चर्यनाउगयाकोपितृमेकं यावत्तसप्तनागन्यामाजमरात्तयानिमेकं॥३०॥

संपूर्णदेयमायुहादमेकं वर्मगर्भयदार्थमाकालमेकं पक्षिमागदमेकं ॥ २१ ॥ चतुर्न्यायदा
र्थमावायुमेकं शस्त्राभिर्याधनियमामचन्द्रमेकं संपूर्णमाहामाकरभन्याकोमोक्षामे
कं वगन्यानादिमागंगामेकं ॥ २२ ॥ हेअर्जुनमृष्टिकोउत्पन्नगराउत्पायनिमान्यायनिमेकं स
ंपूर्णविजामवेदान्तशास्त्रयनिमेकं बोलन्याहर्बोलन्याकोरुगरन्याययनिमेकं ॥ २३ ॥ जाव
हअक्षरमाअकारमहसंभारमाधरसमासमईहं वासीसमासमेकं यलाघडिमुकनादिमाके
लेनमकिन्याकालमेकं चारेतिरुमुखन्यामाकोधानानाउभयाकोब्रह्मामेकं ॥ २४ ॥ भयाको
यदार्थकोसंपूर्णनाशगर्भामृष्टमेकं हुन्यायदार्थकोउत्पन्नगन्यामेकं जावत्स्त्रिहर्काकि
र्तिलक्ष्मीसरश्चोतिइतीनयनिमेकं जावत्प्राणिकोसज्जनमेकं धैर्यैरहस्यायनिमेकं दयाभ

महर्षिणांभृगुरहंगिरामत्स्याकमक्षरं ॥ यज्ञानायययज्ञोस्मिस्थावरारणांहिसालय ॥ २५ ॥ अश्व
त्थसर्वदक्षानांदेवर्षिचनारदगन्धर्वाणांचित्ररथमिद्वानांकपिलोमुनि ॥ २६ ॥ उच्चैश्चवासमश्वा
नाविद्विषामामृतोद्भवम् ॥ दैरावत्गजेन्द्राणांनरानांचनराधियम् ॥ २७ ॥ अशुधानांमहंकज्रंवे
जनांमस्मिकामधुक ॥ प्रजनश्चास्मिकंरुष्यं सूर्याणांमस्मिवासुकि ॥ २८ ॥ अनन्तश्चास्मिना
गानां वरुणोमादसाम्बह ॥ पितृनांमर्यमश्वासिमयमसंयमतामह ॥ २९ ॥ प्रह्लादश्चास्मि
दैत्यानां कालकलयतामहम् ॥ मृगानांचमृगेन्द्रोहं वेनतेजश्चयंक्षिणां ॥ ३० ॥ यवनः पुवताम
स्मिरामशस्त्रभृतामहम् ॥ ह्वातामकरश्चास्मि श्रोतसामस्मिजार्हवि ॥ ३१ ॥ सर्गानांमादिर
तेश्चमध्यंवेवहमर्जुनः ॥ अश्वात्सविजाविजानांवादः प्रवदतामहं ॥ ३२ ॥ अक्षराणामकारेस्मि
दन्दसानास्मिकस्यच ॥ अहमेवाक्षयकालोधानाहंविश्वतोमुखं ॥ ३३ ॥ मृत्युसर्वहरश्चास्मिउद्भवश्चम
विष्यताम् ॥ कीर्तिश्रीवाकनारीणांस्मृतिमेवाहंतिक्षमा ॥ ३४ ॥ हस्तमास्तथासामांगायत्रीह
न्दसामहम् ॥ मासानांमार्गशिर्वोस्मिः शत्रुनांकुलमाकर ॥ ३५ ॥ धृतं हलयतामस्मितेजसेज

न्याकोयनिसुहं ॥ ३५ ॥ सामवेदमायनिहहस्तांमभन्याकोमेकं संपूर्णहन्दमागायत्रिहन्दमे
कं वाहमेनसामशीरमेकं ह्मन्नुमावसन्नश्रुतमेकं ॥ ३६ ॥ हलकालयदार्थमाजुवामेकं
तेजभयाकायुवमातेजमेकं रणभयोहृगरभयोजसमाजितन्यामेकं उद्यमगर्भपुत्र
वकोउद्यममेकं सान्त्वकियुवकोमत्वमेकं ॥ ३७ ॥ दृष्टिवांसिमावसुदेवकायुववासु
देवमेकं पारुडवकायुवमाधनेजयजोतिमिहोसोमेकं यावत्सुनिव्यासआदिगएमेकं
यावत्कविमाउत्समाताउगयाकोकविमेकं शुक्रावायमेकं ॥ ३८ ॥ यावत्यातकिह
यंमेकं जावत्ज्ञानिमनुष्यकोज्ञानमेकं यावत्यातकिहृकनसासनाडडगन्यामे
कं जितनामाइहागर्भामनुष्यमानीतिभन्याकोमेकं यावत्गद्ययदार्थमामोतभन्या
कोनबोलतमेकं ॥ ३९ ॥ संपूर्णभूतप्राणिकोउत्पन्नगराउत्पावीजमेकं कतिकहनुमुनेह

अर्जुन यस संसार को भूत प्राणि चर अचर जो छ मझाडि अर्को को हि छैन सबै मे ऊं ॥ ४० ॥ हे पर
म यस मेरा देवि विस्तार को अन्त तयाई सकुछैन यस वस्तु मा इश्वर यस वस्तु माई श्वर छैन
भनीया को का हि छैन यो मै लेयो कहिया को ये कछेउ मात्र क ह्या विस्तार वता उन क स ले सक
छ ॥ ४१ ॥ हे अर्जुन यस संसार मा मेरा अश्वर्यो युक्त भया को वडा संयत्ति ले युक्त भया को
ठेरे विजाय ह्या को अस्यति कल्या का कल्या का वस्तु छुन तनु मा मेरे तेज ले सो भायाया
को जान विना मेरा तेज का अंश ले यस संसार मा उज्यालो प्रकास छैन ॥ ४२ ॥ हे अर्जुन यो मे

भिनाम ह ॥ ज्यो सिंघ वसाया सिंघ सत्त्व वताम हम् ॥ ४३ ॥ दृष्टि ना वा सुदेवो सिंघारा खतां
धनं अयः ॥ मुनिनां मय्य हं व्यास क विना मुसना कवि ॥ ४४ ॥ द्रुपद मयताम सिंघी त्रिरे सिंघि जिगी
बताम् ॥ मोन वैवस्मि गुह्यानां ज्ञान ज्ञान वताम हम् ॥ ४५ ॥ यच्चा विमर्ष भूतानां वीज तद हम्
अर्जुन ॥ न तदस्ति विना यस्यात्म या भूत चराचर ॥ ४६ ॥ ना तो सिंघ मम दिव्यानां विभूति ना यरुत प
॥ ह्य भूते शतः प्रोक्तो विभूते विस्तरो मया ॥ ४७ ॥ यद्यत् विभूति मत्सत्त्व श्रीमद्भूति मेव वा ॥ त
त देवाय गच्छत्वं मम तेजो शसं भवं ॥ ४८ ॥ अथ वा वहु नै तेन कि ज्ञातेन तवा अर्जुन ॥ विष्णु भा ह मिदं
कृष्णं मेकांशेन स्थितो जगत् ॥ ४९ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता सुया विषय वृत्त विजाया योग शा
स्त्रे श्रीकृष्ण अर्जुन सभादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ अर्जुन उवाचः ॥
मदनुग्रहाय यरुमंगल्य मध्यात्म सांगितम् ॥ यस्तु योक्तं वचस्तेन मोहो यं विजतो मम ॥ १ ॥

रो विभूतियोग ति मिच्छे नै गरि कन बुद्ध ठेरे विचार गरि बुद्ध नाले कया हुं ह्यो यावत् जगत संसार
कन छोपि एक मेरा अंश ले यो स्थावर जंगमादि संसार ह्या को ति मि जान ॥ ४३ ॥ इति श्री भगव
द्गीता भाषायां ॥ १० ॥ पूर्वाध्याय विषे एक अंश ले मे ले जगत व्यापित गया को छ भनि
भगवान को आग्या भया को मुनि कन कला प्रकार ले व्या प्र हे छ भनि जाना को ईछा भया का
अर्जुन ले के रि विनि गर्दन ति मि ले मेरा उक्ता रगनी निमित्त नुन वा ले जगत ले युक्त भया को
ति मो आत्म को ऐश्वर्य ले युक्त भया को यो ज्ञान क हंदा ति वचन ले मेरा हृदय को अज्ञान
न छ भयो ॥ १ ॥ हे कमल यत्राक्ष ति मा प्रसाद ले संसार को उत्पत्त्या यस प्रकार ले ऊन्यार हे छ
प्रलय यनि यस प्रकार ले ऊन्यार हे छ भनि उवै थो कय नि मुसु तयाई को के ले ना शन हुन्या
महात्म्य यनि बुझा ॥ २ ॥ हे परमेश्वर जो निम्य ज्ञान ले निर्मल शुद्ध आत्मा कय नि मि
कन जज्ञा को तस्तो गरि निश्चय यमात्रां सांचोर हे छ यरुत तयाई को संपूर्ण ऐश्वर्य व

न तेन वराक्रमले युक्तभयाको वडोति मोसंसारै नयभयाको दिव्यशरीर साक्षात् ईश्वरनाउगयाको
विश्वरूपनयाईको दर्शनगर्तको वडोईछाछ दर्शनगराउनुहवन् ॥ १ ॥ हे प्रभोतिमि नोको
भेलेदेवनसकिछो भन्यायोगेश्वरयोगिका ईश्वरतिमि हे कृष्णतिमो वडाछे श्रव्यले युक्तभया
को केलेनाशन कुन्यायलोतयाईको नयमलाई दर्शनगराउनुहवन् ॥ ४ ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ अमुनले विनिगयाको देखिकन वडातेजलेछे श्रव्यले युक्तभयाको आकृती नय
कनदेखाऊन ईछाभयाको भगवान आगागछन हेयार्थ मेरा अनेक प्रकारभयाका सयह
जाभन्दा अनेक नानातरहभयाका संसारमकिलेन देखियाका अनेक प्रकारका कर्माभ

भवाययोहिभूताना श्रुतो विस्तारो मया ॥ त्वतः कमलयनाक्षमहात्म्यं मायिवा व्ययम् ॥
२ ॥ स्वमेव दृष्टा त्वत्समहात्म्यं परमेश्वरं ॥ द्रष्टुमिच्छामि ते नयं भेश्वरं पुनोत्तम ॥ ३ ॥
मन्यसे यदि न ह्यकं मया दृष्टमिते प्रभो ॥ योगेश्वर ततो मे कं दर्शयामास यार्थयम् ॥ ४ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ पश्य मे यार्थं नयासि शतशोथ स ह्यश्वशः ॥ नाना विधानि दिव्यानि ना
नावर्णाकृतानि च ॥ ५ ॥ पश्यादित्या नृवमूतुद्रानाश्चिनो मकृतस्तथा ॥ वज्रनेदृष्टपूर्वाणि
पश्याश्चर्यानि भारत ॥ ६ ॥ ईहे कस्य जगत्कृष्ण यस्यादेश चराचर ॥ मम देह गुज केश
यनाय द्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥ ननु मा शक्यशे द्रष्टु मनेनेव सत्वशुभाः ॥ दिव्यं दधामि ते चक्षु यश्च मे योग
मेश्वरम् ॥ ८ ॥ संजय उवाच ॥ एवमुक्ता ततो राजन् महायोगेश्वरो हरिः ॥ दर्शयामास यार्थं

याका हस्तयादादिले युक्तभयाको मेरा सत्यकनहेर ॥ ५ ॥ हे भारत केवल मेरी शरीरमा वाहे सूर्य
कनहेर तसै आठ वसुकनहेर एगाह रुद्रकने अश्विनि कुमार उदैकन अरु यनियावत देवताछने
अधिकेलेन देखियाका वडा अश्रव्यसोना मेरा शरीरमा हेर ॥ ६ ॥ हे गुज केश यस मेरा शरीर
मास्थान जगमादि चराचरले युक्तभयाको यावत्संसार छन संपूर्ण येकछे उमाला गिरछाको हे
रतिमि अरु यानि जुन जुन वस्तु हेर्नाको ईछाछ त्यो सवै मेरा शरीरमा हेर ॥ ७ ॥ ईनेने नले हे कृष्ण
श्रीभगवानुवाच ॥ मानजदेयाका अर्जुन कन ईश्वरले आशागदछन् हे अर्जुन विश्वरूपभयाको
मेरा यमवडातेजले युक्तभयाको पुन शरीरकन तिमा जंगलने बले देखन सक्याछेन ईनेत्र
लेतिमि चर्ग मध्ये यातात व्याघ्रगरिछाको मेरा जोग कनहेर ॥ ८ ॥ संजय जोछन धृतराष्ट्र
छे उकह छन् हे राजन् धृतराष्ट्र भगवानले अर्जुनलाई बोलेकन आ कुविश्वरूप देखाई
ति वडा जोगिका ईश्वर हरि जोछन् हजारो सूर्य उदायाजस्तो देखिया ॥ ९ ॥ ति अर्जुन यानि
भगवानको विश्वरूपकन कस्तो देखेछन् अनेक लवा गरियनि नशकाछे मुखभयाको तसै
अनेक अनेकनेत्रभयाका अनेक तरहेका अद्भुत आश्चर्य तमासा देखिया अनेक दिव्यग
हनादिले युक्तभयाका दिव्यभयाको तारा चन्द्र सूर्य अग्नि ईत्यादि गहनाभयाको दि
व्यशस्त्रधारण गयाको दिव्यशस्त्रभयाको वज्रशुदर्शन चक्र ईत्यादि अनेक शस्त्र उठा

याको ॥ १० ॥ मन्दागुप्यको- धाविजात फूलको अनेकाद्वयमानात गायाको दिव्य
 जलगायाको मुद्राचन्दनलगायाको सर्वथोकमा आश्चर्यमानुं शरीरमा देवि
 या बहिवस्तु आश्चर्यमानुभयाको देशवाट यनि शमयवाट यनि वस्तुवाट य
 नि अन्तयाई नसकनु दशोदिशामुषभयाको सर्वत्रदेवत्या भगवानकायसा
 तरहको चरुपकन अर्जुनले देखताभया ॥ ११ ॥ यदि आकाशमा हजारसूर्य
 यके वस्तुमा उदाउदायनि सूर्यप्रकाशगराउन्त्या कानियनि तस्को उज्यालो हेवे
 न तिवडो आत्ममयाका भगवानको शरीरको कानितेस्कानि मन्दायनि उज्यालो

य परमसूर्यमैश्वरम् ॥ ८ ॥ अनेकवक्त्रनयना अनेकाङ्गदृशनम् ॥ अनेक
 दिव्याभरणम् दिवान्येकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ दिव्यमाल्यावर्धर दिव्यगन्धान
 लेपनम् ॥ सर्वस्विये मयदेवं ननं विश्वतो मुखम् ॥ ११ ॥ दिवि सूर्ये शहस्रस्य
 भवेद्युगयुद्धिता ॥ यदि भाः शहसि साक्षाद्भासस्तस्य महत्तमा ॥ १२ ॥ त
 स्थैकलजगत्कृष्णं प्रविमक्तमनेकधा ॥ अवस्य देवदेवस्य शरीरि याशुवस्त
 धा ॥ १३ ॥ ततः सविस्मया विष्टो हृष्टो माधनञ्जय ॥ प्रणम्य शिरसा देवं क
 ताञ्जलिं भाषत ॥ १४ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ पश्यामि देवास्तव देवदेहे सर्वस्तिथा

ताहवेन उज्जो देव नलाग्या ॥ १२ ॥ देवताकायनि देवता ति भगवानका शरीरमा जावत दे
 वतापितरमतवले गरिकन भगवानले भिन्न भिन्न गरिवाडियाको भगवानका शरीरमा
 येकगठामे वस्याको समा अर्जुनले देखनलाग्या ॥ १३ ॥ हे धृतराष्ट्र भगवानको त्यो वि
 धत्पदेषिकन वडो आश्चर्यभयाका शरीर उयनि सुमिमेकन उजाकायसाधन अय
 जोहन् भगवानकन शरीरले प्रणाम गरि अजलिवाछिविनि गर्हन् ॥ १४ ॥ अर्जुन उवाच
 अर्जुनले भगवानहे उ विनिगयाको संजय जोहन् धृतराष्ट्र कन कहं हन् अर्जुनले
 क्या विनि गर्हन् भया हे देवति आ शरीरमा इन्द्रादियावत देवता हन् यनि देखहुस्था
 बाजगसमाभूत प्राणिले युक्तभयाको संसारकन यनि ति मे शरीरमा देखहु वंछा
 कन कस्तजगत समाकारामि पृथिवि चरुयजोकमलहते समावस्याका वंछाकन
 पनि ति मे शरीरमा देखहु जावतारि विपानि ति मे शरीरमा देखहु वाल मुके आदि

भयाका जावत सम्यक् न सवेति मा शरीरमा देवदु ॥ १५ ॥ विश्वेश्वर अनेक हजा बाहु
भयाको तले अनेक पेट भयाको अनेक मुख भयाको अनेक नेत्र भयाको जनातिर
हेयो अनपाई नसकनु स्वयं यस्तो शरीर भयाको तिम्रो आदिय निदेखन स
क्या भयेन अतः पतिदेखन सक्या भयेन तिम्रो माह्य पति कुन हो देखन सके
न केवल तिम्रो विश्व रूप मात्र देखु ॥ १६ ॥ हे कृष्ण तिमिक न कस्तो देखु
भयारत लेवनायाको मुकुट लायाको येक हात मा गडालियाका अर्को हा
त मा सुदर्शन चक्र लियाका तेजे को मात्र थुप्रो भयाका कमल्यो शरीर भया
दशै दिशातिर ऊँचा लो गगनाका जनातिर देख्यो हेरिन सकनु बल्याका अग्नि जस्तो

था भूत विशेष मंद्यानु ॥ ब्रह्मरामि संकमला मनस्य मुखि स्वसर्वान् गुरगश्च दिव्या
नु ॥ १५ ॥ अनेक बाहु दृष्ट कनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतानन्तर्यं ॥ नान्न मध्यं न पुनस्त
वादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूपम् ॥ १६ ॥ किरीटं गदितं चक्रिणं च तेजो राशिं स
र्वतो दिशि मंलम् ॥ पश्यामि त्वां दुर्निष्टं ह्रस्वममलादिपानलार्कदिति मप्रमेयम् ॥ १७ ॥
त्वमक्षरं परमवेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानं ॥ त्वमव्ययमाचनधर्मगोपाम
ना तनस्त्वयुखो मतो मे ॥ १८ ॥ अनादि मध्यान मनन विर्य मनन बाहुं शशि सूर्ये नेत्रम् ॥

हुई प्रहर का मूर्ये जस्तो कान्ति भयाको फलाना जस्ता प्रमान पतिके हिन भयाको यज्ञात
तिमिक न देखु हे कृष्ण ॥ १७ ॥ हे भगवान जो तं मोक्ष देखिकन मैले यो विचार गयां
तिमिक ज्ञा रक्षा हो भया मोक्ष को ईछा हुन्या ले मात्र तिमिक न फलान भक्ति जानि सक
नु केहे नाशन हुन्या अक्षर भयाका तिमिर ह्या हो यम संसार मा वडा आश्रय तिमिर ह्या
हो केहे न सकिन्या निचे रहन्या यज्ञा धर्म को पालना गर्या रक्षा हो सनातन पुन
व पति तिमिर ह्या हो केहे केहिन हुन्या सधै वरोवर रहन्या रक्षा हो भया मेरा बुद्धि माता
यस्तो ठहयो ॥ १८ ॥ हे भगवान तिमिक ज्ञा देख्यो भया आदिय निन भयाको माह्य पति न
भयाको अतः पति न भयाको वर परमाह केहिन भयाको अनपाई नसकनु वडो
पराक्रम भयाको संघायाई नसकनु ठेरे वाहु भयाका चन्द्र सूर्ये ईहुई नेत्र भयाको
वडो ज्वाला भयाको अग्नि मुख भयाका शरीर का तेज ले विश्व संसार कन वत उन्नाय

मातिमिकवसदेष्टु ॥१८॥ हे महात्मन आकाशकोर पृथिवीको मातृ चतुर्दिक्ष जतिह संपूर्ण
मापतिमिले गयाको देखिह नतिदिशाह सवेति मिले व्याघ्र गयाको हत मोच झूत हेरित मकेन
उग्ररूप देखिकन योतीनतु लोक बडो वेठ भयाको अहेना श होई जाला भयाज सो लाह ॥२०॥
ईयुगुर्गत यार भयाका हे भगवान जावत वीर हनु हनति मिले पृथिवीको भार उतार भनि अवतार
निदा देवता हनु ह्याहनु संपूर्ण तिमा शरिमात्र जसा देव दु को हिवीर हनु ता बडो हने
युक्त भयाका अजलि वाढिकन विनिगहन राखन मारनु भगवान भनि विनिगहन भुगुआ
दि गयाका म विहनु कपिल मुनि आदि गयाका मिह हनु के हिवि घु पारि ससार को नाश होना
भनाति मित्र बडो दया भयाका सज्जि भनि संगन गहन ति मो ना उ भयाति मिले गयाको किर्ति

पश्यामि चादि प्रकृतामवक्तं स्वतेजसा विश्वमिदं त यत्नम् ॥१८॥ द्यावा पृथिवी यो रिद मन रं हि
व्याप्तव्यै केन दिशश्च सर्वाः ॥ दृष्टा दूतं ह्यमुग्रं तमन लोकत्रयं न द्राधितं महात्मना ॥२०॥
अमिहिवां मूरसंघा विशन्तिः केचिद्दिता शंजलि नो गृणन्ति ॥ स्वस्ति सुक्ता महर्षिभिर्दुस
पास्तु वन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥२१॥ रुद्रादि सार्वभौमो देव सार्वभौम विश्वेश्वरो मरुतश्चो
भयाश्च ॥ गन्धर्वयक्षासुरमिदुसंघा विशन्ति चां विस्मिता श्वेव सर्वे ॥२२॥ रूपं महते वज्रव
क्तनेत्रं महाबाहो वज्रवाजं हयादं ॥ बहुदरं बहुदंष्ट्रा करणं दृष्टानोका प्रव्यथितास्तथाहं ॥२३॥

भयाका म्त्रोत्र लेति मो मुनि गहन ॥२१॥ शंकर आदि भया सगा हनु इ भया वाह आदि सभया
आथ वसुदेवता भया साधि देवता वाह भया विश्व देवता ते ह भया अश्वि नि कुमार उई भया वा
युदेवता उतं यचा सभया पितर देवता भया हा हा हनु आदि गयाका गन्धर्व हनु भया कुवेर
दि भया यक्ष देवता भया बलि विरोचन आदि दे स हनु भया कपिल मुनि आदि मिह हनु भया
ई संपूर्ण जति हनु बडो आश्चर्ये मानेति मिकन हेर्द हनु ॥२२॥ कस्तो छु आश्चर्ये मान्द
भनेला सुन हे महाबाहो ति मो अनेक मुख भयाको अनेक नेत्र भयाको ठे है वाह भयाको ठे
रे ति घ्रा भयाको हारां पाव भयाको ठे है येठ भयाको ठे है हा भे कन उ लायो नक देखिया
को ति मो स्वरूप देखिकन लोक जावत हनु सर्वे ले वेठ या उहनु तसो मयनि उलो का पत ह
देवि भुति मिकन यत्तो देखु र मेरो चित्र वार वा चंचल भे उ उ उ कस्तो देख हनु भनेला
आकास संमज्जाला गुण्यको अनेक वर्ण भयाका तेज गुण भयाको मुख भयाका वल्गु अ

निक ज्वाला जलो नेत्र मया को यत्नातिमिकन देवता धैर्ये ऊन मात्तन ॥ २३ ॥ दिदेवे मय
नोति शरीर देवता धैर्ये ऊन मात्तन कस्तो शरीर ज्वाले दरला गो भै केन प्रलय
काल का अति जस्तोति मो अनेक मुख देवता पूर्व दिशा दिगारि चार दिशा जान
सक त्या भयेन मुख पाति या उत्या भयेन हे जगं निवास संसार काति माशु स्था
नति मिले रक्षा गर ॥ २४ ॥ हे कृष्ण दुर्योधन प्रभीति धृतराष्ट्र का पुत्र हन्यति
संपूर्ण वीर हन्य पले राजा हन्युक्त भया का पुत्र पुत्र भया कर्ण भया हा मात फ
का धृष्ट दुष्ट आदि भया का संपूर्ण वीर माका धैर्य हन्ये सहित भै कन इचोडे

न भय संदि प्रमने कर्ण व्याघ्रान नंदि प्रविशाल नेत्र ॥ दृष्टा हिता प्रव्यथितं तरा
मा कति ना बिदामि समं विद्वो ॥ २४ ॥ दंष्ट्रा करालानि च ते मुखानि दृष्टे व काला
न च सन्निभानि ॥ दिशो न ते जानल भेच सम प्रसीद देवेश जगं निवास ॥ २५ ॥ धृ
तराष्ट्र मय पुत्रा सर्वे सहे वा वनिया ल सद्यै ॥ भीष्म द्रोणाः मुत पुत्र ज्ञाथो गे महा
स्मदीये रपियो ध मुर्ये ॥ २६ ॥ वक्राणि ते त्वर माना विशानि दंष्ट्रा करालानि
भयानकानि ॥ केचिद्रिलग्ना दशन नरैश्च शृष्ट्यपने चूर्णिते कृत मागे ॥
२७ ॥ यथानदीनां बहवो बवेगा समुद्र मेवाभि मुवाद्रवन्ति ॥ तथा तवामी नर लो

ति श्रे शरीर मायस्तद्धन ॥ २५ ॥ कल्प कार लेयस्तु न भनोला मुत हे श्री कृष्णाति
मिह वडा वडा चाडे भै कन ज्वाले दरला गो भै कन वाई या काति मा भूष
मायस्तद्धन ति मा मुख माय ध्यानि वीर हन्य कपाल पिठिया काति मा उांत
का अना माय सिकन अट्क्या को देखि ह् जंत का हि प्रमा मा मुख या जस्तो
भै ला गि ह्या को ह् जा वत न दिक जल जति ह् चाडे समुद्र मा पुगी भनि द
उर्द ह् र समुद्र माय ल्द ह् तस्ते गति मिषयिता मह आदि मया का वीर
ह् वल्दो अति जस्तो उज्वाला मुख मायस्तद्धन ॥ २६ ॥ फेरि सुन ह् व स हे
श्री कृष्ण जस्तो वल्दो अति मा भनी निमित्त कीलयत ग ह् चाडे आउने

हुंमिदं गच्छन् तस्मै लोक संसा का प्राणि हन् चाउं गारि मर्ता लाई आया का चाउं त
 वा मूष माय द्धन् ॥ २७ ॥ हे विष्णो तिमि वन्दो अतिजस्ता ह्जारों मूष ले द
 क्षी दिशा देवि संपूर्ण प्राणि हन् तिमि मा अर्त कन ड ए उर्या हन् कन ति दे नि
 ले गछौं तिं प्रा ते जले व डो सहित सकनाराय ले यो संसा संपूर्ण ता उर्यु म
 मा पाक न द्धन् ॥ २८ ॥ हे देव वा देवता मा का वडा तिमि हे कृष्ण व डो उग्र दूय म
 या का तिमि म लाई आशा ग ए हे नि म कू ड ए ला द्यो यो श ए भया का तिमि लाई
 कवी ए विशा न्तिक का राय भि विज्य लं ति ॥ २९ ॥ यथा प्रादि प्रज्वलनं यतं गा वि
 शान्ति नाशाय समृद्ध वेगा ॥ तथैव नाशाय विशान्ति लोका स्रवायिव काणि
 समृद्ध वेगा ॥ ३० ॥ ले लि ह्य ग्रसमान समना लोकान् समस्तान् वदनं ज्वलाद्रि ॥ ते
 जो भिरा पु र्य जगत्स मग्रं भासस्त वोशा प्रतयंति विष्णो ॥ ३० ॥ आद्या हि मे को
 भवानुग्रह प न मोक्ष देवेश बल प्रसीद ॥ विज्ञान मिहामि भवं न माघ्नहि
 प्रजारा मि त म प्रहृति मू ॥ ३१ ॥ श्री भागवानुवाच ॥ ॥ कालोऽप्यि लोक क्षय क
 ष्ट दृष्टा लोकान् समाहर्तु मिह प्रहृत् ॥ कृते पितृ तन भविष्यन्ति सर्वे एव स्थि
 ता प्रपन्निके सुयोधा ॥ ३२ ॥ तस्मान् च मुनि ह्यय शो न भव्य जिवा शनु भुक्ष्व रज्यं
 न मन्कार ह् म लाई रक्षा ग र म जो छु पे न्हे ति मि लाई जां ला को ई छा ग छु क्या नि
 मि त भ ने ला तिं प्रा इ अ ने क चेष्टा वु ह् न स क न्या भये त ॥ ३३ ॥ श्री भागवानुवाच
 ॥ ॥ अर्जुन ले ग न्या को वि त्ति सु न क न भ ग वा न ले आ ग्या ग छ्द न सु न हे अर्जुन य स
 लोक संसा को ना श ग न्या काल भ न्या को म कूं मे ले य स संश म का वी ए ह् कू को ना
 श ग न्या को त न्या भया को प्र क ट मे क न व ड्द छु य स ए ए भू मि मा यु द्ध ग र्
 तया मे क न व डो लिया का वी ए ह् न ज ति ह् न मि श्र डो ए दे वि ति मि लाई सं का
 छ्द संपूर्ण वी ए ह् न ति मि छ्द ड को हि कू न्या छ्द न स वे तं प्रा व स मा य न्या ह् ॥ ३४ ॥
 हे सव्य मा न्ति नु उ वे हा त ले व रो व र श स्त्रा स्त्र ज ला उ न्या ति मि हे अर्जुन त स र्ध उ ठ

निमि युद्ध गर संग्राम मावीर हनु कन जितनु जोछ जस लेउ सपूर्ण शत्रु नि
निकत धत धान्य पूर्ण भया कारण्य को सुख भोग गए नडाई गर्न तया
भया का जति वीर हनु छन तिसवै मैले अछुउं माहि दिय का छुनु ति
नि अर्जुन ले माया था भन्या कारण मा बहो ॥ ३१ ॥ दुर्योधन
हनु जित छंकी हामि जित छो भन्या मन्दे हनु राख मन्दे हनु न हे अर्जुन
क्या निमित्त भनोला सुव हे अर्जुन दोषा चाये निषायता महजय द्र

शश्वत् ॥ मयेव ते निहता पुर्वमेव निमित्तमात्रं भवसम्यक्साधित् ॥
३३ ॥ शेषां च भिक्षुं च जयप्रथमं कर्णतथा न्यायवियोधवीरान् ॥ म
या हतास्त्वजहिमाव्यतिष्ठायुद्धे जेतासि ह्येवमप्यतात् ॥ ३४ ॥ संज
युर्वाच ॥ एतद्वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वैद्यमानकिटिरी ॥ न
मस्कृत्वा भूयवाहकधर्मसगद्गतं भीतभितप्रणाम्य ॥ ३५ ॥ अर्जुन उवा
च ॥ स्थाने ह्यधिके शतवप्रकीर्त्तया जगत्प्रहृष्येत्यनुज्यते ॥ रक्षा

॥ राजा कर्ण भया श्रुयति यावत्तदी हृत्कन मेले मादिदिया का छु
 तिसंपूर्ण कनति सिने जित छे उति हृत्कन न भन्या छु कतिन राख
 उठ युद्ध गाम्पूर्ण शत्रु कन जित्या छे ॥ ३१ ॥ संजय उवाच ॥ संज
 यले कहंछन् हे महा राज धृतराष्ट्र भगवानले बोल्या का वचन सुनि
 कन अर्जुन जो छन जन्कन किहि टी भन्छन् तियनि अंजलि वाठिक
 नवांवा नमस्कार गदें वडो दामानिकन प्रणाम गा विचन क
 मा उदे विनिगर्छन् ॥ ३२ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ अर्जुन विनिगर्छन् हे मह
 विकेश जिंमो महात्म्य गणानुवाद अनेक यत्ना भया का कठहा सु
 नि संसा सुसिद्धं तिमो अर्जुन गुणानुवाद कहता कनहुनि

यावत्तुमिच्छतिमिलाईसमहदावजोपियारोमान्छनुरक्षसहतिमो
उलेदिशादिशामाभागछनुरकोहिसनिसुमपाउदेनकपितमुनिईया
दिभयाकामिद्वजावनुछनुरवांवातिमोनमस्कागर्दछनुरयोसवेयो
ग्यछनुरयत्तोतिमोमहात्म्यभनुमुनुगयाकोषुलिहवेनकोपियारो
मानेननुरतमोशत्रुभयताभयाकारक्षेयक्यानउलेवेनयत्तातिमिक
ननमस्कासवेगर्द॥२०॥हियत्तासवेभदावजआदमितिमिलाईहे
महात्मनुर्यानिसिन्नहुनिनाप्रणामगर्दकत्तातिमिहेगर्भमाभग

सिमीतानिविशोद्वान्तिमोनयशपतिवसिद्धसंधा॥२१॥कत्ताचतेन
नमेरुमहात्मनमृणियसेब्रह्मणोय्यादिकने॥अनन्तदेवेशजगन्नि
वासत्वमक्षांशदशनंपांयन॥२२॥त्वमादिदेवपुरुषपुराणत्वम
स्मादिश्वरपनिधानम्॥वेत्तामिवेत्तमचक्षुषामंत्वयाततवि
श्वमनन्तहृदय॥२३॥वायुर्येमोनिवहृणःशशंकप्रजापतिस्त्वं

वानछनुरऊनकनपनिउत्पन्नगरुडयाआदिकारणभयाकातिमि
कनसंसांलेक्याननमानोम्तिमिलाईसंदिष्टमिच्छनुरतिमोवादि
मुनिकनबुलिपियारोमानुयोग्यहोहेअनन्तदेवेशजगन्निवा
सकसेलेअनपाउनुनसकनादेवताकायतिप्रभुजगत्संसांका
त्पाततिमिवेदानशास्त्रमासत्यदार्थसत्यदार्थतिमिकाहिंयो
तनभंयाकोदेष्टुमुनुप्रभीतिइन्द्रियगोचरजतिछनुरअसभया
कोकोनेइन्द्रियपनिशास्त्रलेयानबुद्धिलेयनिनजान्याकोछ
अर्थतिभयाकोनभयाकोयदार्थयानतिमिहोभनिंश॥२४॥ह
अनन्तहायसपृथिकोपानिसिर्जनागर्वासवेभन्दायेहेकाति
मिसवेभन्दावजपुरुषतिमिकेलेनजन्मन्यानमर्न्यापुर्णनाति

मि. यत्त. लं. र्णविश्वसमा मा प्रलयकालमायति [हृन्मातिमिहेनरा
यन हेविश्वभानि सवेले जानिया कातिमियसे हो तिमिभनिकन
सवेले विचागा न बुद्धिस कन्या के हे यनि जानिन तस कन्याति
मि स कन संसार पेड मा भयाका पर मधामतिमि वे कण्ठ ख रूप
तिमिले यो स कन संसार व्यापित गार्या को छ ॥ ३८ ॥ हे भगवन्
वायु देवता पनिति होय मराज पनिति मि हो चन्द्र सूर्य पनिति

प्रपितामहश्च ॥ नमो नमस्तेस्तु महश्च कृत्स्न पुनश्च भूयो विनमो नम
स्ते ॥ ३९ ॥ नमः परमादृष्टं दृष्टं तस्ते नमः तस्ते सर्वत एव सर्व ॥ अत
न विर्यमिति विक्रमस्त्व सर्वसमाप्नोषिततो वि सर्व ॥ ४० ॥ सवेति
मत्वा प्रसभं यहु तं हे कृष्ण हे पाद्व हे सवेति ॥ अजान
ता महिमानत वेदं मया प्रसादात् प्रणयेन वापि ॥ ४१ ॥ यवाव हाहा

कश्यपादि प्रजायनिति मि हो चा मूख भयाका व्रहा पनिति मि हो
यज्ञा हजात् एकातिमिलाई मे हो नमस्कार छ फेरि वां वां मे हो
नमस्कार छ ॥ ४२ ॥ मा पछि वा यनि नमस्कार छ हे सर्व संपूर्ण
दिश मायनिति मिलाई नमस्कार छ हे अनन्त विर्ये जसति
प्रायश कम को कसेले अनयाई सकनु छैन. कडो यश कम भ
याकातिमि हे कृष्ण वडो सामर्थ भयाकातिमि यावत् जगत् सं
सा छ आते न पभे कनति मिले व्याघ्र ग मा को छ यसातिमि
त सर्व हो. ति मि देवि अर्को दे भउ मुनु समाउनु बोलनु याउनु
को ह छैन ॥ ४३ ॥ आ कुले अघि ग मा का अयराध स महि कर फे
रि विनिगईत्. हे श्री कृष्ण यसा विश्व कृत्यति हो माहि मान जो न्या

मेलेतकेवल यदुवशमाजन्मभयाको अरु ईयादवयस्तोतिमिलाई मानिकनकेवल
संगीथहराईकनचंचलचित्तभयाको वडोसियारोसंगी भनिकननुकारगारिहेभीक
धमकालेशरीरभयाका यादवगुवारकाकूलमाजन्मभयाकोतिमिहेसबेमेरे
साथितं भनिहेलागारिमेलेभन्याको वचनमाफगार ॥ ३८ ॥ हेभीकलातिमिसित
(उठाऊगामा सबेलेदेखनेमायनिजोनतेहिकनरुवागरियो सबेकुरामाहिइदावस्ता
सुन्दामायकेजगामावस्ता धानिवेर अमयनिअनेक अस्कार्ये गतिथे एतिमिलाई
नगनिकनसुवाचारनगरियाकोतिमोयोचित्ताईकननसकाविश्वन्यशरीरदेउमाफ

धर्मगमकृतासि विहारसूर्यासनभोजनेषु ॥ एकोथवाय्यसुतनसमक्षं तद्दक्षामयत्वा
महमप्रमेयम् ॥ ४१ ॥ पितामिलोकस्य चराचरस्य त्वमस्य विश्वस्य गुरुर्गिरियान् ॥ न त्व
ममस्य न्यधिककृतोन्या लोकत्रयस्य प्रतिमप्रभाव ॥ ४२ ॥ तस्मात्प्रणम्य

॥ पितेव पुत्रस्य सखेव सरस्य प्रियप्रियाया हसिदेव मोदुम् ॥ ४३ ॥
अदृष्टपूर्वत मवितोस्मि दृष्ट्वा भयेत्तव प्रव्यथितं मनो मे ॥ तदेव मे दर्शय देव न्य
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ ४४ ॥ किरीटीनं गदिनं चक्रिहस्तमिच्छामि तादृशं महं

मागछु क्षेमागारिवक्त्रनुहोला ॥ ४५ ॥ हे भगवन् यस्यावर जगमचराचर संसारक
नजन्माउत्प्या पितातिमिहो केवलजन्माउत्प्या मात्र होन संसारले पिताहेमान्याको
छ यमसंसारको गुरु भन्नायतिमिहो वडाभन्दायति वडोतिमिहो तिनेत्रिलोक
मातिमिभन्दाहुलावडोकोहिछैन फलानाजस्ताहो भनिउपमादिउतिनेत्रिलोकमा
छैन ॥ ४६ ॥ तस्यैह भगवन् योशरीरपृथ्विमायसारिकनतिमिलाई नमस्कार

गछु सबेकात्मासिमवेभन्दावडायस्तातिमिछे उमाफमागछुबिनिगछुमेराअ
परधजतिछु सबेक्षेमागारिवक्त्रनुहोला जसैपुत्रको अयराधपिताले महंछ
मित्रकोमित्रमहंछ मित्रको अयराधपुत्रले महंछ तसैगारिमेराअयराधह
हिवक्त्राजावस् ॥ ४७ ॥ हेदेव केनेनदेव्याको तिमोविश्वन्यशरीरदेविकनव

उषसिभन्ना मेरोमनभन्यादरले वडोव्यथायाउनलाग्यो हेदेवेश उदितमो

अधिको मनुष्य शरीर देखाई दर्शन दिव क्लृप्त हव सु हे जग निवास मेरो किंति नाग
मलाई रक्षा गरि वक्लु होला ॥ ४३ ॥ अत नृप देवा उभौ ला हे सह श्रवाहु हजार
बाहु भयाका तपाई हे श्री कृष्ण ईश्वर नाई मनुष्य गर ईक न धाया को न गाया को
किरीट हात मा गदा लिया को अर्का हात मा चक्र लिया को निश शरीर दर्शन गन
को मन मुवा ऊँ हरे वि श्व मूर्ति विश्व कृप धारणा गया का तपाई चार बाहु भया
का दां ब चक्र गडा पद्म हात मा लिया का स्व रूप धारणा गरि वक्लु होला ॥ ४४ ॥
॥ श्री भगवानुवाच ॥ अर्जुन ने उर ईक न विनि गया को मुनिक न भगवान आया

तथैव ॥ तेनैव रूपेण च नु भुजित सह श्रवाहो भव विश्व मूर्ति ॥ ४५ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ म
या प्रसन्ने न न वार्जुने द रूपं यद दर्शित मात्म योगात् ॥ तेजो मयं विश्व मनन माधय
मे त्व दं प न न दृष्ट पूर्व म् ॥ ४६ ॥ न वेद यज्ञा ध्यय नैर्त दानै न च क्रिया भि न त यो भि
रूपै ॥ एवं रूपं सक्य अहं लोके द्रुष्टुं त्व दत्ते न कुरु प्रवीर ॥ ४७ ॥ माति व्यथा मा
च विमूढ भावो दृष्ट्वा रूपं घोर मी दृष्टु मे द न ॥ अयेत भी प्रीत मना पुन त्वं त दे

गर्हन् हे अर्जुन ति मि देखि प्रसन्न भवार् मे ले आ कृता योग का समर्थ लौ ति मिलाई
यो विश्व रूप दर्शन दिवां कस्तो विश्व रूप कते न भया को वडो आश्चर्य मानु रूप भ
या को केवल तेज को पुज हजार सूर्य उदाया जसो सकल संसार काय के शरीर भया
को अन्न पाई न सकत सबे भन्या अधिको यो विश्व रूप ति मि देखि अर्क ले दर्शन
पाउ न्या छैन ति मि देखि मनुष्य जना ले दर्शन दिवां ॥ ४८ ॥ हे कुरु वीर कुरु वंशि
मा वज्र वीर ति मि हे अर्जुन ति मि भन्दा अर्को मोर रूप देखु यत्त मनुष्य नोक मा
को सकु छैन चा विदे य छ न्या ले य वि देखु सकु न्या छैन यज्ञ गन्य ले य नि देख
न सक्तेन अनेक अनेक दान गन्य ले य नि देखु सक्तेन अग्नि होत्रा दि क्रिया ग
न्य ले य नि देखु सकु न्या छैन चन्द्रायनादि अघो अघो न पस्या गन्य ले
य नि देखु सक्तेन यस्तो विश्व रूप ति मि ले देखो धन्य हो ॥ ४९ ॥ हे अर्जुन भला

मैजो-अघो-दलाग्यो-कयदेविकन-नडरु-तत्ता-मकन-देवि-वेव-व-भै-मू-
पनित-हो-द-स-पूर्ण-छाडि-दे-उ-पियारे-मन-गा-फेरि-मकन-ति-मिले-ह-जुने-
री-मे-रे-अघि-धियो-वसु-देव-का-छत्र-भया-को-उ-हिति-मो-संगी-मकन-देव-॥४७॥
संजय-उवाच-॥४८॥ संजय-जो-छत्र-त-रा-कु-कन-क-ह-छत्र-हे-महा-राज-धृतराष्ट्र-भ-
गवान्-ले-अर्जुन-कन-सति-वचन-वो-निकन-मनुष्य-को-मुन-छे-अवता-भया-को-
अधिको-आफना-स्वरूप-दे-वा-या-व-डो-आत्मा-भया-को-भगवान्-जो-छत्र-स-वै-
पियारे-मा-न्या-को-स्याम-वर्ण-भया-को-पह-लो-व-र-लगा-या-को-वन-माला-ले-मु-द-

व-से-सु-मि-दं-प्र-य-स्य-॥४९॥ संजय-उवाच-॥ इत्य-र्जुन-वसु-देव-स-थो-क्ता-शोकं-क-य-
दर्श्या-मा-म-भू-य-॥ आश्वास-या-मा-स-व-भी-त-मे-न-भु-व-यु-न-सो-म्य-व-पु-मा-हा-ता-
॥५०॥ अर्जुन-उवाच-॥ द-ष्टे-दं-मा-नु-षं-सु-यं-न-म-सो-म्य-ज-ना-द-नं-॥ इ-द-नि-मा-मि-
सं-द-तः-स-चे-ना-प्र-कृ-ति-ग-तः-॥५१॥ श्री-भगवान्-वाच-॥ सु-द-दर्श-मि-दं-सु-प-द-ष्ट-
वान-सि-य-म-म-॥ दे-वा-अ-व-स्य-सु-प-स्य-ति-स्यं-दर्श-न-कां-क्ष-तः-॥५२॥ ता-हं-वे-दे-
न-त-य-सा-त-दा-ने-व-न-चै-ज्य-या-॥ स-क्य-स-व-वि-धो-द-ष्टुं-द-ष्ट-वा-न-सि-मा-य-था-॥५३॥

र-शो-भा-या-या-को-को-सु-भ-म-शि-वा-या-को-स-क-ल-सं-सार-कन-आ-न-द-दि-न्या-शो-
म्य-श-रि-र-ग-र-ई-कन-द-र-ने-यु-क्त-भ-या-का-अ-र्जुन-कन-र-व-स्थ-वि-न-ग-र-अ-भि-म-
या-॥४९॥ अर्जुन-उवाच-॥ भगवान्-को-नो-श-रि-र-दे-विकन-द-र-सु-ग-या-का-अ-
र्जुन-वि-नि-ग-र्ह-न-हे-ज-ना-द-न-यो-न-पा-ई-को-मु-द-र-म-नु-ष्य-श-रि-र-दे-विकन-अ-
ने-स-चे-त-भ-या-वु-द्धि-प-नि-प्र-ग-ट-भ-यो-अ-धिके-ज-सो-म-भ-या-॥५०॥ श्री-भगवा-
न-वाच-॥ भगवान्-जो-छत्र-अ-र्जुन-ला-ई-प्री-ति-व-चन-ले-आ-ग्या-ग-रि-व-क्ष-म-यो-
हे-अ-र्जुन-सो-अ-न-न-हो-रि-स-क-नु-स्य-ति-मिले-दे-वो-इ-द-दि-दे-व-ता-ह-म-सो-
मे-रो-वि-श्व-स्य-म-धे-हे-न-को-ई-ध्या-ग-र्ह-न-॥५१॥ हे-अ-र्जुन-सो-मे-रा-स्य-कन-
अ-गु-य-जु-सा-म-अ-थ-व-वे-द-ले-प-नि-ते-सो-ग-रि-दे-व-न-स-क-सो-न-द-ज-सो-ग-रि-अ-ज-नि-
मिले-दे-व्या-हे-ग-रि-त-उ-ग्र-त-य-स्य-ले-प-नि-यु-धि-ज-नि-सु-व-र्ण-दि-दा-न-ले-प-नि-अ-

अमेधादियज्ञलेयनि यस्तोदेवनसक्तैर्नन् ॥ ५३ ॥ कस्यप्रकारलेतं प्राप्नोविश्वरूपदे
विहभनिस्त्वदौला सुनहे अर्जुन अर्कयदार्थतिरन्तिननगरि एकाग्रभक्तिमेमालगाउ
नाले अहसास्ववाट यनि मजानिन्या तत्त्वज्ञानलेनिश्चय आत्माकुनाले मलाइजा न
सकह हेनसकह मेरोशरीरमितसंगैहोइजा ॥ ॥ संपूर्णगीताकोजार्थह
सोतिसिकन कहहु सुनहे पाराडव यमसत्ता माजो मनुष्य मेरो निमित्त मात्र कर्म गह
जतिगमाको कर्म मैकन अर्पण गह उहिभगवान मात्र संख्यको गति अरु परा
र्थयेथह भनिकेवल मेरो शरीरमायहन् यम प्रकारको सेवन गया भगवानसुदृष्ट

भक्त्या त्वत्तन्मया सक्या अहमेव विधोर्जुन ॥ तानुदृष्टं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च यतय ॥
५४ ॥ सत्कर्म कृतं मत्परमो मद्रक्तः संगवर्जितः ॥ निर्वैर सर्वभूतेषु यः समा मेति
पाराडव ॥ ५५ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनीतामष्टकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ एवं सतत
उक्ता ये भक्तास्त्वंपर्ययाशते ॥ यथायक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥
१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मय्यर्पितमनो यमां नित्यमुक्त उपासते ॥ श्रद्धया पर्यो

ऊतान् भनि निश्चयगहि उहिमार्गमालागि निरंतर मेरो भक्तिजोगह सत्ता भन्याको
नाकमा उवाउत्ताहो भनिजानि वत पुत्रस्त्रियारिवाको यतिजो मायामोहिजो मे
रोचाकि गह यावत् भूत प्राणि हन् आकुविगारे गन्यामित यनि शत्रुभावजो
राखनेनन् त्यो मनुष्य मलाई याउह यत्कुरामा सन्देह देन ॥ ॥ इति श्रीभगवद्गीता
भावम्या ॥ ११ ॥ पूर्वध्यायमा मेरो कर्म गन्या मकन याउह भनिसगुणब्रह्मको उ
पासना श्रेष्ठ गहि वतायाको सप्रम अध्यायमा संपूर्णत्याग गहि ज्ञानका नाउमा
वाठिया गहि सत्सार तरिह भनि निर्गुण ब्रह्मको उपासना श्रेष्ठ गहि वतायाको
ऊनाले ईडुईमार्गमा कोन श्रेष्ठ रहेह तिजान्माको ईछाभ्याको अर्जुनजो ह
न् भगवान् देउ विनिगहन् हे भगवान् श्रेष्ठेति मिले कल्याको मार्ग ले कर्म
गहिया विश्वरूपको ध्यान गहि जो भक्त हन् हन् तिमिलाई संपूर्ण उपासिले

रहित दे
धता ग
ति अ
रूप मे
क्ति न ग
र्पन ग
हन् अ
ना गन

पेता
मरि
शाल
अव्य
मत्प

कन
प्रसा
सक
ना ॥
रमा
गि जो
त्यान
र्म मा
भनि
जोगि

हित देवना मुना कर्मन भया का जानि कर्म जावर छन संपूर्ण छति केवल बुद्धि ले जो आरा
धता गर्हन् दुई साकत कर गन्या वडो प्रसाद या उछन् आग्या गर ॥१॥ श्री भगवानुवाच ॥
ति अर्जुन का वचन सुने कन भगवान आग्या गर्हन् हे अर्जुन मे परमेश्वर मा केवल विश्व
रूप मेरा मूर्ति मान्या मन् तो मन देखि दुताई मसकल सन्सार काई श्वर कन एका ग्रभ
क्तिन गाई जुन जोगि हर कर्म मार्ग ले सेवन गर्हन् मेरा निमित्त कर्म गरि मे कन च
र्यत गर्हन् तिजोगि हर आस्तिक बुद्धि भया मेरो मत माला ग्या को थै छन् तिजोगि
हर आस्तिक बुद्धि भया का मलाई या उना कन जोग्य छन् ॥२॥ निर्गुण ब्रह्म को उपास
ना गन्या क्या निमित्त थै छ होई न भनोला मुन हे अर्जुन जुन जोगि हर संपूर्ण इन्द्रिय थै छि

पेता ते मे युक्त ते मे मता ॥२॥ ये त्वक्षर मति दे श्म मव्यक्त य यु पासते ॥ सर्वत्र ग
मरित्यं च कृतस्थ मवलं क्खं ॥३॥ संनियम्येन्द्रिय ग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ॥ ते
शान्तिं वन्ति मामेव सर्व भूतहिते रताः ॥४॥ त्वे शोधिकन र सेवा मये क्ता शक्त चे तसां ॥
त्रे व्या क्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्विरवाप्सते ॥५॥ ये सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य
मत्पराः ॥ अनन्ये नैव योगेन साध्या यत्त उपासते ॥६॥ तेषां महं स मुद्वर्त्ता मृत्सु संसार

कन आत्मा वस माली कन अनाउ भत्या का अक्षर ले कहिया को ये जो छ यलो छ भन्या
प्रसादन भया को आकास जस्यो सर्वत्र गुण्या को चित्त ले विचार गर्दी यति वहराई न
सकनु धुवा भिन्न आगे रह्यो गरि माया वस्या को कते न च लन्या सधे य के ना स रह
ना ॥३॥ ते स्माम कन संपूर्ण इन्द्रिय कन वस माल्याई कन सकल सन्सार कन वरोव
र मानि यो आकु हो यो विरानु हो भन्या बुद्धि न गरि निर्गुण ब्रह्म को उपासना गन्या जो
गि जो छन् ति यनि म कन या उछन् कस्तानि जोगि भनोला संपूर्ण भूत प्राणिको क
ल्याण गर्न बढिया मान्या ति यनि थै छन् ॥४॥ हे र परन्तु यम निर्गुण ब्रह्म का मा
र्ग मा दुःख वडा छन् उन हे अर्जुन ते व हे दान हे रिन्या समा उदा न समाई न्या वोला
भनि न सकनु एते छ भनि न सकनु यस्ता अथ क्त भगवान को उपासना गन्या
जोगि हर का वडा दुःख छन् ते स अथ क्त मार्ग माला ग्या का जोगि हर का आहुता शरी

रयति अर्कको जस्तो संपूर्ण शरीर मालु यन्मा कुनाले लाटा जस्तो काना जस्तो वज्र लाजस्तो
 संपूर्ण शरीर मया जस्तो गराउत यन्मा ले यस निमित्त निर्गुण ब्रह्म कि अव्यक्त गरि पाउनु
 सत्कार मा जन्म लिया काम नु व्यले वडा दुःख सित छ ॥ ५ ॥ सगुण ब्रह्म को उपासना गर्नात
 जह जैले मलाई पाउछ मुन हे अर्जुन जोगि हरु जावत गुमा का कर्म संपूर्ण सहि ईश्वर मा
 अर्पण गरि तै जान हे ईश्वर मेरो गति हरु छ स. हरु देवि वस्तु अर्को देव्या को हिन भन्या
 उद्दिगारि मेरा शरण मा पछि केवल मेरा विश्व रूप जानि येका प्रचित्त लगाई जो देव नु द
 जो मुन छ जो समार्नु छ जो बोलु छ जो धानु छ इत्यादि संपूर्ण ईश्वर हो भनि मेरो विश्व रूप
 ठहराई सत्कार माईश्वर देवि दोश्रो अर्को को हिन जानि मेरो ध्यान गछु ये सतर हले मगु

सागरा ॥ भवामिन चिरान्यार्थ मया वेशित चेतसा ॥ १ ॥ मय्येव मन आधत्स्व मयि उ
 द्विनिवेश्य ॥ निवशियसि मय्येव अध उर्द्ध्व न संशय ॥ ८ ॥ अथ चित्तं समाधातुं न शक्नो
 विमयि स्थिरम् ॥ अभ्यासयोगेन न तो मामिच्छा पुं धनं जयः ॥ ९ ॥ अभ्यासे य समर्थो सि
 मत्कर्म परमो भवः ॥ सदर्थं मयि कर्माणि कुर्वन्सीदृमवाप्स्यसि ॥ १० ॥ अथैतदप्य
 शक्नोमि कर्तुं मद्योगमास्थिताः ॥ सर्वकर्म फलत्यागं ततः कुर्यातात्मवान् ॥ ११ ॥

रा ब्रह्म को उपासना गर्नाति जोगि हरु जाई दुःख न गरि पाउछ ॥ ६ ॥ तेन प्रकार सित
 सगुण ब्रह्म को ध्यान गरि जोगर्मा जोगि हरु को मन ले युक्त भया का सत्कार मनु द देवि चा
 डे मर्द्धार गरि दिछु जन्म नु मुन छुताई दिछु कस्तो जोगि को उद्धार गछु भनोला चित्त मे
 ईश्वर मा उवाचा का कर्म मार्ग ले विश्व रूप को आराधना गर्ना हरु को कति विलम्ब न गरि
 मोक्ष गर उछु ॥ ७ ॥ हे अर्जुन यस्तो कुनाले तिमि जो हो यो कार्य गर्ना हो यो न गर्ना हो भ
 नि विचार गर्दा मात्र काम गर्ना जो मन छ मेईश्वर मा लग उ मलाई निश्चय ठहराया को तं प्रि
 उद्दिजो छ मेईश्वर मा उवाउता ह प्रात तिमि मरण भया पछि मे मा वलोला ति मोर ह त्या
 जग मेरो शरीर होला यस्मा सन्देह न मान ॥ ८ ॥ हे धनंजय यदि मेरा तेस विश्व रूप थ
 रिर मा चित्त लाई कतै न चल्या राखत लकि देन भन्या अभ्यास का योग ले गरि कन मला
 ई पाउता को ईछा गर कस प्रकार ले भनोला जव अन्ते चित्त गयो उल्लेख न मा चि
 त्त वेचि परमेश्वर लाई न मुग्धा को ठेरे देर भनो कति ये कयात क शरीर माला

पाऊनु
 तथास
 दसास
 निमित्त
 तिमिजे
 जाउला
 र्मगछु
 अर्धन

श्रेयोसि
 तर ॥ ५ ॥
 क्षति
 सम

अनेक
 भ्यास
 प्रयो
 कर्म
 ले पमि
 रात ले
 जोगि
 लाई द
 अहंका
 निक्षेप
 को अत

पाऊन भति बुद्धि ले फेरि फेरि मै ईश्वर साचित्त लग उन्मा ग ते स अभ्यास ले मै ईश्वर साचि
तथा स न स कोला ॥८॥ हे अर्जुन अभ्यास गर्त पनि स की त भन्ना मै ईश्वर को कर्म गर वे
द सा स ले व ना या को ध्यान स न्या ज प पूजा त र्पण हो स व लि वे ध देव दाना दिक र्म मेरा
निमित्त गर केवल मै ज सा भै रा ग द्वेष छो डि मे रै शरण माया यस प्रकार सित कर्म ग न्या
ति मि जो हो स पूर्ण पात क ले न रहित भै चित्त शुद्ध भया का व ड मि दु क न पा उ ला मेरा गति मा
जा उ ला ॥१०॥ हे अर्जुन केवल मे रै शरण माया र्कर्म गर्त क छ भयो भन्ना ईश्वर का निमित्त क
र्म गर्त भन्ना चित्त ले निचे ते निच्य क पूजा ज श ईप्ता दिक र्म गरि फल को ईछान रा बि मै मा
अर्जुन गर पर पु ज तिक र्म गर्त छौ चित्त रि गाना मा रा वि व ड अ द्वा सित ग न्या गर म ला ई

श्रेयो सि ज्ञान म भ्या सा ड् ज्ञाना ध्यानं विशिष्यते ॥ ध्याना क र्म फल त्याग स्या गा छाति र न
त ॥११॥ अथ त्मा सर्व भूतानां मैत्रः कर्तु रा ठ व च ॥ निर्म मो नि र हं का र स म डुः ख सु ख
क्षति ॥१२॥ संतुष्ट स त तं यो नि य ता म्मा दृ ठ निश्च यः ॥ म र्म्या पित म नो बुद्धि यो मे भ
स म प्रियः ॥१४॥ य स्मा नो द्वि ज ते लो को लो का नो द्वि ज ते च य ॥ ह र्षा म र्ष भ्या द वे मु क्तो

अनेक मार्ग मा ऊन व डो हो भनौ ला सुन हे अर्जुन यो प दार्थ य से हो भनि विवेक न जानि अ
भ्यास ग न्यां भ का ज्ञान योग श्रेष्ठ छ ज्ञान भै क न पर मे श्वर को ध्यान भये न भया ते स ज्ञान को
प्रयोजन छैन ते स ज्ञान ले ध्यान ग या को श्रेष्ठ छ ते स ज्ञान ले यु क्त भ्या को ध्यान भ का य नि
क र्म फल त्याग गर्त श्रेष्ठ हो ज्ञान भै क न ध्यान गरि क र्म का फल मा ईछा रा यो भ न्या ज्ञान
ले पनि के हि क्क दे न अभ्यास ले ज्ञान भै क न ध्यान ग या का क र्म फल को ईछान रा यो
ज्ञान ले करी शुद्ध भया को जोगि जो छ सा तिक न पा उ ला ॥१२॥ यस प्रकार सित भक्ति ग न्या
जोगि का ग न्या धर्म कहं दु सुन हे अर्जुन स पूर्ण भूत प्राणि मा य के आत्मा देखि क न क से
मा ई छ वृजु न जोगि ग दें न स वै ला ई मि त्रे भ ति मा न्द व डो क्क यालु म म ता बुद्धि न भया को
अहं का न भया को दुः ख मा य नि लु ष मा य नि व रो व रै मा न्या आ क्क ह र्मा न्या क न प
नि क्षे मा ग न्या के हि या या य नि न पा या य नि स वै स तो व भै र ह न्या ति र ता मा ला ग र्हा
को अत क र्ण दृष्ट भया को म ला इ ति श्र य ठ ह र उ न्या बुद्धि भया को यो स मा दृ टिया

हो वस्तुभन्याकोतयेकपरमेश्वरमानहोभनि ६६ शानिसंपूर्णात्मागगरिमलाईनिश्चयमानिमे
 राशरगामायनाकोकामनाकोईछाकार्येकोसदेहरावन्नामनकरवाहिरकाप्रयंव
 मागयाकिबुद्धिकनयनिमैलाईअर्थरागयाकोयसप्रकारकोमेरोभक्तजोहोमेरोव
 डोपियारोऊँछु जममन्नामदेविडुनिआठहागदैन आयागयाकोवस्त्राउयाकोवठि
 यामादछ आऊलाईछटियावठियागयाकोयनि केहिवातिरमानेन वठियावस्तुमि
 त्यातपनि केहिहर्षमानेन नसहिसकन्याकार्येकसैले गरिदियोतपनिरीमगदैन
 कसैदेविपनिउरमानेन मुर्ताफिकिकतिनभयाकोयस्तोजोगिमेरोवडोपियारोऊँछु
 शरिरइन्द्रियपुत्रमित्रादिमापनिजुनजोगिकेहिअपेक्षाराखतैन केहिवस्तुकोपनिइ
 छाराखतैन सुखदेविबिरक्तभयाकोसदाभुविभैरहन्मानिअवाहिरसर्वत्रकन्यागाम

य. सवमेप्रियः ॥१५॥ अनपेक्षेमुचिर्दक्ष उदासीनोगतव्यथः ॥ सर्वरंभायरित्यागियो
 मेभक्तः समेप्रियः ॥१६॥ योनहव्यतिनछोष्टि नशेवतिनकाधाति ॥ शुभाशुभयरित्या
 गिभक्तिमानयः समेप्रियः ॥१७॥ समशत्रौवमित्रौवतथामानापमानयो ॥ शीतोष्ण
 सुखदुःखेषुसमः संगविवर्जितः ॥१८॥ सुत्यनिद्रासुतिमौनिसंतुष्टोयेनकेनचित् ॥

याकोपपित्रभैरहन्माजुनवेरमाजोकार्येआइपयो उसैक्षतमायोकार्येयसैभयो
 भनिजानिनिश्चयठहराईजानिकनगर्गवडोचतुस्तोछ कसैकोपनिपक्षपातजो
 गदैन यस्तोउदासिचित्तभयाकोकेहिकरादेविकनयतिनडराऊया ससाकासुख
 भोगकनईयादिदेवताकालोकपालकोअभिलाषयतिजोराखतैन त्योभक्तमेरो
 वडोपियारोछ ॥१६॥ वठियावस्तुमित्यातापनिबुसिनऊया छटियावस्तुमित्याता
 पनिबिअसिनऊया लोककेहिकराकोपतिनगर्गकेहिवस्तुकोपनिइछानराख
 न्या छटियावठियाडुवैथोककर्मत्यागगर्गजबभावभयाकोवडोभक्तिमानजो
 छ त्योजोगिमेरोवडोपियारोऊँछु ॥ शत्रुमित्रमावरोवरैमान्याजोडोगमिपनिव
 रोवरैमान्या डुखजुवपनिवरोवरैमान्या मानअपमानमापनिवरोवरैमान्याक

सैको संगन गन्या येकानै मार हन्या ॥ कसैने निदा गन्या यनि स्तुति गन्या यनि वरोवरो मान्या
 धिया वचन न बोलन्या मोन भै रहन्या पाया यनि न पाया यनि सतो ये मान्या कसैको आ
 भान मान्या स्थीर बुद्धि भयाको मछे उभक्ति भयाको जो मनुष्य छ सो मेरो वडो पियारो छ ॥
 ॥ हे चर्जुन जो योगि हर यो कहि आया का धर्मै रूप अमृत को जो सेवन गर्छ तू वडो श्रद्धारा वि
 कन केवल मेरै शरीर मा जो यक्ष तिम भक्त मो वडो पियारो छ तत्कारण यो कहि आया को
 धर्मै रूप अमृत कन मोक्ष हवल भन्या मनुष्य ने अवलगनु ॥ ॥ हे केशव सातौ अध्याय
 मा दुई प्रकार कि पृथक् वताउनु भयाको सो कह्यो हो प्रकृति भविभिन्न भिन्न प्रसन्न भन्ने
 सो कह्यो पुरुष हो क्षेत्र भन्या को क्या हो क्षेत्रज्ञ भन्या को क्या हो ज्ञान भन्या को क्या हो
 जानु पदार्थ कह्यो यो संपूर्ण जान्ना को ईछ म गर्छु आग्या गरि वक्षनु होला ॥ श्रीभ

अनिकेन स्थिति भक्ति मान्ये प्रियो नर ॥ १९ ॥ येनु धर्मा मृतमिदं यथोक्तं पश्य पासते ॥
 अथ दधाना मत्प्रेमा भक्तास्ते तेव मे प्रियः ॥ २० ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता सुपनिषत्सु
 ब्रह्मविज्ञानायोग शस्ये श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥
 चर्जुन उवाच ॥ प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रक्षेत्रज्ञमेव च ॥ एतद्वेदितुमिहामि ज्ञानं श्रेयं च के
 शवः ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ईदं शरीरं को ते य क्षेत्रमित्यविधीयते ॥ एतच्चो वेत्ति तं

गवानुवाच ॥ चर्जुन ले सो ध्याका कर को प्रसन्न रहितानि मित्त भावान ले आग्या गर्छु हे
 कौन्तेय पुन हस्त पादादि ले युक्त भयाको यो शरीर जो क्षेत्र भनिकहि छ जसो ध्यान आ
 दि भयाको अमृत रूप न कुन्या क्षेत्र भन्याको वेत ऊँ छ तसो यस शरीर वाट यनिकर्म
 का फल उत्पन्न ऊँ छ यस निमित्त यो शरीर यनि क्षेत्र भनिकहि छ शरीर देखि याव पश्ये
 तका यस शरीर कन भयो आफै ले विचार गरि भयो केवल क्षेत्र हो भनि जो जानु छ
 ते स कन क्षेत्र जान्ना मुनि हर क्षेत्र जानि भन्छ त्यो क्षेत्र भन्याको सारा पुरुष हो भनो
 ता पुन हे भारत ब्रह्मा आदि भयाका स्तंभ पर्यंत का जावत शरीर क्षेत्र मारवाको आ
 ति जन ले शरीर पुरुष जसो मानि न्या जीवात्मा भनि जस कन भन्छ ससार मान भयाको
 सारा उत्पन्न गर्ना यस्ता म कन क्षेत्र भनिकन जान क्षेत्र मोर हे छ क्षेत्र काल दारा ईर

साधु भक्तिजान्या जातिजोद्धर त्पोईश्वर को मत हो से सज्ञान ले सकछ देवनया उँछ ॥ १॥
 आठ प्रकार कि प्रकृति जो माया हो त्पो उरुब को सुबभोगति मित्र जन्मनामती लाई कछ माय
 गरि क्षेत्र सरूप शरीर धारणा गरि संसार व्यापछ भन्या अर्थ कहियो ते से को विसार कह
 छु सुन हे अर्जुन त्पो क्षेत्र जो शरीर छ जस रूप को छ जु नृधर्म का छ जु न इन्द्रिय कार ले पुन
 छ इन्द्रिय ले बला उँदा चल्छ क्षेत्र क्षत्रज्ञ को योग त्याग जंगमादि जो उत्पन्न ईछ त्पो
 क्षेत्र जयनि जज्ञो हो ते स्को स्वरूप यति को न हो चित्त ई न सकत ऐश्वर्य को प्रभाव
 ते साहित भया को त्पो प्रभाव यति जज्ञो छ यो सबे संक्षेप गरि कहंछु ॥ ॥ अहं लेय

प्राज्ञः क्षेत्रज्ञ इति तद्वितः ॥ २ ॥ क्षेत्रज्ञ चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारतः ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञ
 योजनं यत इ ज्ञानं मतं मम ॥ ३ ॥ त इ क्षेत्रज्ञ यच्च यादृक् स्वयं दि को रियत श्रयत ॥
 स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे भृगा ॥ ४ ॥ ऋषिभिर्वक्तुं प्रयागीतं ह्यहो भविष्यति
 वै पृथक् ॥ ब्रह्म क्षेत्रज्ञ यदे श्वैव हेतुमद्वि विनिश्चितैः ॥ ५ ॥ महाभूतान्यहंकारो बुद्धिर
 व्यक्तमेव च ॥ इन्द्रियाणि दसैकाच पंचचेन्द्रियगोचरा ॥ ६ ॥ ईशो देव मुखं सुखं

त्रियो विसावताया को छ कि ति मिमात्र भन्ने भनि लोभोला सुन हे अर्जुन वशिष्ठा
 दि ऋषि ह्मले यति ऋष्यु आदि भया का छ दले यति कल्पना ग मा का अनेक
 गरह को जो ब्रह्म सुत्र छत् ब्रह्म ज्ञान वताया को श्लोकादि पद ले क्षेत्रज्ञाभि मे ऊ भति
 निश्चय गरि वताया को छत् ॥ ५ ॥ क्षेत्र को स्वरूप कहंछु सुन हे अर्जुन पृथ्वि जल तेज
 वायु आकाश ई पंच महाभूत भया वडोऊ मयस्तोऊ भन्या अहंकार भया को बुद्धि
 भयो अव्यक्त भया को साक्षात्कार गगन सकला ज्ञान भयो ई पांच बुद्धि इन्द्रिय पां
 दे कर्मेन्द्रिय गरि ईद स मनस्से ते ये गाह इन्द्रिय शब्द रूप रस गन्ध स्पर्श ई पां
 च इन्द्रिय का गोचर भया ॥ ६ ॥ फेरि सुन हे अर्जुन आकलाई बढिया लागा का सु
 ख गता का ईछा भयो आकलाई घटिया गता कन त्याग गर्नु देव भयो शरीर ले
 आनंद मानु सुख भयो शरीर माय रिता पञ्च गुः ख भयो संपूर्ण शरीर इन्द्रिय मि

विरहज
 दिमाचे
 शिवात
 संपूर्ण
 ॥ १ ॥ य
 ते स्को
 सावाधा

संधात
 साक्षात्
 मनहं
 दानप्रहा

शिकोप
 निमल
 निमित्त
 सात्याग
 मनबुद्धि
 उद्धि ई
 फेरि सुन
 वभोग
 यत्ता
 द्रिय को

विरहज एकभयो संधादभयो ततायाका कलाम् मारहाका अग्निजस्तो शरीरकानो लो गरि
दिन्याचेतनाभयो संपूर्णशरीर इन्द्रियलाई परिश्रम पारिथात्रमा माविश ईकन अधि जस्तो
विशतस्ते स्वस्थगरा उन्माधृतिभयो पंचभूत देवि धृति ययेतका जति धर्म कहिया ई
संपूर्णक्षेत्रद्वयजु क्षेत्रयत्नेजु क्षेत्रका गुण ईने जनु संक्षेपले गरिति मिकन कहि सक्या
॥७॥ यसै क्षेत्र मारहाको क्षेत्र भन्दा भिन्न सोभावभयाको यका प्रवृद्धि ले जान जो क्षेत्र रक्ष
तेको स्वद्वय तेसै रखाका धर्म कहंहु सुनहे अर्जुन मको ऊँ रजो ऊँ उहि भगवान् भनि आफ्ना
सावाधान गर्नु भयो आफ्ने गन्याको धर्म यति गन्या भनि रन सकनु अधर्मभयो कसे प्रा

संधातश्चेतनाधृति ॥ एतद् क्षेत्र समासेन सविकार मुदा हतं ॥७॥ अमानि वमदं भित्र महि
साक्षात्तिरार्जवम् ॥ अत्राप्यापाशनं शौचं तथैवे मात्मा विनिग्रह ॥८॥ इन्द्रियाधेवु वैराग्य
मनहंकार एव च ॥ जन्म मृत्यु जरा व्याधि दुःख दोषानु दर्शनम् ॥९॥ अशक्तिरनभिषङ्ग उन्न
दान प्रहादिषु ॥ निश्चैव लगवि तत्त्व निष्ठानि शोय यतिषु ॥१०॥ मयि चानन्ययोगेन भक्ति

शिको पति को नैतरहले पीडन गर्नु अहिंसाभयो आफ्नु अपराध अकाले गयो भन्या प
निसहु क्षेत्राभयो सबै देविलो जो भैरहु आर्तवभयो ईश्वर कन पाउ त्याजान साधन
विमित्त गुको सेवा गर्नु भयो तिर्थजन का ध्याना दिले बाहिरको मल फालि राग दोष हि
सात्याग गरि मंत्रजपा दिले चित्त बुद्धि गर्नु उई प्रकार को सौचभयो केवल मोक्ष मार्ग मा
मन बुद्धि इन्द्रिय हुन लाई लगउनु उस देखिन छुटाउनु देयभयो जावत शरीर छ मन
उद्धि इन्द्रिय ले यनि आत्मे को विचार गरि आत्मे माला गिरह्या आत्मविनिग्रहभयो ॥८॥
हेरि सुनहे अर्जुन इन्द्रियका अर्थ भन्या का शय रूप रस गन्ध स्पर्श इत्यादि ई पांच सु
षभोग त्याग गर्नु वैराग्यभयो जावत शरीर छ मन बुद्धि इन्द्रिय ले मैले यति गन्या हानि
यत्ता ऊँ भन्या अहंकार छाडि दिनु भयो गर्भवास जुन जन्मनु येक दोषभयो संपूर्ण इ
न्द्रिय को सामर्थ हर ईकन उठे जु ते श्रो दोषभयो शरीर मा क फवाटा दि पीतले

रागिऊउचौठो दोषभयो भोषतुवा राजा प्रजादिवाट भयाकाडुःख पांचौ दोषभयो ई
पांचौ दोष आदिभयाका अरु पतिजावत ससारका दोष हत ई न क न वारवार मनु
दे देवते रहनु यो ससारत हाउं जाल सम ई संपूर्ण दोष मेरे शीर ना बित्ता हत
भनि मनुहुत भयो ॥ ५ ॥ फेरि सुन हे अर्जुन पुत्र भयो श्री भयो धा भयो दो लथ भयो
ईत्यादि कस्तुना अमक जग प्रीति छाडि दिनु भयो आकुलाई वडिया मेरो पुत्र रात्रो
मेरे सिव वडिया हामि जस्ता अरु को ह भन्या अभिमान गर्नु भयो आकुलाई वडि
या भयापति घटिया भयापनि सधै येक ताल रहनु भयो ॥ फेरि सुन हे अर्जु
न मै मर मे भर माये काग्र मै क न वडा भक्ति लेवलियो गरि स माधिलगाउनु भयो

रव्यभिचारिणि ॥ विभक्त देशसे विच मरति जन संसदि ॥ ११ ॥ अध्यात्म ज्ञान नि
त्यतः तत्त्वज्ञानार्थ दर्शनम् ॥ छत ज्ञान मिदं प्रोक्तं मद्भानं यततो यथा ॥ १२ ॥ जे
यमत प्रवक्ष्यामि यद्वाचा मृतमश्नुते ॥ अनादिमत्परं ब्रह्म न सतनाम उच्य
ते ॥ १३ ॥ सर्वतत्त्वानि पादंत सर्वतोक्षि शिरोमुखम् ॥ सर्वतः श्रुतिमध्वोके सर्व

ह कान्त य विजग गै मेरो आराधना गर्तानि मित रहनु वहु भयो ठेरै मनुष्य
स्त्रिपुरुष वस्याका जग मा जानु उत सित वहु उठुनि को न मानु अष्टति भ
यो ॥ ११ ॥ आत्मक न जाना ज्ञान मा सर्व दाता गिर हनु भयो तत्व भन्या को निश्च
य भगवान क न ठ हरा ई वं मा जान ते स ज्ञान को अर्थ जो ह ईश्वर हति भगवान
क न ति न्ये चित ले दे विर हनु भयो अमानि न्ये दे वि तत्व शार्थ दर्शन संमको
जति धर्म कहिया ईक्षेत्र का धर्म जग यति जो हत ज्ञान जग भनि कहियो
ई न भदा भि ई न को विवल्पाटो जति हत संपूर्ण अज्ञान जग संसासाज
मनु मनु अनेक डःख गराउत्ता ई न अज्ञान जग ॥ १२ ॥ ई कहि आया कउ
जिले का साधन हुं ह भनि लो धोला सुन हे अर्जुन अनेक पठि गत का से वा
गरि क न कहि आया काउ द्विजानि जान्या पछि जानु वाकि के हिर हनेत

सोक हं
उत्पन्न भ
को त्यो भ
तापनि स
रहा हनु
न छाडि क
सुं सुवो
या जलो दे

मादृत्पति
उतांगरा
स्थंवा

याको मा
छलाप
सर्वे वै वि
हर्षदाता
माभिनत
हाको प
जानु क
दिभमव
काजोति
आवाव

सो कहं छु कर्मनोला जुन जान्याय छि अमृत याई छ फेरि मनु पदेन जस्को आदि छैन
उत्पन्न भयाको जस्को को वर छैन जन्म मनु देव नु मनु समाउनु वोनु के दिन भया
को सो भगवान् असत कहिं छ तेस कन जान्याय छि जानु वांकि रह देन ॥१३॥ तस्को छ
ता पनि सदाथ जस्तो छु छि सुन हे पार्थ जुन भगवान् कालव हस्त पादादि अक्षयतु गि
रछा छन मुख पनि सर्वत्र पुष्पा का छन कान पनि सर्वत्र पुष्पा का छन यस सत्ता मा सर्व
त्र छाडि कन रछा को छ ॥ ॥ संपूर्ण इन्द्रिय कामन बुद्धि को गुण विचार गुण आठनु हेन
सु सुबोला सु सुबहु ख जानु इत्यादि गुण ले प्रकाश न्या इन्द्रिय को कार्य ले कोपि
या जलो देखिया संपूर्ण इन्द्रिय कहिन भयाको जावत वस्तु माला गिन रछा को सत्ता मरि

मादृत्पति छति ॥१४॥ सर्वेन्द्रिय गुणा भास सर्वेन्द्रिय विवर्जित म् ॥ असक्त सर्व भूतैव शि
र्षांग गुण भोक्तृ च ॥१५॥ वहिरंतश्च भूतानां मवरं वरमेव च ॥ सूक्ष्म च तदविशेषं ह
स्थं चातिकेचनत ॥१६॥ अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिदं चास्थितम् ॥ भूत भर्तृ च त

याको सत्वर जत मईति नै गुण भोग गर्था ॥१५॥ फेरि सुन हे सुर्जन भूत प्राणि का वाहिर
छला पर्षित शरीर मा रछा को शरीर पनि चैतन्य रूप सित वस्याको वर भयो स्थावर जंगमादि
सर्वे विचार गर्दा उहिय र वलै रछा को देखि न्या विचार गर्दा जल सर हले पुहाई विवेक गर्दा सानले
हेर्दा छान देखि न्या त्यो परब्रह्म सर्वत व्यापित छ ॥ ॥ ये हियर मे श्र जो छ याव भूत प्राणि
मा भिन्न न भै कन रछा को केवल आकास जस्तो गरि रछा को सर्वत्र शरीर मा वेगले भै र न
छा को पनि अर्को पहेला भगवान् को जस्तो शरीर देखि वेगल वस्याको छुडि न्या त्यो
जानु कस्तो भयाको सत्ता व छई पालना गर्था सत्ता उत्पन्न गर उन्मा ॥१७॥ य
दि भगवान् न जानि न्या रहै छ भनोला सुन हे अर्जुन आदि नाश गर्था सान लुप दीप
का जोति जस्तो छु जालो आत्मा गरि दिन्या ते हियर ब्रह्म भ भु अरु जो हात पाउ मुख
आवा कान नाक इत्यादि ले जानोला देखोला भगवान् जानु भयाका ठाउ पुगेला

देवोला समातोला भनिन सकन केवन बुद्धि लेमात्र जातु संपूर्ण प्राणिका हृद
 यमावस्थाको सो परमेश्वर यसरह लेबुहा ॥ १८ ॥ हे अर्जुन महाभूतान्तराकार
 देवि यत्क्षेत्र समासेन समक्षेत्रको स्वरूप कक्षा अमानिब भित्ति देवित
 त्वज्ञानार्थ दर्शन सम्पन्न कक्षा येत्यवक्षामि यद्वात्वा मृतमस्तु ते यस्य द
 क्षितमस्य मशेय जो भगवान् परब्रह्म होत्यो कक्षा क्षेत्र भयो ज्ञान भयो क्षेत्र
 यज्ञ जो भगवान् परब्रह्म भयो इतीन्द्र कन संक्षेप गरि कक्षा इतीन्द्र जो मेरो भ
 क्त ह सो हि मात्र जान्छु इतीन्द्र राजा को तसो गरि जो नियो भन्या मोक्ष
 ऊँह मेरो ईश्वर भाव ह सो याउँछ ॥ १९ ॥ फेरि अर्जुन हे अर्जुन यदविकारीय

ज्ञेयं प्रविष्टुं भवविष्टुं च ॥ १७ ॥ जोतिषामपि तज्जोतिस्तमसः परमुच्यते ॥
 ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानं गम्यं हृदि सर्वस्यावस्थितम् ॥ १८ ॥ इति क्षेत्रज्ञं तथा ज्ञानं ज्ञेयं
 योक्तुं समासतः ॥ मद्रक्तस्तद्विज्ञाय मद्रक्तो यो यय च ते ॥ १९ ॥ प्रकृतिं पुरुषं
 चैव विद्वानादीर्धमावपि ॥ विकारां सगुणान् चैव विद्वि प्रकृतिसंभवतु ॥ २० ॥ का

तश्च यत्तु जोकहि आयाथ्यो तेस्को विस्तारवता उहु प्रकृति भन्याको क्षेत्र नाउ
 गथा का ससार मारहा कि वडि माया पुरुष भन्याको ससार दुव्याको सकल
 ससार मानिब भेकन आत्मा मारहा को मय्या भन्या पर पुरुष उइ भे पुरुष
 अनादि भनि जान उत्पन्न भन्याका हुवै होईत यत्मा विकार भन्याको अघि
 मेक तर हथियो फेरि अर्को तर होई जान्या तियनि कृत भन्याका बुद्धि भयो म
 न भयो शरीर भयो दल इन्द्रिय भन्या इविकार कृत उः ख भयो मोह भयो श
 रीर का आकार भयो लामो छोटो ठुलो इत्यादि गुण कृत ति विकार गुण जो हुन
 प्रकृति वाट भन्याका हुन भनि जान ॥ २० ॥ कार्य भन्याको शरीर कारणा भन्याको

इन्द्रिय ईत
 भोग जांन्या
 जान्ना मा क
 हृद जो ह
 नि मा उ त्प न
 सत् यो नि त
 बादि गुण क
 मित ज न्म नि

व्ये कारण
 ति स्थो हि भ
 च भर्ता भो
 च गुरो मह
 मात्मना ॥

सै गज नादे
 र मा ईन्द्रि
 प्र कार्ये ग
 स्थिति ह
 को आत्मा
 रा ले मा
 य स शरीर
 र शित क्षे
 नि जो जान

इन्द्रिय ईतक न उत्पन्न गरा उन्हा. कारण प्रकृति हो. पुरुष क्षेत्रज्ञ जो ह्रस्व उः ख को
भोग जाना जान को कारण हो. ॥ पुरुष ताक से को संग ग दें न. क से गरि उः ख
जाना मा कारण ऊँ ह भनि सो धो ला मुन हे अर्जुन सत्ता को भोग गरा उन्हा क्षेत्रज्ञ
ह्रस्व जो ह्रस्व विज्ञाना उग्या कि. क्षेत्रज्ञ रूप माया मायसा ह. ते स माया भन्या कि प्रकृ
ति मा उत्पन्न भया उः ख उमादि गुण क न भोग गर्ह. यस भोग गर्ह पुरुष को देवता दिका
सत् योनि त हें हि उन्हा उः ख जो असत् योनि. इतर असत् दुवें योनि मा सत् रजत म उ
वादि गुण को संग भन्या को अभिलाष ते स अभिलाष को कारण ते हि पुरुष ऊँ ह ते ते नि
मित्त जन्म नि मात्र यनि के हिन जां न्या बाल ब जो ह्रस्व उदपी ना क न जान ह ॥ २२ ॥ माया को

ये कारण कचेतुः प्रकृति ह्यते ॥ पुरुष उः खाना भोक्तृ चे हेतु ह्यते ॥ २१ ॥ पुरुषः प्रकृ
ति स्थो हि भुक्ते प्रकृति जान गुणान् ॥ कारण गुण संगेत्य. सदस्यो निज म म सु ॥ २२ ॥ उग्र दृष्टानु मता
व भर्ता भोक्ता महेश्वर ॥ परमात्मेति वाच्युक्तो देहे स्मिं पुरुष पर ॥ २३ ॥ यस्य व वेति पुरुषः प्रकृति
वर्गो मह ॥ सर्वथा वर्तमाना यिन स भूयो भिजायते ॥ २४ ॥ ध्यानेनात्मनि पश्यति केचिदात्मान
मात्मना ॥ अन्ये साख्येन योगेन कर्मयोगेन वा परे ॥ २५ ॥ अन्ये तेव मनान्तः क्षूणा न्यभ

संग जनाले सत्ता मा भगवान् हे ह्रस्व भयाज सो ला ग्ध पर ज्ञ तो पुरुष सत्ता हि हो ईत यम शरी
र मा ईन्द्रिय को साक्षि शरीर ईन्द्रिय जो ह्रस्व आकाश का ये मा ला गि देवे. वागे देवा ईन्द्रिया आ
इकार्ये ग दें न त यनि गर्ह त तो देवि न्या यति भयो भन्या न अघा उन्हा आत्मा मा र ह्या कि तो
स्थिति ह्रस्व ते स्ते गरि क न भ रि दित्या भयो भन्या आत्मा मा र हिक न उः ख भोग गर्ह सत्ता
को आत्मा ज न्या ले स्वतंत्र हुना ले यनि महेश्वर उग्र प्रभु बोला या को लवे प्राणिका अत कर
गाले मात्र जानि ह्रस्व सकल सत्ता मा आत्मा स्व रूप भै र ह्या का ह्रस्व भनि परमात्मा कहिया को
यस शरीर मा पर पुरुष ते सो ह्रस्व ॥ २३ ॥ हे अर्जुन जो पुरुष हानिले कहि आया का यत प्रका
र शि त क्षेत्रज्ञ पुरुष क न जान ह्रस्व गुण ले सहित भया कि क्षेत्रज्ञा उग्या का प्रकृति क न प
नि जो जान ह्रस्व तो मनुष्य जस गत् प्रकार सित सत्ता मा र ह्या को ह्रस्व यनि मोक्ष ऊँ ह के र शरी

रधारिभैजसुनयदेन ॥ ॥ कर्मभेदलेईश्वरकोध्यानकहंहुनहेभारतकोहिजोगिहकर्म
 गवान्कोध्यानगर्दाआत्माकेआभेध्यातगर्दहत् असाध्ययोगमालायाकाजोगिहकर्म
 रजसमतीनगुणदेविपरपरसयाकानिमित्तआकासजस्तामपूराजगत्समाहोपिकनवस्या
 काईश्वरकोध्यानगर्दहत् अजोगिहकर्मयोगलेध्यानगर्दहत् घृतवत्जोह्वागिजो
 ह्वाहोमगर्वाजोह्वाहोमगर्वाकापउत्पाजोह्वासूरापरब्रह्महोयोसवेठोकभैकनजो
 कर्मजोह्वाहोमोहिरहोमनिध्यानगर्दहत् ॥२५॥ अजोगिहकर्म आत्माकनजस्तोकोत
 स्तोगरिहकर्मगुरुलेजसप्रकारमितध्यानवताईदियाकोमोहिनिश्रयमानिध्यान
 गर्दहत् तिजोगिहकर्मपनियसमुत्सृज्यसायाजाह्वा साक्षात्कारकारआत्मकनजाया

उपासते ॥ तेपिदातितान्येव मृत्पृथुतिपरपणा ॥२६॥ यावत्संजायतेकिंचित्सत्त्वस्था
 वरजंगम ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञेययोगात्तद्विभर्तव्यम ॥२७॥ समसर्वेषुभूतेषुतिष्ठत्तं पर
 मेश्वर ॥ विष्णुस्त्वविभक्तं यः पश्यति स पश्यति ॥२८॥ स यं पश्यंति सर्वत्र समवस्थि

कोमोक्षकसोगरिहुदोहोभनोलागुरुकाभन्याकोक्कनलुनितिश्रयमानियोगगर्दहत्
 मतभन्याकोवस्तुकोहिहैतुनवस्तुकोध्यानगर्नुभनिगुरुकोउपदेसहतेसवस्तुमामह
 देह्वायसनिमित्तआहुकोहिजान्याअर्कलेकहिदियाकाअनसालेयोगगर्वाह्वाप
 तिमलाईमाउह्वा ॥२६॥ ईध्यानमाकर्मकाध्यानकोविस्तारतेशावैठायंचौनित्त्र
 ध्यायमाकहियोध्यानयोगकोविस्तारहैठाअठोअध्यायमाकहियोअवतिमिलाई
 सारंययोगकोविस्तारकहंहुनहेअर्जुनयसससायास्थावाजगमादिवाचाया
 वत्तवत्ततेलकनभूतवर्षभक्षेत्रक्षेत्रज्ञकोसंयोगभैकनउत्पन्नभन्याकोजात ॥ ॥
 येकानआत्मकोध्यानकहंहुनहेअर्जुनजुनजोगिब्रह्मादिभन्याकायावत्तुप्रा
 णिमासर्वत्रकोवाभैकनवत्पाकाशरीरइंद्रियदेवियोसवेकोईश्वरब्रह्मादिभन्याको
 सत्ताविनासभन्यापनिनाशनहुन्याब्रह्मादिभन्याकोविनाशहुन्यावदार्थमापति
 विनासहुन्याभैतरह्याकायसाभगवान्कनध्यानमायसप्रकारमितदेवतह्वायोम

ताईदेवभन्याह
 कनदेवह्वा
 गतिकनजा
 नकमतरह
 तिपरमेश्वरा
 यादेविमात्र
 र्कलेहरितभ
 आत्मामारह
 तमीश्वर ॥
 सर्वशः ॥ य
 ति ॥ ततः
 शरीरस्थो
 वत्प्राणिके
 रिष्याको
 ह्वापरब्रह्म
 साकोसवं
 कनयकेले
 तत्वरजतमा
 नारयाकोह्वा
 शानात्रलिये
 सर्वत्रपुष्पाके
 देनकमोतिर

नाइ देव्या हो ॥ २८ ॥ हे अर्जुन सकल सत्त्वा मायावत भूत प्राणिमावरो वर्ग विवर्त्या काई श्वर माई
 कन देव छंद न्यो मनुष्य आत्मा ले आत्मकन माई न तलर्थ अहिंसा धर्म वडो ज्ञान ले न्यो मनुष्य परम
 गतिकन जान्छु ॥ ॥ सत्त्वा माया घटिया वडिया कर्म गन्या को देखि बरे निकोनाने को नलागि रहने
 न कस्त रहले वरो वर देवन भनि सो धोला सुन हे अर्जुन जोगि संपूर्णति रहने क्षत्र ना उग्या कि प्रक
 ति परमेश्वर कि माया देखि उत्पन्न भया का कृष्ण भनि गरिदा कर्म कन देव छया वा कर्म छन मा
 या देखि मात्र भया का देखि या पछि घटिया वडिया को हि भयेन न जलै आत्मकन परि पूर्ण क
 र्म ले हरि न भया को देखन्या जो गिछु न्यो देखने हो ॥ ३० ॥ यावत् भूत प्राणि कालो भाव जनि छ मे के
 आत्मा मारणा को शरीर भिन्न भिन्न हत पनि सो भाव्य के हो भनि जो देखत छ यम प्रकार सित या

त सीधर ॥ नहिन सत्त्वात्मनात्मानं ततो याति परां गति ॥ २९ ॥ प्रकृतेवैव कर्माणि क्रियमानानि
 सर्वशः ॥ ययश्च पतितथा मानं सकर्तारं स पश्यति ॥ ३० ॥ यदा भूत पृथग् भाव मेकस्थ मनुष्य
 ति ॥ ततः एकव विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा ॥ ३१ ॥ अनादिवालि गुणवात्परमात्मा यमव्यय ॥
 शरीरस्थो यिकौ तेन न करोति न लिप्यते ॥ ३२ ॥ यथा सर्वगतं सौक्ष्मादाकाशं तोयलिप्यते ॥

वर प्राणि को सो भाव येक देखन्या संन्यासि आत्मकन विस्तार वडो जगत्सत्त्वा संपूर्ण जगत् मा प्रग
 रिष्ठा को देखत छ सो भाव जो छ आत्मको गुण ज्ञान ले रति सत् रहले आत्मा देखन्या जो गि जो
 छ परब्रह्म हो ईजान्छु ॥ ॥ यद्यपि आत्मे को छत पनि अनेक शरीर भाव सत्ता को छत पनि स
 त्ता को संबंध हुनाले बालक मा भिने जुवान मा भिने छ द्रुमा भिने कर्म देखि छ कसो गरि श्वर
 कन य केले गरि कन भया को छै रण न्यो येक ना सत्ता को छ नाश हुदै न तलै यो परमात्मा जो छ
 तवर जत मादि गुण भया को छ गुण को नाश भया पनि ते स भगवान् को नाश हुदै न सबै का शरीर
 मारणा को छत पनि क्रियान भया का हुनाले शरीर ले गन्या को कर्म भगवान् मा लिपि छैन यो शरीर
 नामात्र लिपि छ ॥ ३२ ॥ कस्त रहले गन्या का धर्म लिपि छैन भनि सो धोला सुन हे अर्जुन यो आकाश
 सर्वत्र गुण को छत पनि अधीक अधीक छु छ छ समातिकन समाति न्या ज्ञान ले कते पनि लिपि
 छैन कसोति रयनि जो छैन तलै यो आत्मा पनि संपूर्ण शरीर मा छत पनि आकाश जस्ता सुक्ष्म ज

नाले कोने यदार्थलितपानि निन्देन ॥ ॥ हे भारत जसै यके सूर्यले पति योजगसंपूर्ण संसा
 उज्जालो तुल्य उडुं ये के वे मा सत्ता उज्जालो ही जने क्षत्रं परमात्मा जो सत्ता क्षे
 स्वल्पकन चेतन्य स्वल्पले यके वे चाडे उज्जालो गरुडि दु ॥ ३४ ॥ हे पार्थ क्षे
 का-त्रना कन-योक्षेत्र हे ह्योक्षेत्र र हे ह्य ई ई को यति वीच ह्य भनि साम्बुद्रिगु
 को उपदेश ली जुन जोगि जान्द ह्य भूत प्राणि मार ह्या कि प्रकृति भया माया कन त्याग गन
 जो जान्द ह्य ति जोगि ह्य पा मगति कन पा उडु ॥ ३५ ॥ इति श्री भगवत् गीता भाषायां ॥
 १३ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ कारणं गुणसंगोऽयं यत्प्रकृतौ भगवान्को कारणं गुणसंगो
 भवति कहियो पूर्व ध्याय मा कहिया को यत्कृतौ चार्थ फैला उताति नित्त च के ध्याय
 सर्वत्रावस्थितो देहे स पात्मानो यलि यते ॥ ३६ ॥ यथा प्रकाशय मेकः द्युत्तमं

॥ ३७ ॥ क्षे-क्षेत्रशयो रिव मंत्र तान चक्षु
 षाः ॥ भूत प्रकृति मोक्षं च ये विदुः याति ते परं ॥ ३८ ॥ इति श्री मद्भगवत् गीता उपनि
 षत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञाननिर्देशो नाम वि
 षोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ परंभूयः प्रवक्ष्यामि तानानां ज्ञानमुत्तमं ॥ य

सा भगवान् आग्यागर्हन् मुनहे अर्जुन हेरिय निज्ञान को यनिज्ञान यश पुजादि
 जान्मा ज्ञान भयो ते स ज्ञान लाई यनिज्ञान गरुड्या वडो उत मफल भया को यलो उ
 त मज्ञान मक हं ह्य जुन ज्ञान जानी ज्ञान भया का मुनि ह्य यम सत्ता दे वि परम ग
 तिकन जान्द ह्य ॥ १ ॥ जो ज्ञान पाई कन जो जोगि ह्य यलै ज्ञान मा लागिकन मे ए श
 रण मा पछ ह्य ति जोगि ह्य मेरे जला वरो वधर्म भया का साक्षा ईश्वरै भया का
 हेरि श्रुति कुंदा यनि सत्ता मा जन्म दे नन् प्रलय काल मा यनि व्यथा पा उ दे नन् ना
 श कुं दे नन् ॥ २ ॥ हे भारत मईश्वर कि योनि क्षेत्र स्वल्प मा पाज जो पुत्र व वत्सी क्षे
 यनि वृताई मा वडो ब्रह्म योनि मा क्षेत्रज्ञ जो महु संसा संपूर्ण पेडा कृपा कारण

भया को
 पक्षि मृ
 पर ब्रह्मे
 सत्ता म
 र वृत्त पु
 या वाधि
 क्षति वा
 द्वात्वा
 मागता
 रगर्भ
 मूर्त्तयः
 म ईति
 यह के
 सत्त ग
 स्तोत्र
 या को व
 निह व
 र जो शा

भयाको विर्ये धारणा गरुडं क्षेत्रस्य क्षेत्रविना उडु ॥३॥ हे को ते य देवता विरसुषे
पंक्ति मृग ईत्यादियोनि हस्तयादादिले सहित भयाका मूर्ति मान् प्राणि हस्तका वडि
परब्रह्मे काज जैसा योनि रूप भै कन रक्षा किछु परब्रह्म जोहु वीजरूप भै कन सकल
सत्त्वा मारखा कोहु ये सतिमित सत्त्वा को पिता बाबु भनु मैहु ॥४॥ साक्षात्प
रब्रह्म पुरुष परब्रह्म रूपमा आने स्ताति दुई वाट उत्पन्न भयाको जगत्सत्त्वा मा
या वाधि छ भनिसो धौला सुत हे महाबाहो सत्त्वरजतम गुण ईतीन गुण जोहु नै प्र
कृति वाट उत्पन्न भयाका छतु मेरि साया वाट पैडा भयाका छतु यद्यपि आत्म अ

इसात्त्वा सत्यः सर्वेषां सिद्धि मिता गता ॥१॥ सत्त्वा सत्य मम साधर्म्य
मागताः ॥ सगे पि नो य जायंते प्रलये न व्यथंति च ॥२॥ मम योनिर्मह द्रुल नूतलि
रगर्भं दधाम्यहं ॥ संभवः सर्व भूतानां ततो भवति भारत ॥३॥ सर्व योनिषु को ते य
मूर्तयः संभवन्ति याः ॥ तासां योनिर्मह द्रुल अहं वीज प्रदः पिता ॥४॥ सत्त्वरजस्त
म ईति गुणाः प्रकृति संभवाः ॥ निवर्धन्ति महाबाहो देहे देहिन मव्ययं ॥५॥ श्रीराम ॥

यह कैलो विनाशन कृत्या तथापि शरीर माति तीन गुण ले गारि वाधि छ ॥५॥
सत्त्व गुण को अर्थ कहंहु सुन हे अर्जुन ईतीन गुण मा सत्त्व गुण जोहु मृदु कज
सो अत्येता निर्मल हुनाले वडो प्रकासिछ अति ऊँचा लोछ उपद्रु पति केहि न भ
याको वडो सान रूप छ सान कन संग लागि कन वडो बुझि भँसा शानि कुन भ
निछ व्यञ्जक श्लाघा गर्ह ॥६॥ रजो गुण का स्व रूप कहंहु सुन हे को ते य गुण जोहु
रजो गुण जोहु तृधा संग लागि कन नयाया कस्तु या उता कन पियारो वस्तु वडो जल

परिवर्तननाकन शरीरमागवठा इदिमाहर्षवडाइदिमाभैकनशरीरमा
कर्मकोसीणिभैकन मैलेयतिकर्मगयां मेराजन्ताकसेलेगयाकोछैनभर
मोराजोगराजाना॥७॥ तमोगराकोस्वल्पकहंछु सुनहेअर्जुनहेभारतयस्तोतमो
ग्राकन अज्ञानदेविभयाकोजान अज्ञानकोसंगीभैकन यावत्प्राणिनाई
हीतगराउत्पा अहंकार अहंकारनिद्रालेगारिकनससारमाआत्माकनबाधद
छा॥८॥ ईतिकामून कार्येकोसामर्थहसोसंपूर्णगारिकहंछु सुनहेभारतस
त्वग्राजोछ शरीरमासुखजनाउछ सुखेगर्वाहोभत्यागराउछ जोग्राजोछक

तत्त्वसत्त्वतिर्मलत्वान् प्रकल्पकमनामय॥ सुखसंगेनवधाति ज्ञानसंगेनचान
ध॥९॥ जोरागात्मकविद्धि तुष्ठासंगममुद्रव॥ तन्निवधातिकोतेयकर्मस
गेनदेहिने॥१०॥ तमस्त्वज्ञानजविद्धि मोहनसर्वदेहिना॥ प्रमादालस्यनिद्राभिस्तं
त्रिवधातिभारत॥११॥ सत्वसुखेसंजयतिरजः कर्मनिभारत॥ ज्ञानमाहृत्यतु
तमः प्रमादेसंजयत्युत॥१२॥ रजस्तमश्चाभिभूय सत्वमवतिभारत॥ रजः सत्वन

मलगाउछु कर्मगराउत्पाहोभत्यागराउछ तमोग्राजोछज्ञानकनहोपिदिह
ज्यासतआयोसोगर्वा अज्ञानगराउछ॥१३॥ हेभारत जोग्रा तमोग्रा इमेति
कनसत्वग्रावडाउछ त्वोवद्याकोसत्वग्राजोछसुखगर्वाकोज्ञानिहुनाको
ईकागर्हसत्वग्रातमोग्राभैकन रजोग्राकनवडाउछ त्वोवद्याकोरजो
ग्रापनिआहूनाकर्मरागतदुष्मालाग्य फेरिसत्वग्रा जोग्राभैकनन
मोग्रावडाउछ वद्याकोतमोग्रापनिज्ञानहोइदहरषट्ठिया अज्ञानपदि
लागदछ मोहपरिकननभयाकोयातक गर्नुपनिवाटियादेवदछ॥१०॥ अ

वतीनग्रा
नेमात्रउ
सयाहान
अधिसया
नलाग्या
पाकोतुल
नपाया

मभैव तम
विद्यादि
तेविहृद
विहृदक

मासत्वग्रा
यादिमाले
आरंभगर्नु
गर्वा रजो
गर्वाईद
घतगर्वा
गर्वावजे
वद्यानाया
मापुगर्नु
हेअर्जुन श

वतीन गण कालिङ्ग कहें दुमुन हे अर्जुन. यस शरीर मा जानि स्क्कन्या जति धारुद्धर ता
 ने मात्र उत्पन्न भयाको सुख लेयनि नारायणको स्त्रोत्र शास्त्र का ज्ञान बतायाको अधि
 सया हत पनि पूजादि मा खुसि भया. गोरपनि देवतादिका मथ मा जानु गुह देव जानु
 अधिस या नेत्र पनि भगवान् को दर्शन गर्नु अधिस या परस्त्रिय द्रव्य देवत गा हो मा
 न लाग्या. कान पनि आत्म ज्ञान लुंता कत ईछा गर्न लाग्यो नाक पनि नारायण कन वहा
 याको तुलशि पत्र ईत्यादि सुघन ईछा गर्न लाग्यो छाला पनि भगवान् का मूर्ति सित लाग
 न पाया आनन्द कुंदाई भया भया. यस प्रकार ले जव संपूर्ण इन्द्रिय मा ज्ञान भयो शरीर

मभ्येव तमसत्वरजस्तथा ॥१०॥ सर्वदारेषु देहिस्मिन् प्रकाश उपजायते ॥ ज्ञानं यदा तदा
 विधादिष्टं सत्त्वमित्युत ॥११॥ लोभः प्रवृत्तिरारंभकर्मणामशमः स्थिरा ॥ रजस्येतानि जायं
 ते विद्वद्भरतर्वभ ॥१२॥ अप्रकाशो प्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव वा ॥ तमस्येतानि जायन्ते
 विद्वद्भरतर्वभ ॥१३॥ यदा सत्त्वे प्रवृत्तेः प्रलयं याति देहभृत् ॥ तदा तममिदं लोका न

मासत्त्वगण वडेछ भनि जानु ॥११॥ हे भरतर्वभ जव शरीर मा रजोगण वडेछ परस्त्रिय द्र
 वादि मा लोभ कुंछ. ज्ञान भया का चेष्टा गर्न यो काम गरियो. यो काम फेरि गर्नु पर्ने भया
 आरंभ गर्नु. हर्षित कुन्या प्रीति गर्न सबैले पाउँन्या वस्तु मा अहंका भन्दा मंदो लथ गरुं भनि अभिलाष
 गर्न रजोगण वड्या माईछ ॥१२॥ हे कस्तुन्दन. तमोगण वड्या प्राप्ति विवेक न जान्याईछ. रजस्को मान
 गर्न आईछ. उस्को अपमान जस्तो पुजा गर्न हो. उस्को पूजा न गर्न. नून कार्य पर्न हो. उस्का र्थ मालं
 घत गर्न बिडो अलसि भैरह्या आक्रमण पयाको करो वोलन्या. घटिया कर समातिकन. छिपि
 गर्न वडे मूठ भैरह्या यस्तो तमोगण वड्या माईछ ॥१३॥ हे देह भूत हे अर्जुन शरीर मा सत्त्वगण
 वड्या मा यदि मरणा भयो भया ब्रह्म ज्ञान भया का हिरण्यगर्भादि देवता का लोक मा वडिया राउ
 मा पुग्छन्. सत्त्वा मा जन्म लिदा पनि ब्रह्म ज्ञान जान्या त पश्चिका वडिया कूल मा जन्म लिन्छ ॥१४॥
 हे अर्जुन. शरीर मा रजोगण वड्या का वेला मा मरणा भयो भया. कर्म योग भया का ईत्यादि

देवता कालोक मारहि कन ससा माजमै ऊदा कर्मगर्वा का कूल माजमलिह शरीर मा
 त मोगुरा वव्या मा मरा भयो भन्या राक्षसादि कालोक मा पुगे कन ससा माजमनिषे
 र अज्ञानि मूठ योनि मा पशु दक्षि पक्षि आदि भया का कूल माजमलिह ॥ १५ ॥ गुरा
 का फल कलो दिह भनि सो धोला सुन हे अर्जुन सुकृति कर्म भन्या को सत्व गुरा ते को
 फल वजे सुख दिव्या अति नीर्मल सावि कै फल ऊह भनिक हंछु रजोगुरा का फल पति
 अज्ञाने हो भनि अनेक कर्म गरा उया डः ख फल हो भनिक हंछु तमोगुरा का फल
 पति अज्ञाने हो भनि सवे मुनि ह्म क हंछु ॥ १६ ॥ शरीर मा सत्व गुरा भेदिया रान

मलान् प्रति पद्यते ॥ १४ ॥ रजसि प्रलय गत्वा कर्मसंनिभ जायते ॥ तथा प्रलीन ह्यम
 सि मूठ योनि जायते ॥ १५ ॥ कर्मणः सुकृतस्यासुः सात्विकं निर्मलं फलं ॥ रजस
 सु फलं दुःख मज्ञातं तमसः फलं ॥ १६ ॥ सत्वात्स जायते ज्ञानं रजसो लोभ एव
 चा प्रमाद मो हो तमसो भवतो ज्ञान एव च ॥ १७ ॥ उर्ध्व गच्छति सत्वस्था मध्येति
 हति राजसा ॥ जघने गुरा हतिस्था अधोगच्छति तामसा ॥ १८ ॥ नाभ्यं गुरो भ्यः

ऊह रजोगुरा वठन गया लोभ ऊह तमोगुरा वव्यो भन्या अज्ञानी ऊह ॥ १७ ॥ हे
 अर्जुन सत्व गुरा मारह्या प्राणि ह्म पलोक मायनि उभोति देवलोक मा जाह
 र रजोगुरा मारह्या प्राणि मनुष्य लोक मारहंछु घटिया कर्म भन्या को
 जो तमोगुरा ते स्मारह्या उधोति जाह्नु पशु जोनि आदि भन्या को घटिया जो
 नि माजम हंछु ॥ १८ ॥ हे अर्जुन ईतीन गुरा यत्तत्त्व रूप ले ईन काम ले यो ससा
 वाध दछु भनिक हियो सत्व रज तम ईतीन गुरा देषि अर्को येक यत्तत्त्व सा मा
 कर्म गत्वा देष देन न मेरो स्वभाव पति ईतीन गुरा देषि य शरीर ईन्द्रिय को
 साक्षि जज्ञो जो देष ह्म त्यो मेरा भाव पुछ पर रखा जस्तो ऊह ॥ १९ ॥ कस्य का
 र लेति मनुष्य ह्म मा प्रल मा पुछ भनोला सुन हे अर्जुन जांन्या जो यो जिह

मवाट भयाव
 निश्चय गरि
 मुक्त ऊह
 गन्या को मुनि
 तान ले जिति
 ले गरिति गुरा
 कन भगवा

कर्त्तारं यद
 नतीत्यनित
 वाच ॥ कैलि
 वर्त्तते ॥ २१ ॥
 ननिहत्तानि

भन्या को गैर
 का र्ये जो छ
 र भयो त क
 न भनिक
 न त पति वा
 को उतरा
 सा देषि उ
 त स्ते गरि
 राले गर्दा

मवाटभयाका सत्वरजतमईतीनगणशरीरदेविउत्पन्नभयाका कृत् भनिसाक्षात् जो
 निश्चयगरिठहराउंछत्यो जोगिजो छ जन्मभयो मनुभयो उछे भयो अतु पने अनेक उषजे
 उक्तईछ अमृतकन पाउंछ ॥२०॥ तीनगणकनजित्या प्राप्त मोक्षे ऊंछ भनि भगवानले आशा
 गयाको मुनिकन केरि अर्जुन विनिगईछ हे प्रभो ईतीनगणकन कन कन विहिकन कला
 सानले जितिछ गणकन जित्या जोगिभये छ भनिकस्त रहले जानि छ कस्त आचारले कस्त कार
 ले गरिति गणजितिछ आगि विहिकन होला ॥२१॥ श्री भगवानुवाच ॥ अर्जुन ले विनिग गयाको मुनि
 कन भगवान् आशा गईछ सत्त्वको कार्ये प्रकाश भयो रजोगणको कार्ये धन कन प्रहत्त

कर्तारं यदा द्रष्टुं पश्यति ॥ गुरोर्भ्यश्च परं वेति मद्रावं सो विगच्छति ॥१९॥ गणानेता
 नतीत्यत्रिन् देहि देहसमुद्रवात् ॥ जन्ममृत्युजरा दुःखे विमुक्तो मृतमश्नुते ॥२०॥ अर्जुनो
 वाच ॥ कैलिङ्गे श्रीन् गणानेता नतीतो भवति प्रभो ॥ किमाचारः कथं वैतास्त्रीन् गणानति
 वर्तते ॥२१॥ श्री भगवानुवाच ॥ प्रकाशं च प्रहत्ति च मोहमेव च पाण्डवा ॥ तद्वेत्ति संप्रहृता नि
 न विहृता नि काक्षति ॥२२॥ उदासीनवदासीनो गुरो यो न विचाल्यते ॥ गणागणेषु वर्तते

भयाको गौरमलागु यो रजोगणको भयो तमो गणको कार्ये मोह अज्ञान भयो ईतीनगणका तीन
 कार्ये जो छद् शरीरमाभयाको देविकन जो योगिदेव गदै नद् शरीरदेवि कन्या गण शरी
 रभयो तक्का आश्चर्ये भयो हो भन्दु त्पादे गदै नद् ईतीनगण तिका र्ये शरीरमाभये
 नद् भनिकन पनिति गणका कार्ये पाउंताका ईछा गदै नद् इमिथा कार्ये कृत् मिले
 नत पनिवाठिये हो भनि भन्दु त्यो जोगि गणकन जित्या हो भनि जानु ॥२२॥ स्वल्प
 को उत्तरा दीकन आचार कहु छुन हे अर्जुन जो संयाति उदासि जस्तो भै कन जस्तो स
 ता देवि उदास भयाको मनुष्ये कसैको पक्ष पात कदेन सवेय के नाश माद छद्
 तस्तै गरि रत्नाको गणजित्या उपायको जो मार्ग छ ते स मार्ग मारहि कन तितीनग
 णले गर्दा डग्दै नद् ईगण जो छद् शरीर ईन्द्रिय मारहि कन प्रत्यक्ष कन डगाउ

नानिमित्तं अनेकवल्गुर्हन् मत्तदेगपतिचलन्पाद्वेन भन्त्या आंठगर्ह
नचलिकनरहत्या संन्यासिगुणजितन्याहो ॥२३॥ हे अर्जुन शूतजोगि दुःखप
यामापति सुखपयामापति वरोवरे मान्दह मध्ये स्वस्थचित्तभयाकोचंचल आ
त्मानभयाको उद्धाकृष्टाको वा कृताहुंग सुवर्णवरोवरे मान्ता घटिया वटिया
देवतेनह पुरोयदार्थयामापति पुरो न कृत्याधस्तु पायापति वरोवर देवत्या
धीरभैरहत्या वडो बुद्धिमान कसेले आकृलाई निदागयोतापति स्तुतिगयोता
पति वरोवरे मान्ता ॥२४॥ शूतजोगिकसेले मानगम्यापति अपमानगयापति

योदतिष्ठतिनेद्रुते ॥२३॥ समुद्रः स्वमुखः स्वस्थ समलोष्टात्मकांचनः ॥ तुल्य
प्रियाप्रियोधीरः तुल्यनिदात्म संस्तुतिः ॥२४॥ मातापमानयोस्तुल्य तुल्यो मि
त्रारिपक्षयोः ॥ सर्वाभायद्विपाणिगुणातीतः सुउच्यते ॥२५॥ मां च यो व्य
भिकारेण भक्तियोगेन सेवते ॥ स गणान्समतीत्येतां ब्रह्मभूयापकल्प
ते ॥२६॥ ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाह अमृतस्याव्ययस्य च ॥ शाश्वतस्य वधर्मस्य

वरोवरे मान्दह वटिया कर्मपति घटिया कर्मपति गर्तहाडिरावे ह्न्योगिग
राकनजितन्याहो भतिजान्ता ॥२५॥ शूतजोगि जो ह्न्यकलसका ह्न्यमार
ह्याको ह्न्य मईश्वरकनवडो भक्ति लगायाको ह्न्य सेवाले वा करिगर्ह त्यो जोगि ई
तीतगुणकनजिति मोक्षजनकन समर्थई ह्न्य ॥२६॥ ईश्वरकि प्रतिष्ठा मई
परमाविखेलाग्याजो श्रद्धा ह्न्यो मई सकलकर्मले रहितभयाको निर्गुण
ब्रह्म मई कस्तो ब्रह्म अमृतजस्तो केलेन मर्त्या अमृतधर्मभयाको अय
यनाशन कृत्या धर्मभयाको साश्वतस्य लधैरहत्या धर्मभयाको धर्म
स्यतानलक्ष्मीभयाको अताननभयाको सुखस्वरूपकेवल सुखमात्रभ
याको जोगि जो ह्न्य गुणकनजितन्याहो ॥२७॥ इति श्रीभगवद्गीताभाषायां ॥

१४॥ श्रीभगव
वेराजवडाउ
ब्रह्म तेसे ब्रह्म
धोतिरहागम
रसगधस्य
हागउधोति
संसारदृष्ट
का अयम्यजु

सुखस्यैकांति
श्रीकृष्णार्जुन
गवानुवाच
वेदसवेदवि
श्रमूलान्यत

लाउहन् भा
सादृशजो
हन्देन सर्व
हन् उधोति
पशुपाक्षिमु
गिफिजियाव
दरुपरशग
शुईराभया

१४॥ श्रीभगवानुवाच ॥ संसारदेवि विरक्तभयाका मनुष्यहृदयनिविस्तगरा उन्मावडो
वेराजवडा उन्मावोगक हंहु मुनरे अर्जुन भनिभगवानुवाच ॥ आग्याग हंहु उभोतिस्तरभयाका
ब्रह्मतेसे ब्रह्मदेवि उन्मावडुनाने ॥ ब्रह्मेनामूलभयाका जराभयाको ॥ यमसंसार हृदको उ
धोतिरहागभयाको हांगा यनि अहंकार पृथिवीजलतेजवायु आकाश उगाह इन्द्रियरूप
रसगंधस्पर्शशब्द आदिभयाकायांच ईत्यादि ॥ चोविमजो प्रकृतिबोला उहंहु ॥ तिने
हागा उधोतिरभयाको अश्वत्थना उभयाको ॥ क्षेराविधांशि ॥ वाडेनाशुद्रया ॥ फेरिकसो
संसार हृद ॥ अव्ययजरो ब्रह्म ज्ञानाने ॥ अव्यय फेरि फेरि कुंदेर हंहु ॥ जलसंसार वृक्ष
का अग्न्यनुसाम अथर्व आदिभयाका यातभनिहं ॥ तेम हंहु लाई अनेक कर्मका फलदि

उषस्यैकांतिकस्य च ॥ २७ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु पवित्रमुग्रं विद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भीष्मपर्वणि गुरातीत योगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ श्रीभ
गवानुवाच ॥ उर्ध्वमूलमलमधःशाखमश्वत्थं प्राकुरव्ययं ॥ हृदासि यस्य वर्णनियतं
वेदसंवेदवित् ॥ १ ॥ अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तश्च शाखा ॥ गुणप्रवृद्धविषयप्रतलाः ॥ अध
श्चूलान्यनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥ २ ॥ न ह्यस्य हतधो पलभ्य

ना उहंहु ॥ भनिवेदजो हंहु ॥ पातबोला उहंहु ॥ मूलददिषिसोसमेत पातसंमको योस
सा हृदको साक्षात्कारा जादहं ॥ यो मनुष्यने जान्या करे जान्यो तेस्ते जातु वांकिर
हंहु ॥ ते सर्वज्ञ बोला उहं ॥ १ ॥ हे अर्जुन यसंसार हृदका अधि रूपाका सावाजो
हंहु ॥ उधोतिरयनि उभोतिरयाने फिजियाका हंहु ॥ उधोतिरभयाको मनुष्यदेवि उभो
पक्षपक्षि मृगमाह ईत्यादि सार उभोतिरभयाको मनुष्यदेवि उभो देवतासंमपु
ति फिजियाका हंहु ॥ तिशावा यनि सत्त्व रजतमगुणनेवाध्याका हुलोगरायाका हं
दहपरशगंधस्पर्शरस ईनका प्रवालभयाका हांगाका दुष्यासमाति पकट्या ईहंहु
उईराभयाका ॥ तेसंसार हृदमूलजरायनि फिजियाका हंहु ॥ जन अर्थने भनी

ला. यमजन्मभन्दा उभोतिर पनिका फलन्या कारण दुहं. उभोभन्या को अउम्या जन्म
मापनि धर्मकोर अधर्मको फल भोग गराउम्या कारण यनि वेदिहं. यस निमित्त
पनि फिजिया काछन. मनुष्ये लोक मा कर्मका अग्रधन गराउम्या ई दुवै मू
ल जन्म. कुरुतर हले भनौला. यमजन्म मा जन्मा कर्म पछिला गिरहेछ मरि
कन अर्का जन्म मापनि उहिकर्मका वासना लगाइदिहं जन्मनु मनु ग
राउदै रहंछ ॥ ३ ॥ यस सत्ता दृष्टको अश्वत्थ भनि वर्णन गरियो. देव दृष्ट
देव्याई देवि येलामनु. यस्को तरु पनिके हिछैन. यस दृष्टको आदि
जो फेदछ सो पनि पाईदैन अन्न पनि पाईदैन. केहे समर रहंछ काहा

ते नान्न चादि न च सं प्रतिष्ठा ॥ अश्वत्थमेनं सुविदुः मूल ममंग शस्त्रेण
दृढेन छिन्ना ॥ ३ ॥ ततः पदं तत्परि मार्गितव्यं यस्मिन् गताननि वर्तन्ति भू
यः ॥ तमेव चाद्यं प्रकृषं प्रययत्तः प्रवृत्तिः प्रमृता पुराणी ॥ ४ ॥ निर्मा
न मोहाजितसंगदोषा. अध्यात्मनि त्याचिनि हतकामाः ॥ वंदे विमुक्ताः मुखदुः

सम्प पुण्या को छनो अन्न कहि मिलेन. ते स दृष्टको माहु जो छ सो यनि मिन्दे
नर. यस अश्वत्थ दृष्टकन असंगना उग्याको. शस्त्र बलियोगा हिली कन
अनेक हांगा अऊर लेन हित भयाको कन काटनु. स्त्रि पुत्र धन गृह ईत्यादि
संगछाडनु. माया छोडनु. रूप जो सानछ तेहि शान शास्त्र भन्याको वंशरोस
गलाई कन यो ससार दृष्टकाटिहं ॥ ४ ॥ यो दृष्टकाटि क्योई भनौला सुन
हे अर्जुन. ससार दृष्टकाटिया पछि अनेक वाट लेउनु ईछा भयाको अ
नेक तर हले योनिन्या. यस्तो विष्णु पद जो छवै ऊरु मोक्ष पद जो छ ते स पद
कन जोजनु. ते स पद पुण्या प्राप्त फेरि फेकदैन. ससार मा जन्मनु पदैन. त्यो

उपाय बोज
माप्या. ते
ठिया केले
छन ॥ ५ ॥
उआदि द्रव
रहले हे या
धस्य शीवि
मनु मनुन

रव संज्ञे. ग
ननि वर्तते त
ति स्थानिक
धानि वास

सुन हे अर्जुन
काश देवि दै
कनु पदैन. त्य
ने ले यनि तं
जीव लोक म
यछ वडो ओ
आत्मा साथ
गछ घडा मा
काश मालिह
यको वासना

नम
मेत
मू
रि
ग
त
ः

उपायबोजन्या मुनहे अर्जुन ननु पदलेकधाको आदिपुरुषजो ह तेस पुरुषकाशरुण
नापया तेस पुरुष मेरो शरणा ले वसिक्का निमित्त भया मेरा शरीर मा जनि ससार माया
ठिया केला या का तिसवै मेरा शरीर देषि निस्का ससार को माया सकन हैन भनि भ
हनु ॥ ५ ॥ सो ज्ञान भया यदि गर्व पनि मोह पनि अज्ञान पनि आफल्या का ऊँ हनु चि
उ आदि द्रव्यादि को संग वस्तु जो दोष जित्या का परमात्मा भगवान् हनु उनै कन सर्वत
रहले हे या का संपूर्ण कर्म ह्राडा का पुः मडुः खादि संपूर्ण छाया का शब्द रूप रंग
धर्म्य शक्ति मन न भया का शरीर मा अज्ञान को संपत्ति न भया का तिनानि हनु के हे ज
मुन मुन नय न्या विष्णु यद मा जा हनु मोक्ष ऊँ हनु ॥ ६ ॥ सो विष्णु यद कस्तो ह मनोला

रव संज्ञै गच्छत्पुनः पदमव्ययतत् ॥ ५ ॥ नत ज्ञानयते सूर्यो न शशं को न पावकः ॥ यद्गत्वा
न निवर्तते तद्भामय रममम ॥ ६ ॥ ममेवांशो जीवलोके जीव भूतसनातनः ॥ मनः षष्ठानींद्रियाणि प्रकृ
तिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥ शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युन कामतीधरः ॥ गृहित्वैताति संयानि वायुग
धानि वासयत् ॥ ८ ॥ श्रोत्रं चक्षुः शक्तिं च रसनं घ्राणमेव च ॥ अधिस्थाय मनश्चायं विषयातु
पसेवते ॥ ९ ॥

मुनहे अर्जुन तिनै केतो क ऊँ पालो गराउ न्या प्रकाश भया का सूर्ये हंत पनि ते सविष्ट पद मा तनै पनि प्र
काश देषि हैन तस्मै च द्रमा तस्मै अजित यति ते स नग मा प्रकाश हैन न नून धाम मा पुगिकन हेरि ह
कतु पदेत त्यो वै कुरु ना उग मा को मेरो धाम हो ॥ ७ ॥ अनेक प्रकार का गति हिंडु आदि भया का को
नै ले पनि तत्रा धाम मा न पुग्या का क्या अर्थ भनोला मुनहे अर्जुन परमात्मा का केहिये क अतये क
जीव लोक मा संपूर्ण प्राणि का शरीर मा जीवात्मा भै कन निरंतर ला गिर ह्या का हनु मन स्मेत उद्दि ईंद्रि
य हव डो श्रोत्र चक्षु घ्राण जिह्वा मन ई ह ईंद्रिय मार ह्या का हनु कन वै च ह मरण सम्य मा
आत्मा साथ लिह र जो मेरो हुलो आत्मा ह उनै आत्मा मा पुग ह जस्मै वडा आकाश का कोहिये क भा
ग ह घडा मार ह्या को घडा कृत्या गदि पानि अटाउ न्या प्रयोजन साथ माली कन हेरि हुलो आ
काश मालिह ॥ ८ ॥ तेहि मेरो अंस प्राणि हनु कोई धर जीवात्मा ह जून शरीर मा जा ह ई ह ईंद्रि
य को वासना संग ली कन जा ह जस्मै पुस्य देषि मुग धली कन वता स अन्य न जा ह ॥ ९ ॥

अधिकारों को अर्थ फेरिक हंछु सुन हे अर्जुन भोत्र भन्या का का भन्या स्य र भन्या को क्षला भ
यो र स भन्या को जि भो भयो ध्यान भन्या को ना क भयो मति छ इन्द्रिय मा जो जीवात्मा रहित
सुन हे न मिथो न मिथो स्वाद गुरु गंध सुगन्ध चितो तातो पशु गर्भ सुषुः ख भयो भो कट
धाम भयो मनु ए भयो भन्या ई छं इन्द्रिय कन ये क शरीर भो भोग ग हं ॥ १० ॥ शरीर इन्द्रि
य ले युक्त भन्या का य के देह मा वत्सा का भगवान् कन मनुष्य हं स वै कन देव देन भ
नौला सुन हे अर्जुन ये ले को शरीर छा डि गे गया को छत यनि उ से शरीर मा छ देह ता
मति शब्द पर स गन्ध स्य र्श दि विषय भोग ग दै छत यनि सुषुः ख मो हा दि स त
र जत म ई ती न गुरा का अर्थ ले युक्त भन्या को छत यनि अज्ञाति हं जो मनुष्य हं छ

उत् का मंत स्थितं वापि भुजानं वाग्राणां चितं ॥ विमूढानां न यश्च पति पश्यति शान्तं च
क्षुधः ॥ १० ॥ यततो योगिनश्चैव पश्यन्त्यात्मन्यवस्थिता ॥ यततो य दृतात्मानो नै
न पश्यन्त्यचेतसः ॥ ११ ॥ यदादि त्यगतं ते जो जगद्वास यते खिल ॥ यच्च द्रमसि यथा
जो ततो जो विद्वि मामक ॥ १२ ॥ गमा विश्व भूतानि धारयाम्यहं मेजसा ॥ पुष्पानि

र स सार का अनेक कर्म ला ग्या को ते स भगवान् कन देव देन शान दृष्टि भन्या का जो
जि हं स सार का माया का आ का हं देव द हं ॥ ११ ॥ शानि हं यनि स वै देव देन सु
न हे अर्जुन व डो जत ग रि आत्मा कन खोज न्या निरतर मेर जो ग मा ला ग्या का व डो भक्ति
भन्या का जानि हं मा व शरीर मा र ह्या का म कन देव त हं मेरै योग ग हं त यनि आ
त्मा मा बुद्धि मि ला उ न न स क्वा य छि चित ठे ग ना न भन्या का स सार सुख भोग छा ड न न स क्वा
को मेरो योग ग हं त यनि शरीर मा र ह्या को म ला ई देव न स क् देन ॥ १२ ॥ म जूत प्रकार
सित स सार मा र ह्या को हं म क हं सुन हे अर्जुन सूर्य भन्या चंद्र मा भन्या अग्नि भन्या
ई न हं जुन ते जले सीसा मा उ ज्वा लो ग रा उ हं त्यो तेज म कन जान शरीर मा य नि जू ते
जले सूर्य चंद्र मा अग्नि देव त हं ते स्कन म ला ई जान ॥ १३ ॥ फेरि सुन य स स्थापन
ग मा दि ले युक्त भन्या का पृथ्वि मा य सिकन आत्म तेज ठे धर्य का व ल ले पृथ्वि का
धारणा गरि रा व्या को हं या वत् चरा चर मा हं मेरै आधार मा हं संपूर्ण र स आ

स भन्या को अ
गति छं र स
॥ १४ ॥ म
युक्त भो कन
र को अन्त च
सुन हे अर्जुन स
करो स म हिरा
भन्या का अज्ञा
बोध धीः लब्धा
प्राणायात म म
रति म यो हं न
बो लो के धार

गुरा को भन्या
स न्या ई हं ना
न अनेक शास्त्र
ग उ न्या मे ई
र स हं य स न
ऊ र स्थ पुरुष
ई न्या मे र हं
अक्षर पुरुष
आ भ नि स्तुति
क आ क्य च म

अक्षलाभ
रहित
भोक्त
इति
देनभ
देहता
सत्त्व
इति
तान्व
तोने
यथा
भानि
मजो
तु
भक्ति
नेत्रा
सका
प्रकार
भया
रते
मज
देका
सत्रा

मभयाको अमृतत्व पचन्द्र मामै भैकन सन्ना मारहा को छुधान्यादि भयाका औषधि
जति छत् रसलेयुक्त भै शरीर पुष्ट गरउत्ता भै वैदददत्ति औषधयनि वढउत्ता भै
ॐ ॥१४॥ मजो दुःख भिभैकन प्राणिहृत्का शरीर मारहि प्राणवायु अयानवायुले
युक्त भैकन उभोतिरचलन्या उधोतिरचलन्या ईडईवताललेयुक्त भैकन चार प्रका
रको अन्नचया उनु वसनु यन्या पिउनु यन्या यल प्रकारचा अन्नचया उहु ॥१५॥ फेरि
मुनहे अर्जुन संपूर्ण प्राणिका हृदयमावल्याको महु मदेविसजन जालु गह्वर देव्या मुन्याको
करो समदिरावल्या शास्त्रलेक ह्याको कुरा माचलन्या बुद्धि भयाका ईदत्त ईडईथोकन
भयाका अज्ञानियनि हृदय मारहाको भै ईदत्त क्या अर्थ भनौला वढिय कर्म अवि
बोधधीः सर्वा सोमो भूत्वा सात्मकः ॥१३॥ अहं वै शानरो भूत्वा प्राणिना देहमाश्रितः ॥
प्राणायान समायुक्त यवा मय नवतु विधौ ॥१४॥ सर्वस्य चाहं हृदि सति विधे मत्त स्मृति
र्तानमयो हतन्वा ॥ वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदेव देववाहं ॥१५॥ वाविमोऽपु
षोलोके क्षरश्चाक्षर एव च ॥ क्षरः सर्वाणि भूतानि कृष्टस्थोक्षर उच्यते ॥१६॥ श्रीराम ॥

पुत्राको भया समदिरावल्या ईदत्त अविपातक गन्या मनुष्ये भया सिक्काका कुरा यनि वि
सर्वा ईदत्त ज्ञान भयाका सुख ईदत्त संपूर्ण वेदले मै जानिदु मै लाई जाना निमित्त वेद वेदा
त अनेक शास्त्रादिवन्याको ईदत्त वेदान्त वना उन्ना वेद जान्या मै ई अर्थात् वेद जान्या वेदव
ना उन्ना मै ई भन्याले शास्त्र पुढोर हेतु भनि जानियो ॥१५॥ हे अर्जुन दुई शरीर जस्तो जो पु
रुष छ यस ससार मा अक्षर भन्याको ससार रूप हो मर्द पति जन्म मर्द पति अक्षर भन्याको
कृष्ट रूप पुरुष हो तजन्म न्या नमन्या सर्वे नाश भया मा वीज जस्तो भै ससारको येडा गर
उन्ना भै रहं भनिकहि ॥१६॥ फेरि मुनहे अर्जुन दुवै पुरुष भन्दा वडो अक्षर पुरुष
अक्षर पुरुष भन्दा अन्य अर्को ईडई का भन्दा वडो आत्म भन्याको वेद वेदात मा परमा
त्मा भनि जति गरियाको जूत भगवान् स्वर्ग मर्त्य पाताल इति नै लोक मा पसिकत ति नै लो
क आकाश रूप गरिकत रहन गरिराव ॥१७॥ हे अर्जुन मजो दुःख अक्षर भन्याको जन्म न

मनुष्या माया ले छोपिया को अधत्त प्रबुद्ध देवि पति वडो अक्षरै भया को सत्ता
 दृष्ट को बीज भया को केहे नाश नकुन्या प्रबुद्ध भया पति उत्तम दुःख निमित्त सत्ता
 माया हकले पति वेद ले पति प्रबुद्धोत्तम भनिकहि ॥१७॥ हे भारत जो जानि स
 उष्य ह् अग्नान कति न भया को सत्ता का माया त्याग भया को यत्तो जो गि जो ह्
 मकन प्रबुद्धोत्तम भति दुःख प्रबुद्ध भया वडो जानद ह् अक्षरै मार ह्वा का आत्म स्वरूप
 कत यो आत्म सत्ता स्वरूप कत दृष्ट पति होई न ह् सत्ता उत्पन्न गरा उन्मा वजि
 पति होई न ह् भनि जो जानद ह् त्यो मनुष्य सर्व रूप होई न भनि जो जानद ह् त्यो मनुष्य

उत्तम प्रबुद्ध न्यः परमात्मे सुदाहृतः ॥ यो लोक त्रयमाविश्य विभर्त्से व्ययश्चर
 ॥१७॥ यस्मात्क्षरमतीतो ह् मक्षरादपि वो ममः ॥ अतोऽस्मिलोके वेदे च प्रथि
 तः प्रबुद्धोत्तमः ॥१८॥ यो मामेव मत्संभूतो जानाति प्रबुद्धोत्तमः ॥ स सर्वविद्भजति
 मां सर्वभावेन भारत ॥१९॥ इति गद्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ ॥ सप्तदश
 बुद्धिमानस्य कृतकृत्यश्च भारत ॥२०॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु पतिवत्सु ब्रह्म
 विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भीष्मपर्वणि प्रबुद्धोत्तमयोगो नाम प
 दशोऽध्यायः ॥१५॥

सर्वज्ञ हो संपूर्ण जान्या हो सर्व प्रकार ले तो सन्यासि मै लाई भजद ह् मदेवि अर्को
 को हि जादे न ह् ॥१९॥ हे अनघ यो पन्थो अध्याय संपूर्ण शास्त्र भया पति वडो
 गद्य मूल अर्थ भया को संपूर्ण गीता शास्त्र को सार अर्थ भया को मै ले ति नि
 लाई कह्यां यो अध्याय जस्तो को तस्तो गरि अर्थ को विचार गरि जो मनुष्य
 जानो स् त्यो मनुष्य बुद्धिमान हव न् कृतकृत्य पति हव न् गन्या करे गरि को
 स ॥२०॥ इति श्रीभगवद्गीता भाषायां ॥१५॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नवम अध्याय

माराक्षे सिमा
 भगव्या भगव
 रं भगव्या भग
 ले रगुले वता
 का आत्म मास
 योग का सुख
 निमित्त अन्न
 भया का अ

श्रीभगवानु
 स्वाध्यायस्त
 लोबुत्वं माई
 दैवि मभिजा

त परमात्मा
 स्वाध्याय भ
 विसांचो भैर
 यो उद्धो नव
 धमयो म
 र शरीर उव
 आर्द्रव भय
 नगर्त अवा
 यो आऊ दे

माराक्षे सिमाया कहियथो तेस्को जो कार्ये छनू तिकहना निमित्त यम अध्याय को आरं
 भगर्मी भगवान् जो छ पैले हे देविकार्ये कहंछनू हे अर्जुन उरक से कोन मानु अभय हो आ
 रं भगर्मी भगवान् जो छ केहिकार्ये मायनिक से को भरो मान मानु सत्व संसुद्धि भयो शास्त्र
 लेर गुह्य लेवनाया को आत्म जानने आत्म ज्ञान को विचार गर्नु जान भयो ते स ज्ञान लेहराया
 का आत्म मासं पूर्ण इन्द्रिय से विकन मिलाई ध्यान गर्नु जप गर्नु योग भयो ते मृग्या न कोर
 योग का सुख मोरहनु बाहिर का सुख विधुर्व्यवस्थिति भयो परमात्मा लाई पाउना
 निमित्त अन्न गाई सुवर्णादि दक्षिणा गर्नु दान भयो इन्द्रिय वल मारावनु दम भयो वेद वा
 ऽभया का अश्व मेधादि यज्ञ धर्म शास्त्र वा ऽभया का जप पूजा बलि वैश्व देवादि पंचय

श्री भगवानुवाच ॥ अभयं सत्व संसुद्धि ज्ञान योग व्यवस्थितिः ॥ दानं दमश्च यज्ञश्च
 स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥ १ ॥ अहिंसा तप म क्रोध त्यागः शान्तिर्यैश्वर्यम् ॥ दया भूतेषु
 लोभत्व माद्वं प्रीत्यायलम् ॥ २ ॥ तेजः क्षमा धृतिः शौचं मद्रो हो ना विमोहिता ॥ भवन्ति संयतं
 दैवि मा भिजातस्य भारत ॥ ३ ॥ दंभोदर्यो भिमानश्च क्रोधः पादुष्यमेव च ॥ अज्ञानं वाभि
 जातस्य यार्थ संयदमासुरि ॥ ४ ॥

त परमात्मानि निमित्त गर्नु यज्ञ भयो अश्व मेधा दान दम परमात्मा कन जानानि निमित्त पढ़नु
 स्वाध्याय भयो शरीर कन सुकनु परमात्मानि निमित्त कुप्रयाणादि गर्नु तप भयो सवै सवै दे
 विसांचो भैरहनु आर्जव भयो ॥ १ ॥ अर्का को विगारन गर्नु कसे लाई पीडान दिनु अहिंसा भ
 यो दुहोन बोलनु जस्तो का तस्तो बोलनु शय भयो रीत उठ्या छत यति रीत न गर्नु अक्रो
 ध भयो संपूर्ण कर्म छाडनु कर्म का फल त्याग गर्नु त्याग भयो सुख माई इन्द्रिय जान यायेन
 र शरीर उबलायो भनि इन्द्रिय लाई सुख मान लगानु अलोल भयो ऊरु शोभावन गर्नु
 आर्जव भयो लज्जान मानु प्री भयो विना प्रयोजन मा सुख हात गोशदी शरीर चलाउनु
 गर्नु अचायल भयो ॥ २ ॥ छात्मा मा भया को गर्मि ज्वाला अर्क ले सहनु तसकनु तेज भ
 यो आऊ देवि सिया को मार्त तयार भया का देवि अर्को न चितानु क्षे मा भयो शरीर ई

द्वि-यकोस्तभनगर्भ धृतिभयो बाहिरभिन्नमागर्भ शोचभयो यमलेखेविगारगमो म
पतियस्कोविगारगर्भभनिभनु अद्रोहभयो आकलेवठियामान्याको श्रेष्ठवस्तुमा
अधिकनलागर्भ अमानिताहो हेभारत अभयदेविता अतिमानिनासमका जतिका
र्येछन् ईदं विसयतज्जन् देवताको अर्थर्येभयामा कृत्या कार्येज्जन् जसमनुष्यको
योचभावह तेत्काचित्तमा देवताको ध्यावरहेछ भनिजानु ॥३॥ राक्षोसिमायाको
स्वभावकहछु सुनहे पार्थ मवओ धर्मात्मा ऊँ मजलोको हिछेन भनु दंभभयो मव
ओ धनीहु मेरा पारिया वठिया हनु भनु दर्पभयो सवैको मानु पूजा गर्नु मलाई हि
मभदावओ अर्का छैन भनु अभिमानहो शास्त्रलेक ह्याका गर्नु लेवताया का ऊँ

देविसयद्विमोक्षाय निवधायसुरीमता ॥ माधुवः संपदं देविमभिजातो सियाराडव ॥ ५ ॥
दोभूतसर्गो लोके स्मिन् देव आसुरवच ॥ देवो विलारः प्रोक्त आसुर्या मेष्ट
एव ॥ ६ ॥ प्रवृत्तिवनिहृतिव जनानविदुरासुराः ॥ न शोचंता विवाचारे न सत्यं
तेषु विद्यते ॥ ७ ॥ असतोमप्रतिष्ठते जगदाकुरनीधर ॥ अयस्परसंभूतं

उहामानु अज्ञानभयो जतिजोछन् आसुरी संपतज्जन् यस्तोस्वभावभया का
मनुष्यका हृदयमाराक्षेसकास्वभाव रहेछ भनिजानु ॥ ४ ॥ हेयाराडव देविसय
तजोह मोक्षलाई देविस्वभावभयाको मनुष्य मोक्ष ऊँ छ आसुरिसंपतजोह
बंधनलाई ऊँ छ राक्षोसस्वभावभयाको मनुष्य सत्कारमा बाधेछ जमनु मुर्ख
हृतिमितामूर्तानगर हेयाराडव देविसयतभयाको ह्यो केवल देविस्वभावभ
याको मार्गमा बदेवछु ॥ ५ ॥ हे पार्थ यमसत्कारमा मैले दुईजगत्या का ऊँ
मेक देविसर्गजुमार्ग मनुष्य लाग्या प्राप्त देवताहो ईगान्छन् अर्को आसुरिना
उगत्या का सर्गमा लाग्या प्राप्त राक्षस योनिमा माजान्छन् दुईसर्गमा देवस
र्गको विलार गरियो आसुरसर्गको विलार कहछु सुन ॥ ६ ॥ हे अर्जुन आसुरि
संपतभयाका मनुष्य हन् यसवातमा मप्रवृत्तभयो आत्मज्ञानमिच्छ प्रवृत्त
कृत्याहो यसवातोमा लाग्या आत्मको नाश कृत्याहो यमसर्ग देविनिवर्त ऊँ

न्याहो मसमा
वठिया ऊँ
कावडा ऊँ
सिद्ध कृत्याहो
छैन यसस
यस्याकारणी
अर्को छैन श
मार्गकनमा
तसत्कारमा

किमन्यत्क
क्षयायज
दुहानप्रव
गवरमा

ननुभयोई
तितिह
यवठिया
राउछन् ॥
तागछन्
ऊँछन् ये
ऊँछन्
गकनपर
छन् ॥ ११ ॥
नेकआत्म

नाहो मसमार्गमालाग्या हो भनिजादेन न निमनु ब्यहू माशौच यति कुन्देन आचार
बढिया कुन्देन सत्तेयनि कुन्देन निमनु ब्यहू अयवित्र शरीर भयाका घटिया आचार भया
कावडा कुडा कुं छन ॥७॥ हे अर्जुन आसुरि माया मा दुव्याका निमूठ हू ससा कन दुवै को
सिद्ध ज्ञाना हो धर्म को अधर्म को प्रतिष्ठा के हिन भयाका धर्म गर्ना वडो अधर्म गर्ना मानु
छैन यल सत्सा को प्रभू अर्को को छ भया देवि दो हो स्त्री पुरुष को संग मभै कन पुत्र कुं छन
यत्सा कारण को हि छैन अर्को पुत्र पुत्र नगरा दुव्या कारण का मदे वता छन ॥८॥ हे अर्जुन आत्म
भर्को छैन शरीर मात्र हो भया दो दो बुद्धि भयाका सुखे मात्र परमार्थ जाना हू अधिक साका
मार्ग कन मां चो ठहराई ते मै मार्ग मालागि घटिया कुरकर्म गर्छन अन्याय मात्र गती के व
त सत्सा मात्र दुवाउत्या शत्रु भै कन त सा को नाश गर्छन ॥९॥ हे अर्जुन गर्व भयो मत

कितव्यत्ता महेतुकं ॥८॥ सतां दृष्टि मव अभ्य नष्टात्मा तोल्य दुदयः ॥ प्रभवत्यु प्रकमारा
क्षया यजगतो हिताः ॥९॥ काममाश्रित्य दुः पुरंद भमान मदान्विताः ॥ मोहाद् हीत्वाः स
द्रुहन् प्रवर्ततेऽ बुद्धि व्रताः ॥१०॥ जिता मय रिमेयांच प्रत्याता मु पाश्रिताः ॥ कामो यभो
गवरा सता वदति निश्चिताः ॥११॥ आशयाश शतैर्वद्वाः काम क्रोध परायणाः ॥ इहं

जनु भयो ईसादिले युक्त भयाको मुख मालागि कन कैलेन अघाउत्या कुं छन फेरिकला
तिनि हू अशुचि व्रत भयाको धान संध्यादि छाजा काराग द्वेष पदिला ग्याका अन्या
य बढिया देखि कन घटिया कर्म को आग्रह गर्ना कुं छन ब्रह्मा का वचन यति कुं छे ठह
राउछन ॥१०॥ हे अर्जुन तिकला कुं छन मुर्ता प्रलय काल मायनि होला कि हवेन भनि नि
ता गर्छन प्रलय काल मा मात्र कलो कुं छन अधिता कन मरियला भन्या निज भयाका
कुं छन यो सत्सा भयाको काम को भोग गर्नु सार भयाको छ भनियर स्त्री परद्रव्य का
जरा मुनु उहि हेर्नु मन पयाको बोलनु मिथै मात्र वानु वढिये लगउनु ईसादि सुख भो
ग कन परमार्थ ठहराई यल देखि पर अर्को के हि छैन भन्या निश्चय गरि सुखे मा दुवद
छन ॥११॥ फेरि जुन हे अर्जुन फलाना छेउ गया को कार्य सिद्धि होला यति मिनुना अ
नेक आस के रूप दाश लेवा धियाको सत्सा को काम का छुरि भै कन मन ले चिताया

को काम भोग न पाउं जाल. सर्व काम पद सुख भोग यहि लागि रह्या का सुख भोगे
कानि मिल मा अन्धाय ले द्रव्य वटो लि या का तद विरि ग र्ह न ॥ १२ ॥ तिन काम न मा
विचार यत्तो की द भानि कह छु सुन हे अर्जुन आज मै ले यति दोल थ या या अ को
काम पति यति मिल्या छ मो धन न मिल जाल संस म न मा स तो व ज न्या छैन य
नि धन हात मा छ अ व यति धन को हि दिन मा मिल्या छ ॥ १३ ॥ जिति न स कु मो श
नु मै ले मा यां जित्या अरु शत्रु क न यति अ व मा न ला य म स न्हा मा स वै भ न्दा
व जो ईश्वर मै ई छु म भ न्दा व जो को हि छैन सर्व भ न्दा सु वि यति मै छु सर्वै तर हने
भरि पूर्ण मै छु केवल निद्रि भ न्दा को मै ई बल यति मेरो वरो वर क से को छैन

ने काम भोगार्थ मया येनार्थ संबयात् ॥ १२ ॥ ईदमग्रमया लब्ध मिदं प्राप्य
सतो र्थं ॥ ईदं स्ती दमपि मे भविष्यति पुनर्जुन ॥ १३ ॥ असौ मया हतः शत्रु
हविष्ये वा परानपि ॥ ईश्वरो ह म ह भोगी सिद्धो हं बलवान्मुषिः ॥ १४ ॥ आ
व्योभिजनवानस्मि कोन्योऽस्ति सदृशो मया ॥ यक्षपदास्यामि मोदिष्ये ई
न्द्रेणानविमोहिताः ॥ १५ ॥ अनेकचित्तविभ्रान्तो हं जालममाहताः ॥ प्रस

व्याशरीर कोवल भयो क्या दोरानाटि ईष्ट मित्र कोवल भयो मेरो जस्तो क
स्तो छ मेरो जस्तो सुख गर्वा अर्को को छ ॥ १४ ॥ म जो छु धन ले सर्वै भ न्दा व जो छु
वडा कुल मा जन्म भया का वडि या बुद्धि भया को मुन व्यता मेरे साथ मा अ
छर सर्वै तर हने म वरो वर अर्को को छ य र्थ यति अरु क न जित्या भया मे ए
जति जज्ञ को ग र्ह न मुन व्य ह न ला ई यति अनेक द्रव्य दिं छु म जस्तो राना को छ
आज काल म जस्तो ह र्ब भया का को छ सर्वै तर ह वाट बुलि छु ई मा दि अनेक अ
ग्यात ले वै व वर भया का विषे क न भया को स्व भाय ले युक्त भया को ॥ १५ ॥ य
स गर ह का अनेक मत का कुर ले चित विभ्रम भया का अग्यात रूप मो है को जाल
छ ते सै जाल ले दो पिया का सुख भोग मा आलक्त भया का ईत्यादि कर्म ले अ

नेक पातक
नरक मा
नेक प्रकार
माद भया क
ले यज्ञ को न
रि मुन हे अर्जु
जो ई सो हा मि
मार्ताति मि न

काः काम भो
यजते नाम य
मा मात्म या दे
॥ क्षि पा भ

यापनि यो ध
धर्म ना ई ना दि
ग काम भया
को ध यहि ला
का स्व भाव लि
की को शरीर
यदि को हि त
म र्ह नै स के न
रा वडि या मा

नेक पातक ले युक्त भयाका मूठ हन ऊंभी पाक वैतणी नदि आदि भयाका अन्तेन घटिया
नरक मा डूब छन ॥ १६ ॥ हेरि मुन हे अर्जुन आ फे म हानि आ फे शरीर पोछु ईत्यादि अ
नेक प्रकार ले आ फे संभावना गन्या अन्तेन ठाडा नमृत कतिन भयाका धनका गबले र
माद भयाका इन हन धर्मात्मा बोला उना निमित्त वडो आड वर बाहिर देबाई कन विना विधि
ले यज्ञ कोन उमात्र यज्ञे यज्ञि यज्ञ गयो नाउ चला उना निमित्त मिथ्या यज्ञ गछन ॥ १७ ॥ हे
रि मुन हे अर्जुन शरीर मा भयाका जो गुण छन ति गुण ले हामि देवि पर अर्को आत्मा का हांड
जो ऊं सो हामि ऊं भनि हस्त या दादिले शरिरे लाई आत्मा हो भन्या अहंकार भयाका अर्को कन
मार्ग निमित्त काम ले राग ले युक्त भयाका बल भयाको केहि धर्म को कार्य गदि बरे देवि

काः काम भोगेष पतति नरके ॥ १७ ॥ आत्म संभाविता सत्त्वा धत मान म ए न्विता ॥
यज्ञ तेनामय शैले दंभेना विधि पूर्वकं ॥ १८ ॥ अहंकार वलं दर्प काम क्रोध व संश्रिताः ॥
मा मात्म पर देहेष प्रदिवंते भयसूयकाः ॥ १९ ॥ तान ह द्विषतः क्रूरान् संशारेषु न राधमा
॥ क्षिपा भयजत्र मधुभा नागुरि धेव योनिषु ॥ २० ॥ आभुरी योनि मायता मूढ जन्मनि
जन्मनि ॥ माम प्राप्यैव को ते य ततो यात्यधमा गतिः ॥ २१ ॥

यापनि यो धर्म मलाई क्मा चाहिं छु उं से म धर्मात्मा ऊं दे छु अत करण मा चित ना गरि
धर्म नाई ना धि मन यया को काम गरि दर्य भयो ते स दर्य मा लाग्या का स्त्री हन मा सुख भो
ग काम भयाका ते काम य छि लाग्या का अर्को को पीडा कतिन सहन को ध भयो ते स
क्रोध य छि लाग्या का अरु पनिय ले अनेक घटिया काम य छि लाग्या का नि आशुरि माया
का स्वभाव लिया का आत्मा रुय कन सकल सत्ता को छाम कन आकाश शरीर मायनि अ
र्को को शरीर मायनि देय गछन कत्ता ति म जो ईश्वर छु ते स्ता म दे उर ह्या का गुण
य छि को हि लाग्या को देव्या देवि सहन सत्तेन न मेरा गुण अहिंसा दि जो हन त्यो स
म हने सत्तेन न ॥ २० ॥ हे अर्जुन म जो छु सो य निति डूब हन कन कत्ता ति न हन मे
रा वडिया मार्ग कन देव गन्या साधु मेरा भक्त को देव निदा गन्या मेरो यनि देव गर्त म क

या यस्तो ऊरु स्वभाव लिया का मुन्य ह्युमा वडा घटिया यस्ता तिन ह्यु कन यसे
 ससार फेरि फेरि आं सरियोनि मा हा निदिछु तियात कै मा नगन्या अथु भै मा
 नगन्या चिता उन्मा ह्यु कन ते सराक्षे सयोनि मा जन्म नै फेरि उल्लै कर्म माला
 दे गरिकन कं भीया का दिन कं मा यात कं कर्म का फल भोग गदै फेरि घटि
 या योनि मा जन्म लिदै गरियो ससार कै ले छु दै न ॥ १९ ॥ हे को ते यति वि
 वेक न भया का ह्यु अने क जन्म जन्म मा ते सराक्षे सयोनि मा ये डा ऊन्या ह्यु
 मई भर कन को नै प्रकार ले नया उदा छंदा ते सयोनि देखि पति ह्यु घटिया
 योनि मा यथू की लय तंगा दि योनि मा जाना छंदा ॥ २० ॥ ये स आसुरियोनि

विविध नरक त्ये दं धार नाशन मात्मनः ॥ काम को धस्तथा लोभ सस्मा दे
 त न्य य ते जे ॥ २१ ॥ एते विमुक्तः को ते य त तो धारै स्त्रिभिर्नरः ॥ आ वर
 त्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परा गति ॥ २२ ॥ यः शास्त्र विधि मुत्तु ज्य वर्तते
 काम कारतः ॥ न स सिद्धि मवाप्नोति न सुखं न परा गति ॥ २३ ॥ श्री कृष्ण ॥

को दोष जति कहि आ आं ई सवै का मोक्ष म क ह्यु सुन हे अर्जुन आत्म
 को नाश गत्या नरक पुन्या उन्मा उघा या को धार भयो को ध भयो लोभ भ
 यो काम भयो ई ती न ह्यु त सथ जा न्या मुन्य ले ज स त न स्री मा संग न ग
 उ ई त्यादि काम भयो वा न मारी स गर्नु परा ई को वस्तु वटिया देखि लिना
 को पुक्ति गर्त भयो आफ्ना वस्तु धर्म मान ल गा उ नु लोभ भयो ई ती न
 जो छंदा नरक मा उ वा उ न्या ई भर छंदा दै न भया ज सो ग रा ई दि न्या का
 म को ध लोभ मो ह छ डि डि ॥ २१ ॥ ति ती न छ डि क्या ई छ भ नौ ला लु न हे
 अर्जुन नरक धार दुःख मो ह मा पु न्या उ न्या जो ती न काम को ध लोभ

ई न ले युक्त
 लागद छ ई
 हा को तो मे
 छ भ नौ ला
 भनि वै द धम
 को छ डि क
 र मा सु र व
 का र्थे क न

तस्माद्वा
 पु वि हा ह
 श्री कृष्ण

कार्ये त्याग
 र ता ई दु
 नौ ला जो
 र गी ता भा
 ग छ त्यो मु
 पु ति चर्जु
 वि धि धा डि
 राज सि हो

इतने युक्त भया को हाथा को मनुष्य जो छ आत्मा को कल्याण कुन कर्म यहि
लागद छ ईश्वर कन या उता को युक्ति गछन तले प्रकार सित मेरा भान माला गिर
हा को सो योगिय दम गतिक न पुगद छ ॥ २२ ॥ काम क्रोध कत्तर हले छोदन सकि
इ भनौ लामुन हे अर्जुन जो मनुष्य शास्त्र ने ई कर्म गर्ता कुन ई कर्म गर्ता होईन
भनि वैद धर्म शास्त्र लेव ताया का कर्म विचार न गरि केहि कर्म गछ शास्त्र ले कथा
को छ डिकर्म गछ ॥ ॥ सो काम क्रोध लोभ कन दाउन स कै ननु वाचं जाल सत्ता
र मासुख यनि पाउं देन वाचं जाल दुख पाई नर क पाउं छ ॥ २३ ॥ तसर्थ हे अर्जुन गर्ता
कार्य कुन हो न गर्ता कार्य कुन हो भनिति मिलाई विचार गर्नु पर्द शास्त्र ले कथा को

तत्मा ह्यस्तं प्रमानने कार्य कार्य व्यवस्थितौ ॥ ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म क
र्तुं विहा हसि ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता सुयनिख सुब्रं विद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुन समादे भीष्म पर्वणि देवा सुर संपदिवेक योगो नाम षोडशो ध्या
यः ॥ १६ ॥

कार्य पान को साधन कुनार हे छ अरु कर्म गर्नु न विना हक दोलथ वर्च गर्नु शरी
र ताई दुख दिनु मा नर हे छ अशास्त्रीय कर्म ले पुन्यार्थ सिद्ध कुनार हे न छ भ
नौला जो शास्त्रीय कर्म छन ते मा भद्रा व ताई कर्म गर्नु ॥ २४ ॥ इति श्री भगव
द्गीता भाषायां ॥ १६ ॥ अर्जुनोवाच ॥ पूर्वा व्यास मा जो शास्त्र विधि छ डिकाम
गछ सो सुख यनि पाउं देन परम गति मा यनि पुगं देन भनि भगवान् को आश
नुनि अर्जुन ले विनि गछन ॥ अर्जुन उवाच ॥ हे कृष्ण जो मनुष्य हन शास्त्र का
विधि छ डिकन व जो भद्रा ले देवता को पूजा गछन तिनि हन को निशारा
राजसि हो किना मासि हो कि सात्य कि हो आग्रा गरि वक्तु होला ॥ १॥ ॥

श्रीभगवानुवाच॥ हे अर्जुन मकहं दु योश्रद्धाभन्याकोतीन प्रकारकिह तौश्र
जामनुव्यकास्वभावलेऊह जांन्याभयादेविताग्याकाजूनधर्महजन्काम
रंज्यालपतिहुइदेनयो तेस्कास्वभाव हो देवताका पूजामाजकोश्रद्धाह
योसाच्यकिहो यक्षराक्षसको पूजागर्वा राक्षसिश्रद्धाहो भूतप्रेतको पू
जागर्वा तामसिश्रद्धाहो इतिने प्रकारकाश्रद्धामकहं दु सुत॥ २॥ हेभारत
श्रद्धाभन्याकियनियधयिसवैपुरुषकाअनकर्णमाआलिकवुद्धिलेयुक्तभ
याकोऊहतायनिअनकर्णसत्वरजतमगुणसितमिश्रितकृतालेउनेउनेगुण
कोस्वभावभयाकोऊहइतिने प्रकारकाश्रद्धाकहिंहु पुरुषजोह ऊनश्रद्धाले

अर्जुनउवाच॥ येशास्त्रविधिमुत्सृज्य यजतेश्रद्धयाविताः॥ तेषानिष्टातुका
कथं सत्वमाहो रजस्तमा॥ श्रीभगवानुवाच॥ त्रिविधामवतिश्रद्धा देहिना
मास्वभावजाः साच्यकिराजसिदैव तामसीचेतितांस्वरु॥ २॥ सत्वात्पुरुषा
मवस्यश्रद्धामवतिभारत॥ श्रद्धामयोयं पुरुषो योयदुदुः सत्वसः॥ ३॥
यजतेसात्विकादेवा त्यक्षराक्षांसिराजसा॥ प्रेतान्भूतागणाश्चान्येयज

मुक्तभयाको तोपुरुतेहिश्रद्धारूपहो॥ ३॥ सात्विकपुरुषजोहूदेवताको पूजा
आराधनागर्हू राजसिपुरुषजोहू यक्षदेवताराक्षसको पूजागर्हू ताम
सिपुरुषजोहू भूतगणको प्रेतको पूजागर्हू प्रेतनादिमानुगणको पू
जागर्हू॥ ४॥ हे अर्जुन शास्त्रको विधिछाडिकन हुकोमार्गमालागिगर्हले
र अहंकारलेयुक्तभयाकाकामदेवकोर प्रीतिकोबलभयाकापुरुषकाबल
लेर रागकाबललेयुक्तभयाकावजोघोरलाग्योयर्थशरीरलाई दुःखदिया
नपस्यागर्हू॥ ५॥ अर्जुनलेभगवान्हेउविनिगर्हू चेतभन्याको अज्ञानि
हहकाशरीर मारहाकाईदियहहकनसंपूर्ण कनआत्मामारहाकाअ
नर्थासि मकन धगउया दुःखदिया मानऊन तिनहहलेनपस्यागन्याको

व्यर्थ छ तिनह
हाराजो छ स
पानितिने प्र
यारोह भनो
पुर्दावठद
प्रीतिवठाउ
हया हद
कापियारो
ने तोमसाज
कामरागव
ताविधाम
धादानं ते
लिग्धासि
विदाहिनः॥

योविधोन
निवायाको
उअनजोह
वासिभया
को भोजन
कहं दु सुत
काग्रमनल

अर्थ छ तिनहुकन आगुमायामानिश्चय भयाका जानतिमि ॥ ६ ॥ हे अर्जुन वात्या आ
 हाजो छ सवै मनुष्यको तीन प्रकारको पियारो छ तनै यज्ञयनितिनै प्रकारको नयस्या
 पनितिनै प्रकारको दानयनितिनै प्रकारको पियारो छ कनू कनू अराकस्काकापि
 यारो छ भनौला ईनका भेद मेकयेक गरि कहंनु तिमिसुता ॥ ७ ॥ जुन भक्ष्याई कन आ
 पुर्दाव छ दछ तेजयरा कमव छ दछ बलव छ दछ निरोगि शरीर गरु उन्मा मुखव छ उन्मा
 प्रीतिव छ उन्मा मिठाव छिया प्रसन्न भयाका मुघर चिध्वावाई कन छेरे वेर सम आठ
 ह्या हृदय ले व छिया मान्या यस्ता तरह कायाना आहार जो छ नू सत्वगुणि पुनू व
 कापियारो ई छ ॥ ८ ॥ हे अर्जुन अमेन पियारो अमिलो अतिचको नून अतितातो नू

ते तो मसाजना ॥ ४ ॥ अशास्त्रं विहितं घोरं तप्यते ये त योजनाः ॥ दंभाहंकारसंयुक्ताः
 कामरागवत्तान्विताः ॥ ५ ॥ हर्षयः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः ॥ मान्दैवांतः शरीरस्थ
 ताविद्यामुरनिश्चयात् ॥ ६ ॥ आहत्स्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रिय ॥ यज्ञस्तपस्त
 थादानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥ ७ ॥ आयुः सत्ववत्तारोग्यं सुखप्रीतिविवर्जितः ॥ रस्या
 लिङ्गास्थिराहृद्या आहाराः सात्विकप्रियाः ॥ ८ ॥ कष्टमूलवरणात्पुष्पतीक्ष्णरूक्ष
 विदाहिनः ॥ आहाराराजसं स्पृष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥ यातया मंगतरसं पू
 त्रियुषितंचयत् ॥ ३ ॥ छिध्ममपि चामिध्मे भोजनं तामसप्रिया ॥ १० ॥

बोधिध्मोनभ्याको दह्याको यस्तावाना आहार जो छ नू रजोगुणिक जो छ तस्को ई छ
 त्रिध्याको आहार जो छ नू दुःखदिन्या लुर्ता गरु उन्मा रागव छ उन्मा ई छ नू ॥ ९ ॥ वा
 उअन जो छ नू न पाक्याको लुकि गयाको रसकतिन भयाको दुर्गध आउन्मा अह्याको
 वासिभ्याको अकाले बाई कन वांकि रह्याको गुठो देवता कन न वृहत्या यम प्रकार
 को भोजन तमो गुणिको पियारो ई छ ॥ १० ॥ हे अर्जुन तीन प्रकार यज्ञमा सात्विक यज्ञ
 कहंनु जुन जुन यज्ञ जांन्या पुनू व हंनु ले फल को ई छान राखि मन को समभान गरिय
 का प्रमन लगई यो यत अवस्य गर्ने हो भयानिश्चय बुद्धि गरि वेद लेवतायाको विधि

ले गरिह सो सात्विकिय हो ॥११॥ राजसिय शक हंछु सुन हे अर्जुन प्रह्व हल ले स्त्री प्र
 न राजस्य दोन थ कोई छा गरियो यश गर्ध यो फल मिलो सुभनि अथवा मयश गर्भ रत
 वैजना वडो भनानु भन्या इत्यादि आदं वरुनिमित्त जुन यश गरिह हे भारत श्रीव ते
 मयश कन राजसिय श भनि जान तो रजोगुणिय श हो ॥१२॥ तामस यश क हंछु
 सुन हे अर्जुन शास्त्र लेवता या को विधि छाडि विवल्यातो मार्ग ले ब्रांलणालाई अ
 न भीजन न गराई उंकारादि मंत्र ले देवता काना उ मंत्र ले यनि उं चारण न गरि
 ई कार्ये लाई ई दक्षिणा गर्नु भनि शास्त्र ले क ह्या को यत किंचित् मात्र दक्षि
 णा गरि चित्त न लाई कन गया को यश जो छत् तामस यश भनि कहिह ॥१३॥

अफला काक्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य ईज्यते ॥ यष्टव्य मे वेति मतः समाधाय न
 सात्विकः ॥११॥ अभिसंधाय तु फलं दंभार्थं मपि चैव यत् ॥ इज्यते भरत भेषु तं यश
 विद्विराजसं ॥१२॥ विधिहीन मसृष्टं मंत्रहीनं मदक्षिणा ॥ धृष्टा विरहितं यश
 तामसं परिचक्षते ॥१३॥ देवद्विजगृह्णाश पूजनं शौचं र्जवं ॥ ब्रह्मचर्यं महि
 ताच सारीरं तप उच्यते ॥१४॥ अनुद्वेग करं वाक्वं सत्प्रयहितं यत् ॥

तपस्या का सात्विकादि भेद कहनानि मित पेले शरीरादि तीन प्रकारको त
 पस्या क हंछु सुन हे अर्जुन देवता को ब्रांलणको ज्ञान्या मनुष्य तपश्चि इत्या
 दि को पूजा धेष्ट धृष्टाचार आराधना गर्नु स्त्रासादि पवित्र भे र हनु स्त्री पूजादि
 ना सांचा वचन ले हो चित्त को नै प्रकार ले यनि वां गे कटिन न कुतु ब्रं स चै यं
 त मार हनु प्राणिको हिलान गर्नु यति तपस्या शरीर ले गर्न्या हो भनि ह्यो श
 रीर तपस्या हो ॥१४॥ वचन ले गर्न्या तपस्या क हंछु सुन हे अर्जुन वचन ले ग
 या को सुतिकत कसे को चित्त न दुबोस विगार कसे को न कु न्या दुडो कति
 न भया को सांचो वचन सवै को पिभारे गर्न्या सवै को वडिया कु न्या वेद को

पुरुष पशु उ
 तपस्या क
 गर्नु सधे जान
 वर देव न अ
 यष्टव्य का के
 न प्रकार को त
 कतपस्या सु
 ब्राह्मणाई क
 तपस्या कहि

स्वाध्यायाभ्य
 भावसंभुद्धि
 फलाकाक्षि
 क्रियते तदि
 यः ॥ परस्यो

गरुत बडि
 प्रसस्त अन
 तपस्या हं
 राजसना उग
 नाहकतपस
 कोना शगम
 विनै प्रकार व
 शमा शंका

पुत्री पु
गुरु
भैरव
कहं
गुरु
भैरव
गुरु
भैरव

॥१३॥

न
न
न
न
न
न

न
न
न
न
न
न

पुत्रः पुत्रात्तु भयाको वचनेन तपस्या हो मो बाध्यत तपस्या हो भानि कहिं ॥१५॥ मान
सतपस्या कहं सुनहे अर्जुन सधै निमि न चित गहिरावतु गगन देवन गुरु धमे चितना
गुरु सधै जान्या भैरु गुरु अंत्ये न गया को मन लाई बै वि आत्मे मान गाउनु सधै नाई बरो
वर देवन अर्क सित ये वहार गदा निदादि दामाया कनिन राखनु चित शुद्ध गहिरावतु
जल्य काको तपस्या जोह मान सतपस्या भानि कहिं ॥१६॥ शरीर ले वचन ले गयी ती
न प्रकार को तपस्या यनि सत रजस्तम तीन गण का भेद ले तीन प्रकार को कहं ये हे सावि
कतपस्या सुनहे अर्जुन शरीर ले वचन ले मन ले गया को अधिक ह्या को तपस्या वडा भ
ज्ञान गाई कन ते सतपस्या का फल को ईहान भयाको पुरुष ले जो गहिं ह्यो साविक
तपस्या कहिं ॥१७॥ राजसित तपस्या कहं सुनहे अर्जुन सधै जना मन व्यह्न सत्कार

स्वाध्याय भक्त नैव वाध्यत तप उच्यते ॥१५॥ मनः प्रसादः सोम्य तमो तमात्म विविग्रहः ॥
भाव संशुद्धि रित्येत तपो मान स उच्यते ॥१६॥ भूया पर्यात त तवस्त निविधनै ॥ अ
फला काक्षि भि युक्तैः साविकं परि वक्षते ॥१७॥ सत्कार मान पूजार्थ तपो दं भेन वै व्येत ॥
क्रियते तदिह श्रोतं राजसंवल मध्वं ॥१८॥ मूढ ग्राहे नात्मनो यत् पीडया क्रियते त
पः ॥ परस्योत्सादनार्थं वा तत्रात्मन मुदा हृतं ॥१९॥ दान व्यमिति यद्दानं दीयते तु यकारि
णे ॥ देशे काले च यात्रे च तद्दानं साविकं विदुः ॥२०॥

गुरुः बडिया वचन बोला उनु वडो होत यनि मान गहं यो वडो न य सिरहे ह्य भनि
प्रसन्न अ न ईत्यादिले पूजा गहं मध्यात्मा बोला उ भनानि मित मान गया को जो
तपस्या ह्यो तपस्या जोह ई सै क्षण मान वृद्ध्या फल भयाको स्थिर फल न भयाको
राजसना उ गया को तपस्या हो ॥१८॥ ताम सतपस्या कहं सुनहे अर्जुन विना ज्ञान को
नाह कतपस्या आग्रह गहि आत्मा कन मान पीडा दिह जस मन व्यले अधवा अर्क
को नाश गनु भनि गया को जो तपस्या ह्यो ताम सतपस्या कहिं ॥१९॥ दान यनि
विनै प्रकार को ह्ये जे साविक दान कहं सुनहे अर्जुन जो कुरुक्षेत्रादि पुरे दे
श माएं कानि आदि भया का पुरे दिन मा वेद पुरा का शास्त्र पुरा का ब्राह्मण ता

इ. यस्ते मेरे उपकार गयो थो मयति यलूकन दान देउ अथवा दान देउ ये सुवाट के हि काम
 हात लाउ भन्या मन विन गरि दान भन्या को दिमै हो अवस्य भनि जो मनुष्य दिहू ते सुदान कन
 मावि कि दान कहिहू ॥ २७ ॥ राजसीक दान कहंछु सुन हे अर्जुन गुन दान अधियस्ते उपकार
 गयो थो मेने यनि यमै कन दिमै हो भनि दिहू अथवा कर्मका फल को हू छाने कर्मका
 अथवा मादिक कर्मका फल निहू ग्रहरा आदि मा दान गया का अधिक फल निहू भन्या
 लोभने गया को दान दडा कठीन सित मेने यो वस्तु दिभां अवउ प्राप्त का हां या उला भन्या
 मन गरि दान दिहू ते सुदान कन राजसीक दान कहिहू ॥ २९ ॥ तामस दान कहंछु सुन हे
 अर्जुन स्नेहादि घटिया मनुष्य ठे भन्या का कुदेश मांश कानि आदि भन्या का वटिवा
 समय छाडि जेहे मन पयो तसे वेला मा वेद शस्त्रादि नय ह्या का मूर्ख चोर आक्रुति

मनु प्रत्युपकारार्थ फल मुदि रुप बा पुन ॥ दीयते च परि सिद्धं त दानं राजसं स्मृतं ॥
 २९ ॥ च देश काले य दान मया त्रै भ्यश्च दीयते ॥ अमकृतं मवशानं तत्तामसमुदा
 हृतं ॥ ३० ॥ उ तत्ता दानि निर्देशे ब्रह्मण्यो विधः स्मृतः ॥ ब्राह्मणां तेन वेदांश्च यज्ञा
 श्वविहिता मुरा ॥ ३१ ॥ तस्मादो मिमुदा हस्य यज्ञ दान तयः क्रियाः ॥ प्रवर्तते विधा
 नोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनां ॥ ३२ ॥ श्री कृष्णाय ॥

काजा को चर्का को हनि गन्या यस्त आयात्र मा मकार न गरि निमंत्रन गर्नु पाउ
 पूरु पूजा गर्नु इत्यादि ब्राह्मण को चर्चा चार न गरि यल ब्राह्मण को गोत्र यो हो
 रमज गमाव छया हो इत्यादि न बुझि कन दान दिहू ते तामस दान कहिहू
 ॥ ३१ ॥ कसै मायति मंत्र या हि कर्म गर्दा वटि ये ऊँ भनि कहंछु सुन हे अर्जुन
 उ तत्ता न पैं जेल कल्प मा पुरा को यदयो केवल ब्रह्म हो यो ब्रह्म तीन प्रकार को
 देखियो कसै देखियो भनो ला वेदात ब्रह्म जान्या हस्ते देव्यार विन नागर्न ला
 पा कानि न हल ले क्या देव्य भनो ला उ तत्ता न पैं जेल ब्रह्मने ब्राह्मण वेद यज्ञ इती
 न थो कजना या को देव्या ते ल ब्रह्म पद ले ब्राह्मण वेद यज्ञ यल ससार मा प्रकट

रायाकोऊनाले इतीनयद देवि पेदाभयाकाहुनाले मतव गणिऊन रजोगणिमोगणि होइत
 ॥२३॥ उतसत् इतीनयदको माहात्म्ये अर्थयेकयेक गरिहउं उन हेअर्जुन तसर्थ वंल हो
 तसर्थ उं पहिकन वंलजांन्या ब्राह्मण क्षेत्रियने पनिगयाकायशदानतपस्याजनिहउं कदाची
 नजानिकन गयाकोइतापनिशास्त्रेने कल्याकाविधिने गयाजला वटिया फलादिन्याम
 धेइहउं ॥२४॥ दोआपदको माहात्म्ये मुन हेअर्जुन मोक्षकाइछाभयाको प्रबुधने तत्प्रोव
 द कर्मफलकोइछानरावि पहिकन यशदानतपस्या अतु पनिअनेक प्रकारकाशनगरिह
 जानिनजानि गयाका सर्वेसाफल्यईह ॥२५॥ तेआपदको माहात्म्ये मुन हेअर्जुन भयाकापदा
 र्थ ज्यायदार्थमापनि सतुजोपदरहं वटिया इतिभयाको साधु मनुष्यमापनिसजनम
 गृह्यहोभनिकहिह वटिया पुत्रलाई पनि सत पुत्रभनिह जनि वटियायदार्थहउं नतयो

तदित्येनभितंधाय फलंयततपःक्रियाः ॥ दानक्रियाश्चविविधाक्रियंते मोक्षकाक्षिभि
 ॥२५॥ सद्भावैसाधुभावेच सदित्येतत्प्रपूज्यते ॥ प्रशस्ते कर्मणि तथा सद्धदः पार्थगी
 यते ॥२६॥ यशेतयमिदानीनस्थितिः सदितिचोच्यते ॥ कर्मचैवतदर्थीयसदित्ये
 वाभिधीयते ॥२७॥ अश्रद्धया कृतं दर्शनं तयत्तपुं कृतंचयत् ॥ असदित्पूज्यते पा
 र्थ नचतत्प्रेमनोईह ॥२८॥

वंलकल्याकोइ ॥२६॥ केरिमुन हेअर्जुन यशमारयाको स्थितिह तयोपनिसत्
 हो तपस्यामारयाका स्थितियनिसत् हो दानमारयाका स्थितियनिसत् हो य
 तदानतपस्याकोइछागराउत्याजो कर्मह तयोपनिसत् हो अथवा तत्भन्याको
 परब्रह्म तयोवाउत्या कर्मजोह सत् हो भनिजान्या मुनिहरुले कल्याकोइ ॥२७॥
 केरिमुन हेअर्जुन श्रद्धालगाई अग्निमाहोम गयाको ब्राह्मणलाई विनाश्रद्धा
 ले दानदियाको श्रद्धानलगाई रुद्रचाद्रायण गयाको अह्यनि विनाश्र
 द्धाले पूजातयरागदिकर्म गयाको त्योसर्वेअसत् हो भनिकहिह विनाश्रद्धाले
 गयाकोतिकर्मले परलोकमा पुन्याउदेनू कस्तेमिहिनत् सित गयाकाक

मर्त्यं तयानि श्रद्धा न लाई ग या का कर्म यस सत्ता र मा अर्थ धर्म काम यत् ति
नैथोक भानि दिनु सकहे नरु तसर्थ उ न सत्त यो वं स य द को उ चार रा गरि श्रद्धा
लगाई कन ग या का कर्म या वत्तु य स लो क मा यानि प लो क मा यानि सिद्धि दि
व व ठिया ऊ नु यस्को वि व ल्या तो गरियो भ न्या स वै घटिया ऊ नु ॥ २५ ॥ इ
ति श्री भगवत् गीता भाष्या ॥ १७ ॥ यो क ह्या को स व अ ध्या य मा वे द को अ
र्थ ज स्तो अर्थ व ना या को गीता मुनि क न फे र पानि सं न्या स को अर्थ ह ठ ग
रि वृ द्ध ना नि मि त्त अर्जु न वि नि ग र्द न हे महा बा हो हे हृ वि केश हे के सि
नि मू द न सं न्या स को अर्थ क्वा हो ते स सं न्या स प द को अर्थ ज स्ता को

इति श्री मद्भगवद्गीता मुनि वत्सु वं स वि ध्या यां योग शास्त्रे श्री कृष्ण
र्जु न सं न्या दे भीष्म पर्वणि गुण कर्म श्रद्धा विवेक योगो नाम सप्त द शो
ध्या यः ॥ १७ ॥ अर्जु न उ वा च त सं न्या स स्य महा बा हो त त्व मि द्वा मि
वे दि तुं ॥ सा ग स्य च हृ वि केश दृ थ क्से शि नि मू द न ॥ १ ॥ श्री भगवा
उ वा च ॥ का म्या रा णां क र्म सा न्या स सं न्या स क व यो वि दुः ॥ सर्व क र्म

त स्तो वृ द्ध ना को ई द्वा भ यो म ला ई आ शा गरि व क्तु हो ला ॥ १ ॥ अर्जु न
ले वि नि ग या को मु नि क न भ ग वा न् आ ग्या ग र्द न हे अर्जु न को हि तां न्या य
डि त ह र्क का म क र्म को त्या ग ग नु अ भ मे धा दि य ज नो द नु लो ग र्द न
उ सं न्या स भ न्या को त्यो हो भं द नु सं न्या स प द को अर्थ ते हि व ता उ द नु
अ न वि च क्षा ण व डो वृ द्धि भ या का च तु र मु नि ह र्क संपूर्ण नि मे नो मि त्त
जो जो क र्म गरि द नु ति क र्म का फल को त्या ग ग नु शरी रे मा र ह्या का
फल द नु य स क र्म ले रो गा दि न वृ ह उ नु म व डो हो आ यु र्द वै धो
न मे री जी त ह र्क त्वा प्र च हे ध यो ई त्या दि क र्म का फल संपूर्ण

फलिदिनु ईछाकति नरावनु जो छत्तागभयाका पदको अर्थ बताउं छत्ता येमले क्या
गुहियोभया कर्म गदेन गर्नु संन्याम हो कर्म गर्नु फलको ईछा नगर्नु त्याग हो ॥ २॥
त्यागपदको अर्थ मायनि सांख्यको रमीमांसको भिन्न छैन जुन हे अर्जुन यकै सांख्य
योगमालाग्याका जोगि हरु जो छत्ता संपूर्ण जो कर्म गर्छन् फल रूप दोषको ये डाग न्या
ऊन तेमनिमित्त सत्ता र छोडन ईछा भयाका मुनिले कर्म छाडि दिनु भदर अरुमीमा
स कामत मालाग्याका मुनि हरु यज्ञगर्दी दानगर्न छादन भदर ॥ ३॥ भगवानले यको
मत बताई कन आहुनि भय जो मत आशा गर्छन् हे भारत र्व भय त्याग गर्नु भया कामत

फल त्यागं प्राकृत्या गंविचक्षणाः ॥ २॥ त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राकृत्यमनीषिणः ॥
यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं मिति वायरे ॥ ३॥ निश्चयं भृशमेतन्न त्यागे भारत सतम ॥
त्यागे हि पुत्रव्या प्रन्निविधः संप्रकिर्तितः ॥ ४॥ यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कर्म मेव त
त् ॥ यज्ञोदानतपः श्रेय पावनानि मणी विरां ॥ ५॥ एतान्यपि तु कर्माणि तगं सत्का

मावडो वित्त भयाका निश्चय जो छत्ता निति मि मुन हे उरु ब व्याघ्र मावत्पुन्य माति हति नि
हे अर्जुन त्याग गर्नु जो छत्ता यो यनि तीन प्रकार जो छ भनि शास्त्र मा क ह्या को छ ॥ ४॥ त्याग
गर्नानि यम कहं पु पुन हे अर्जुन यज्ञ भयो दान भयो तप त्या भयो यत्ति कर्म कदा
भीत यनि न छाडु अवस्य गर्नु ईतीन कर्म जो छत्ता फलको ईछा न राखन्या मनुष्य का
वडा य विवदर वित्त लुट्टि गरिंछ ॥ ५॥ कलु प्रकार सित ग या प पि ई छत्ता तिकर्म भनो
ला पुन हे पार्थ यावत् कर्म छत्ता तिकर्म मा अधिक गरि ला गिन र हत् फलानु कर्म गर्नु वा
रिन न गरि क्छा छैन तेस्मा यत्ति दो लथ उदेन यत्ति मि हिन तन गरि क्छा छैन यत्तर ह
को अधिक प्रीति कमे मात गर्नु आफु ता अपि वाट सामिल हुनु आया का वस्तु ले आ
फलावर्कत ले वा त्यामादिक गरि यज्ञ दान तप त्या कर्म गर्नु परतु कर्म का फल को मा
न ईछा राखेन न राखनु आरंभ गन्याका कर्म मावडो श्रद्धालु गाई हामिले कर्म गर्ना

कुरु भवि मैले कथा को ईत्यादि शास्त्र को विचार गरि कहि आया का कर्म गर्ह न हो ५
 न ॥ ६ ॥ विना ज्ञान ले कर्म त्याग गया को कस्तो हो भनौ ना मुन हे अर्जुन नित्ये कर्म त्या
 ग गर्ह संन्यास होईत तसर्थ ध्यान संध्या तर्पण वनि वैश्वदेवादि कर्म कदाचित्
 पानि त्याग न गर्ह नित्ये कर्म नेयति शरीर य वित्र ऊं छ चित्त पुं छ रहं छ को हिम
 उष्य पूर्व भै कन कर्म त्याग गया मोक्ष ऊं छ नित्ये कर्म को त्याग गया भया
 त्योता मसना म त्याग हो छटिया योति माले जा न्द ॥ ७ ॥ ध्यान संध्या तर्पण
 वनि वैश्वदेवादि नित्ये नैमित्तिक कर्म वडा ५ स्वदिन्या छद् शरीर लाई वडा
 पीडा ऊं छ भवि जो मनुष्य कर्म छा ५ द छ त्यो राजसनाम त्याग हो मोक्ष ग

फलानि च ॥ कर्तव्या नीति मेयार्थ निश्चितं मतं मुत्तमं ॥ ६ ॥ नियतं स्य तु सं
 न्यासः कर्म रोगो नोपययते ॥ मोहात् तस्य परित्यागः स्नामस्य परिकीर्ति
 तः ॥ ७ ॥ ५ स्वमित्येव यत्कर्म काम्य क्लेश भयात्पजेत् ॥ सकृत्त्वारजसं
 त्यागं नैव त्याग फलं लभेत् ॥ ८ ॥ कार्ये मित्येव यत्कर्म नियतं क्रिये
 तेर्जुन ॥ संगं त्यक्त्वा फलं चैव स त्याग सात्विको मतः ॥ ९ ॥ न द्वेष्ट कश्चन

रा ३ त्या जो त्याग को फल हो त्यो फल मनुष्य पाई दे न ॥ ८ ॥ हे अर्जुन जो म
 नुष्य कर्म न गरि ऊं दे न अवश्य गर्है ऊं न भया यल बुद्धि ले नित्ये ध्यान सं
 ध्यादि कर्म गर्है कर्म ले मात्र मोक्ष ऊं ला भया हेतु न द्वादि कर्म का फल छा
 दि नित्ये कर्म माना गिर हनु फल को ई दान राखनु जो छ त्यो सात्विक त्याग
 हो तेम त्याग ले मोक्ष ऊं छ ॥ ९ ॥ कर्म का फल को र कर्म का संग को त्याग गया
 सत्व गुण का मार्ग मारणा को जो मनुष्य छ यत्तो ऊं न ले त्यो मनुष्य मेधा वि
 बुद्धि मान् कहला उं छ कस्तो त्यो मनुष्य यत्कार्ये ले मोक्ष ऊं छ भन्या नि श्व
 य भया को चित्त मा कति सन्देह न भया को त्यो मनुष्य जो छ सत्कार मान नि
 का कर्म गया को देखा पा होय गर्है न न क्वा निमित्त भनौ ला काम्य क

मंजोहन् सत्कारवत्ता उनातिमित वनायाका कर्म सत्कारमागियो सोवडो आश्रये होइन्.
भन्पाहेतले. ईकर्मगर्ना होइन् भनिभदेनन् तिजाया मुनिहन् तिचनेमिक्तिक वडियेकर्म
मायविमोक्षकोसाधनभयाका निर्मलज्ञानभयाका कुनाले लागिरहनेनन् ॥१०॥ हेअ
जुनयनसत्तामाजलमनुष्यका मेराशरीरुडवलायो मलाईभोकलाग्यो जाडोभयोगार्मि
भयो. ईत्यादिशरीरको अभिमानभयाको जो मनुष्यह सो मनुष्य यो सत्ताका कर्मकाड
नसत्तेनन्. तस अर्थजो मनुष्य कर्म गतिकर्मका फलकाडदह सो मनुष्य त्यागिवोला
उह अर्थात् सत्तामाजन्मभयायदिभोकत बाजाडो गर्मि ईत्यादि सहन कठीनह. सो
सहनतसकदा कर्मन गरि कुदेन तसर्थ गयाका कर्मको फल त्याग गर्नु त्यागिवोला

कर्म कशलेनानुसज्जते ॥ त्यागितत्वसमाविष्टो मेधावी द्विनसंशयः ॥१०॥ नहिदेह
भतासक्यं त्यक्तं कर्मरापशेषतः ॥ यत्तु कर्मफलत्यागि सत्तागीत्यभिधीयते ॥११॥
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मरा. फलं ॥ भवसत्तागितां प्रेक्ष नमु संन्यासिनां क
चित् ॥१२॥ पंचेमानि महाबाहो कारणातिनिबोधमे ॥ साखे कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्ध
ये सर्वकर्मरा ॥१३॥ अधिस्थानं तथाकर्ता करणं च पृथग्विधं ॥ विविधाश्च पृथक्

उह संन्यासिवोला उह ॥११॥ कर्मका फल कम्ताईहन्. सुनहे अर्जुन अनिष्टयेक
ईष्टेष्टो मिश्रभन्याको तेषो तीन प्रकारका कर्मईहन्. अनिष्टभन्याको मरीकन. न
एकमायहिन्मा. फेरिजिन्मनिदा तेईहो हिडत्या. पशू पक्षिका घटिया योनिमाजन्म
कन्या अनिष्टभयो. ईष्टभन्याको मरिकन स्वर्गमायुगिन्त्या स्वर्गमायुगिसु. खभोगग
रिकन देव योनिमारहन्मा ईष्टफलभयो. घटिया वडिया वरोवरभयाको सुखडु. ख
उवैभोगगर्नु यन्या. फेरिजिन्मनिदा मनुष्यका योनिमाजन्म कन्या मिश्रफल हो. ईकर्म
फल तीन प्रकारका यनिजो कर्म मार्गे माहन्. आत्मकनन जान्या निर्मलज्ञानन कन्या
नभयाका संन्यासि कुनन सकाकातिन हन् मरिकन ईतीन कर्मका फलको भोगग
हन्. आफुले कर्म गया अनुसा घटिया वडिया माहा फल पाउन्. संन्यासिहन्
काम. कदाचीत् यनि घटिया वडिया माहा कोनै फल यनि भोगगर्नु पदेनन्.

॥ मात्मा कन जाति निर्मल शान कृनाले ॥ १२ ॥ कसे साक्षात्कार आत्मा जात्या निर्मल
 बुद्धि भया काले यनि कर्म छडि सकनु देन मुन हे अर्जुन संपूर्ण कर्म त्याग ग
 ॥ पर्णा शारव्य योग मा संपूर्ण कर्म का सिद्धि निमित्त वेदात्त मायनि कर्म स
 माप्ति गदा यनि जुन यांच कर्म न गरि देन ति मवता उडु मुन निमि ॥ १३ ॥
 कर्म गरा उभा यांच कारखाने चेत रहत्या जगता भयो यो कार्ये न गरि
 भयत भति विज्ञा न व सा लनु मर्छ जल लेन गरि न कृत्या यस्तो हस्त
 पादा दिले युक्त भया को मलाई दुःख भयो सुख भयो भति चाल पा उभा
 उद्व कर्ता बोला उछ लोकता भयो शब्दादि मुनि त्या भयो देखि त्या क
 र्ण भयो तो यनि फलानु कर्म न गरि देन ईत्यादि पात क मुनि यो

देष्टा देवंचैवान पंचमं ॥ १४ ॥ शरीर वा स्र ना भिर्यत् कर्म प्रालभते न
 रः ॥ त्राज्यं वा विपरीतं वा पंचैते तस्य हेतवः ॥ १५ ॥ तत्रैवं सति कर्तार मात्मानं के
 वलं तु यः ॥ पश्यन्म हत बुद्धिवा न शय्य श्पति दुर्मतिः ॥ १६ ॥ यस्य नाहं कृतो भा

देखि आयो करो को नियो ईत्यादि पात क मुनियो कर्ण भयो अन्यानि वा यु
 वाय भया को प्राणा अपान उदान व्यान आदि भया को वायु को वाय्या व ह्म
 हिड्या मुत्र विष्ठा गर्भा ईत्यादि व्यवहार भया यांचै देव भया सूर्य अग्नि
 जल ईत्यादि पांच संसार का कर्म गरा उभा कारणाई छ ॥ १४ ॥ यो कर्मा
 को कारणा जुन कर्म को ईछति मुन हे अर्जुन मनुष्य जो ह्म शरीर ले भयो कवन
 ले भयो मन ले भयो संसार मा माय कर्म भयो अन्याय भयो जीव वचा
 उता निमित्त घटिया कर्म यनि जो गरि छ अधिक श्लोक मा क ह्मा का या
 च कारणा ह्म ईतीन प्रकार का कर्म गरा उभा कारणाई छ ॥ १५ ॥ हे अ
 र्जुन चित्त मा ठे गना गरि कर्ता तया र भै हात पा उवचनादि चलाई आंवा
 कात ईत्यादि ले देखि मुनि कर्म गर्ना वेर यनि न गरि घटिया कर्म जो

गर्ह्यो मनुष्य मैले कर्म गयां भंडन आकर आत्म कर्म गन्तव्य उर्द्ध मेरा जतिको
गर्ह्य भन्ध को हिन गन्तव्य निर्मल शुद्ध आत्मा हो भनि ज्ञान नभया को तो मनुष्य वेद वे
दत धर्म शास्त्र ले स्वधिया को ते स्को बुद्धि हो तो मनुष्य उर्द्ध मेरा जतिको
को हो आत्मा कर्म साक्षात् काल देवेन ॥१६॥ वडिया बुद्धि भया को को हो भनौ ला
सुन हे अर्जुन शास्त्र को मार्ग गुह्य ले उपदेश गरि बुद्धि शुद्ध चित निर्मल भया को मनु
ष्य को कर्म गन्तव्य भे जनु भन्या अहंकार भया को स्वभाव जनेन जस मनुष्य को
बुद्धि मैले कर्म गयां यत्कर्म को फल स्वर्ग नर्क जो होला सो मैले भोग गर्नु पर्यो ह्म
नचित जनेन ते स मनुष्य लाई कर्म लिपि देन यस ससार मा कसे लाई मापोता

को बुद्धि रस्य न लिप्यते ॥ हवापि स ईमा लोकान् न हति न निवध्यते ॥१७॥ ज्ञानं श्रे
यं परिज्ञाता त्रिविधा कर्म बोधता ॥ करणं कर्म कर्तृ त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥१८॥
ज्ञानं कर्म च कर्तृ च त्रिविधे वृणोते ॥ प्रोच्यते गुण संस्थाने यथा वदुः शतानिपि
॥१९॥

पनि सत्मारि नजर ले माया को देखि योता यनि दिव्य दृष्टि ले ते स ले माया को उह
देन ते ल पात क ले तो संन्यासि वाधि देन ॥१७॥ अधिष्ठादिकारण ले कार्य को
आरंभ गन्तव्य प्रकार कहंछ सुन हे अर्जुन ये ले यावत् वस्तु को ज्ञान गर्नु वडिया
गरि बुद्धि वाहिंछ फेरि कृत वस्तु कस्तो हो उह राउनु वाहिंछ योग न्यो ह्यत्पका
र ले गरि न्याह भन्या ज्ञान वाहिंछ यो तीन प्रकार जोह कर्म गर्नु वाहिंछ भनिल
गठन्या ऊँह कारण भयो कर्ता भयो कर्म भयो यो तीन जोह न संपूर्ण कर्म
को संग्रह गर्ह्य करण भन्या को चाक बाणि पाद पायूपष्ट भोजन वस्त्र चक्षु
जिह्वा श्राण यो दश इन्द्रिय भन्या अन्न कर्माशुद्ध ये गाह भन्या बुद्धि भयो ई
त्यादि ले कार्य को निश्चय गरि गन्तव्य हो भनि उह राया को कार्य कर्म भनिंछ तो
कर्म पनि चार प्रकार को ऊँह ये ले उत्पन्न भन्या को आकरा फेला पया को हो

श्री कार्ये गरियाको ते श्रो समाप्ते गरि प्रतिष्ठा गन्पाको चौथो चार प्रकारको
यके कर्म ऊँ छ कर्त्ता भन्पाको यनि जो ईन्द्रियादि करण छन् त्यो हस्त या दा
दि चलाई कर्म गर्पा कर्त्ता हो यो तीनले गरि कार्येको संग्रह ऊँ छ यो ती
न मायेक न भन्पा यनि कार्ये सिद्ध हुने न ॥ १८ ॥ क्रियाकारक फल ज्या
वत् छन् सवै सत्त्व रजतम तीन गुण ले युक्त भन्पाका हुनाले तीन गुण
को भेद कहन्छन् मुन हे अर्जुन ज्ञान भयो कर्म भयो कर्त्ता भयो ईती न जो
छन् सत्त्व रजतम यो तीनका भेद ले तीन प्रकारका ऊँ छ जस्ताको तस्तो
गरि गुणको कर्म ले गराना गरि कहन्छु मुन तिमि ॥ १९ ॥ सात्विक ज्ञान

सर्व भूतेषु येनैकं भवमव्ययमीक्षते ॥ अविभक्तं विभक्तेषु तत्ज्ञानं विधि
सात्विकं ॥ २० ॥ पृथक्त्वेन तु यत्ज्ञानं नानाभावात् पृथग्विधान् वेत्ति स
र्वेषु भूतेषु तत्ज्ञानं विद्धि राजसं ॥ २१ ॥ यत्तु हृत्पदं कस्मिन् कार्ये स
क्तमहेतुकं ॥ अतत्त्वार्थं द्रव्यं च तन्नाम समुदाहृतं ॥ २२ ॥ वियतं संगरहि

कहन्छु मुन हे अर्जुन ज्ञान ले संपूर्ण भूत प्राणिमाया वत् स्थावयर्थे त आ
दिसंता माके ले नाशन हुन्पा आकाश जस्तो येक आत्मा सर्व वस्तु पित भ
याको देव दह भिन्न भिन्न शरीर मा अनेक जात मा यनि वरोवर उहि आ
त्मा देखत छ त्यो ज्ञान सात्विक ज्ञान भनि जान ॥ २० ॥ राजस ज्ञान कहन्छु मु
न हे अर्जुन ज्ञान जो द्रव्य प्राणि जो द्रु भिन्न भिन्न वस्तु कन वृक्षादि स्था
वर यर्थे त का भूत प्राणि हकन भिन्न भिन्न देखत छ आफ्ना शरीर मा
येक आत्मा अर्को का शरीर मा अर्को आत्मा देखत छ ते सज्ञान कन राज
स ज्ञान भनि जाना ॥ २१ ॥ तामस ज्ञान कहन्छु मुन हे अर्जुन यके कार्ये मा
यके शरीर मा संपूर्ण मांया हस्त या दादि शरीर जो छ मा हो यहि हो
भनि शरीर लाई केवल पार्थका प्रतिमा जस्तो मांया यस शरीर
देखि बाको हि छैन यस सत्ताको गर्पा गरउन्पा कारण कर्त्ता यनि

सोहिछैन जोईहमिहो शास्त्रियअर्थनपाईकनवधठिपिगर्भासूठआत्माभयाको
योप्रणियत्तोहोभनिजान्यायस्ताज्ञानकनतामसरांनभनिजानतिमि॥२३॥ती
नप्रकाकाकर्मसासात्विकिकर्मसुनजुनकर्मसाफलकोईछानराधिकनयसस
सासाकर्महोकर्मदेखिअर्कोकेहिरहेनछभन्यायस्तोआसक्तनभैकननगरि
नकृत्यानिसेकर्मरागद्वेषछाडिकनगयाकोकर्मसात्विकभनिजान॥२३॥राज
सकर्मसुनहेअर्जुनजुनकर्मफलकाईछालेगारिहवडोअहंकारभैकनगयाको
आडम्बरवडोगारिवडोमत्कतलगाईअन्नकर्णकोअध्वारोरिगारिगयाकोकर्म
राजसहोभनिजान॥२४॥तामसकर्मसुनहेअर्जुनकर्मगारिसक्यापद्धियत्प्रकार

तसरागद्वेषतःकृतं॥अफलप्रेमुनाकर्मयतत्सात्विकमुच्यते॥२३॥यत्तुकामेयु
नाकर्मसाहंकारेणवापुनः॥क्रियतेवकुलायासंतद्राजसमुदाहृतं॥२४॥अनुव
धक्षयंहिसामनयेक्षययोह्यं॥मोहादारभ्यतेकर्मयतत्तामसमुच्यते॥२५॥
उक्तसंगेनहंवादीधृत्पुत्साहंसमंचितः॥विध्यमिध्वोनिर्विकारःकर्तासात्विक
उच्यते॥२६॥रागीकर्मफलप्रेमुलुक्षुहिसात्मकोऽभिविः॥हर्षशोकान्वितःकर्ता
राजसःपरिकीर्तितः॥२७॥

तितकर्मगयाकोभयाफलमिल्यारहेछभनिजान्यापराक्रमकोधनकोमानक्षय
कृत्याअनेकहिसाकृत्याप्राणिलाइवजोपीडाकृत्याआक्रासामर्थकोयनिकेहिवि
वानगर्भाभेरोयसामर्थहयसैमाफिककोकामगहंभयाविचारनगरिअज्ञान
लेआरंभगयाकोकर्मतामसभनिह॥२५॥तीनप्रकारकाकर्तासासात्विककर्ताक
हंछुसुनहेअर्जुनजुनप्रवृत्तिसेनेमित्तेकाकर्मकाफलकोइक्षाराखैनअहंकारका
करागहैनधैर्येलेउद्यमलेयुक्तभयाकोचंचलकत्तिनभयाकोआलस्यपनिन
भयाकोकार्येसिद्धभयापनिहर्षनभयाकोकार्येसिद्धनभयातायनिविस्माद
नभयाकोलोकर्ताप्रवृत्तिसेसात्विककहेछ॥२६॥राजसकर्ताकहंछुसुनहेअर्जुन
कर्ममावडोआसक्तभयाकोसिद्धगारिनसकृत्याकर्ममायनिलागिरहयाकर्मका
फलकोइछाभयाकोपात्तिपाद्व्यमालोभभयाकोपात्रअनुसाकार्येअनुसा

द्वयदानगर्जनमकन्या प्राणिलईवडोयीडादिन्या अशुविभैरहन्मा अलिकतिका
येतिद्वभयायनिवडोहर्षगर्मा अलिककेहिविग्योभन्यायतिवडोशोकगर्मा
त्योप्रवृजोह्मराजसकर्ताभनिह् ॥२७॥ तामसकर्ताकहंछु सुनहे अर्जुनचिन
ठिगानामानभयाको येकक्षेराभायेकतरहभयाकोनपुग्याकामकोरेरि
गर्माजगलिबुद्धिभयाकोवडोठाडो कोइदेवियनिनम्रितनभयाकोवडो
धादुनगयाको करापनिमेलेयतिगयांभन्या अर्काकनजुशउन्माव
जेअस्ती गर्नुपर्माकामयनि सचिरावन्मा लधैकावाउं कालाउंभदे
रहन्मा मेरेवेलेसिधिन्याकामयनि छेरेवेरलगाउंमा यत्ताप्रवृजोह्

अयुक्तः प्राकृतस्तद्धः शठेने कृतिकोलसः ॥ विद्यादीर्घसूत्रीच कर्ता
तामसउच्यते ॥२८॥ बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुरातरि श्रीविधंष्टरुड ॥ प्रोचमान
मशेवेरा पृथक्त्वेन धनं जय ॥२९॥ प्रवृत्तिचनितृत्तिच कार्याकार्येभ
याभये ॥ बंधं मोक्षं च यावेति बुद्धिः सा पार्थ सात्विकि ॥३०॥ यथाधर्ममध

तामसकर्ताकहिह् ॥२८॥ हेधनं जय योतीन गुराले गरिबुद्धिभयनितीन
भेदकुंछन् तमेधैर्यपनितीनभेदकुंछन् योतीनप्रकारकोभेदविस्तार
गरिकहंछु येकयेकगरिगुनतिमि ॥२९॥ तीनप्रकारकाबुद्धिमासावि
कबुद्धिकहंछु सुनहे अर्जुन शास्त्रलेकह्याकामार्गयाहो योकार्येअ
कार्येहो यत्माह्मेन यत्माडावडोह्मनगर्माहो यत्कर्मलेवधन
पर्माह्मसत्ताभाजन्मर्नपर्माह्म यत्कर्मलेमोक्षकुन्याह्म भनिजुन
बुद्धिलेदेवदह्मोसात्विकबुद्धिहो ॥३०॥ राजसिबुद्धिसुनहे अर्जुनउ
द्धिलेयोकार्येशास्त्रलेकह्याकोह्मगयादेविधर्मकुन्याहो योशास्त्र
लेनगर्नकह्याकोह्मगयादेविपातकलाग्याह्म ईकार्येगयायरम
बडियाकुन्याहो योकार्येगयापामघटियाकुन्याहो नगर्माकुन

भनिविश्वयठहराउनुसकैत. त्यो राजबुद्धि हो भनिकहिं ॥ ३१ ॥ तामसबुद्धि कहंछु
 जुनहे अर्जुन जुनबुद्धि अधर्म लाई धर्म देखे नगर्न्या कार्ये गर्न्या कृत भन्या जसो
 सादछ जुननगर्न भन्या उहिकर्म गर्नु ठहराउंछु अन्धनियावत पदार्थ साविवल्या
 तो गछ अंधकार जसो अज्ञानले छोपिया को जो बुद्धि छ त्यो तामसबुद्धि हो ॥ ३२ ॥
 तीन प्रकार का धृति सा सात्विक धृति जुनहे अर्जुन धृति से मन का चेष्टा प्राण का
 क्रिया इन्द्रिय का क्रिया धारण गर्छ त्यो पनिकसो भनौ ला जुनहे पार्थ मन जो छ च
 पलन गरई कनशास्त्रिय क्रिया वडिया मान्या गरई बुद्धि मालगई राखे शा
 स्त्रिय करवोलनु पवित्र पदार्थ मान्यवानु वडिया जगमा मान्यवानु वरुईत्य

र्मच कार्ये वा कार्ये मेव वा ॥ अथवा त्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसि ॥ ३१ ॥
 अधर्म धर्म मितिया मन्यते तमसा वृता ॥ सर्वार्थानु विपरीतांश्च बुद्धि सा पार्थ ताम
 सी ॥ ३२ ॥ धन्या यथा धारयते मनः प्राणोन्द्रिय क्रियाः ॥ योगेनाव्यभिचारिणा
 धृति साः पार्थ सात्विकी ॥ ३३ ॥ यथा नु धर्म कामार्थानु धृत्या धारयते र्जुन ॥ प्रस
 र्गेन फलाकांक्षि धृतिः सा पार्थ राजसी ॥ ३४ ॥

दि प्राण का कृया संवर्ण शास्त्रे सा माग्ना का इन्द्रिय गरई सुष देषि फर्की ई परमा
 त्मा सा चित्त लाग्या को वडिया मान्या यावत इन्द्रिय लाई तुल्य उन्मा मे माला गिर
 ला का यत्ने धृति जो छ सात्विकि धृति कहिं ॥ ३३ ॥ राजसि धृति जुनहे अर्जुन जु
 न धृतिले धर्म भयो काम भन्या को सुख भोग भयो अर्थ भन्या को संयति भयो ई
 तीन प्रवृत्तार्थ अवल्य गर्न्या कृत भन्या धारण गर्छ न धर्म को प्रसंग मा फल को
 ईक्षा गर्छ त्यो धृति जो छ हे पार्थ राजसि भनिकहिं ॥ ३४ ॥ तामसि धृति कहंछु
 जुनहे पार्थ प्रवृत्त कन अज्ञान गरई न्या जुन धृतिले सुनिरहनु स्वप्ने को दिवा
 गर्नु भन्या चित्त गरई छे मुन कर्म बाधो उते मा द देषा ई दिं छे अनेक मुनी चि
 त्त मालगई दिं छे तभे अंधारो मुख गरई दिं छे मजसो मुख को हिं छे न भन्या
 मानव ठाई दिं छे चित्त मा अज्ञान के ले न छु ताई दिन्या त्यो धृति जो हो तामस हो

भनिकहिं॥ ३५॥ तीन गणका प्रकारले सुषयनितिने प्रकारक नुनहे भर
 तर्षभ अवातिमिलाई तीन प्रकारका सुषमकहंछु चित्तलगाइक नुन जुन
 सुषजानिकन अभ्यासलगाई ग्या प्राप्त उस सुषमा चित्तलाग्यायहि दुःख
 छुदछुन॥ ३६॥ तीन प्रकारका सुषमा सात्विक सुष सुनहे अर्जुन ये
 तेवडा दुःखले गरिमायहिवाट अमृतजसो ऊपातियनिकन भनौला स
 माकास्त्रिपुत्रादिमितका सुषकन दुःख ठहराई परमार्थसाधन ऊ
 प्या सुःखजो छन येने गर्दविषजसो ई सुषले मारिहालला जसा य
 छिवाट भन्या नयाई सकन अमृतजसा परमात्मा मालाग्याका बुद्धि

यमात्प्रभयंशोकं विषादं मदमेव॥ नविमुंचति दुर्मेधाधृतिः सा पार्थ
 तामसी॥ ३५॥ सुखं विदानीं त्रिविधं भूमे भरतर्षभ॥ अभ्यासादमते य
 न दुःखानं च न्यिच्छति॥ ३६॥ यत्ततः प्रविषमिव यरि नो मे मृतो यमां॥
 तत्सुखं सात्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादनं॥ ३७॥ विषयेन्द्रियसंयोगात्
 तदग्रे मृतो यमां॥ यरिणामेविव तत्सुखं राजसस्मृतं॥ ३८॥ दुःखं॥

कन वडाई दिना जो सुषह त्यो सात्विक सुषहो॥ ३७॥ राजस सुष सुनहे
 अर्जुन विषयभन्याका सुषको र्इन्द्रियको संजोगभै भयाकानियानुशी
 तलमशिठ यस्तो अनेक प्रकारको नयाई सकन अमृतजसो लाग्या
 कति ग्यायनिन अद्याईन्या सुष गरिस्त्रयायहि वीषजस्ता तेजवु
 द्विलघटाउन्या त्यो सुषजो छ राजस नाउं ग्याको सुषहो॥ ३८॥ तामस
 सुष सुनहे अर्जुन सुष अधिवाटयनि गरिस्त्रयायहि आत्मकन अध्यासे
 गरउं न्या अज्ञानकन वडाउं न्या वेषवरभै मत्तगरउं न्या निद्रावाट आ
 लस्यवाट मयसोई भन्या अहकारवाट सुनभ्याका सुषजो छता

ममभनिं॥३८॥ हे अर्जुन जो यत्तु धिमा मनुष्य आदि भयाका हनु भनिंया
 भूत प्राणिना स्वर्ग विषय यावत् देवता मायनि को हिये कपति प्रकृति देवि भया
 का यो सत्वरजतमतीत गुणले छोडि दिया को तीन गुण शरीर मान भयाको को
 ह भनोला को हियेन ॥४०॥ ई. मायाका गुणले वाधिया का को हिरहेन हक प्र
 कारले मोक्ष ऊं ह भनोला गुण चको प्रकार कहं ह हे परतय प्रांल राक्षेत्रि वैश्य
 भू प्र चारै जात का जतिकर्म ह ईश्वर कि निर्गुण माया ते स मायाका गुणले स
 पूर्ण वाधिया का हनु गुण आफ्र आफ्र कर्म मलाग्या प्रात परमात्मा कन याउ
 हनु ॥४१॥ प्रांल राको कर्म जो हनु हे अर्जुन वाहीर का ईदिय हात मुख आवा

मद प्रेवानु वंधेव सुखं मोहत मात्मनः ॥ निद्रा लस्य प्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतं ॥३५॥
 न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः ॥ सत्तं पृथुति जै मुक्तं यदेभिः स्यान्निभिर्गुणैः ॥४०॥
 प्रांल राक्षेत्रि या विशा भू प्रा रां वयं रंतया ॥ कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभाव प्रभवे गुणैः ॥
 ४१॥ समो दमस्तयः शौच क्षाति रजव मेव च ॥ ज्ञानं विज्ञान मास्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्व
 भावजं ॥४२॥ शौर्य तेजो धृति दक्षं युद्धे चाय्य यत्नायनं ॥ दानमीधर भावश्च क्षात्र कर्म
 स्वभावजं ॥४३॥

कान ईत्यादि वस मारा बि सवै भूत प्राणिमा वरो वर मानु सम भयो अत कर्ण कन आ
 ता देवि पर जान नदिनु जा ते को विचार गुं दम भयो कहु चान्द्रा यणादि गदें शरीर
 लाई सुख नदिनु तय स्या भयो वाहिर शरीर आनादि पवित्र भैर हनु अत कर्ण मा
 पति राग द्वेष फल भगवान को नाम स मुहि मन कन पवित्र गराई राखनु शौच भ
 यो सवै प्राणि मोक्ष गराउनु क्षाति भयो सवै सवै देवि स्व शो भैर हनु अर्जव भयो
 शास्त्र लेक ह्या को ज्ञान मात्र ज्ञान हो भन्या उमे ज्ञान मार हनु ते मे ज्ञान को विचार
 गुं परमात्मा मा विन लगानि श्रय बुद्धि वेद मा प्रांल रा मा देवता मा श्रु ल
 गाई भक्ति गुं आत्मिका ता भयो यतिकर्म जो हनु ब्रह्म कर्म को स्वभाव ह ते स

स्वभावदेविभयाकाङ्क्ष पूर्वजन्मका कर्मदेवि उत्पन्न ईदृश ॥ ४२ ॥ क्षेत्रियको
धर्मदेवा उच्छुन्न हे अर्जुन मूर्ख तु कसे देवि न दर्तु मोर्षे भयो जस्का शरीर
का तेजले टाठे मायति पो लोम् त्यो तेज भयो कसे विपत्ति मायति धैर्ये भैरु
स्वमानुष्यति भयो जुन कार्ये आई प्रणो त्यो कार्ये जाने न भंनु सधै देव्ये
जसो गये जसो गति च नुरकु पूर्व भै न रहनु दक्ष भयो युद्ध माग यामा
पति कदाचित् न भागनु पात्र हेरि समय का विचार गति देश बुद्धि पूर्य स्थानमा
दान गर्नु सवै भद्रा वडो बुद्धि वडो वल वडो अर्थ वडो तेज के हि कुरा मायति
आफू जतिका को हिन हउन् अथवा आफू भक्तिले सेवा गर्ना हउ कन सवै तरह

कविदातिज्यगे रक्षं वैश्य कर्म स्वभावजं ॥ परिवर्त्यात्मकं कर्म भूद्रत्या विश्व
भावजं ॥ ४४ ॥ स्वेच्छे कर्म रापभिरतः समिद्धिं लभते नरः ॥ स्वकर्म निरतः सिद्धिं
यथा विन्दति तच्छुभा ॥ ४५ ॥ यतः प्रवृत्तिं भूतानां येन सर्वमिदं ततः ॥ स्वकर्म

ने शरण लिनु ईश्वर भाव भयो यति क्षेत्रिय का कर्म पूर्वजन्म का स्वभाव ले
उत्पन्न ईदृश ॥ ४३ ॥ वैश्य को रभूद्र को कर्म सुन हे अर्जुन वेति गुण अनेक
वैश्या र्गु हाति घोडा भै सिवा प्राभेडा ईत्यादि यशू को या जना गुण वैश्य
का पूर्वजन्म का स्वभाव देवि उत्पन्न भयाकाङ्क्ष ब्रह्म क्षेत्रिय वैश्य ई
तीन जात को सेवा गर्नु इन जात ले भन्या को मान्य भूद्र का पूर्वजन्म का क
र्म को स्वभाव ले ॥ ४४ ॥ इने चार कर्म जो छनु आफू जात मा रान वठाउ
न्या छनु ब्राह्मण क्षेत्रिय वैश्य भूद्र ईचा जात का कहि आया का ई चार
कर्म आफू आफू कर्म मा प्रति लगाई वडा प्रज्ञाल गाई वडा प्रज्ञा सिद्धि
आफू जात को कर्म गर्ना मनुष्य जो छ वठिया सिद्धि कन पाई छनु कत्तो
सिद्धि पाई छ भनोला आफू जात को कर्म जस्य कारणे गरि न्या छनु तस्य का

लेगया
नभैरहे
आफू
गरीधर्म
को घटि
प्रपूर्वज
नाश कु
भयाको
हे जात

ज्ञानम
त्रिपतं
दोवेरा
परमा
यति
जसे
४७।
माप्री
आश्र
धर्मक
सित
ईश्व
होते
मुन
दिले
संपू

लेगया प्राप्त ज्ञान सिद्धि दिहं नृसोम कहं सुन ॥४५॥ तत्कारण परमात्मा देवि भूत प्राणिको उत्प
न भैरहे छ जल भगवान ले योजगत् जति छ सवे व्यापित गहिया को छ ते स भगवान कन आमा
आमा कर्म ले पूजा गमा प्राप्त मनुष्य जो छ सिद्धि कन पाउं छ ॥४६॥ अधिक लुको चा जात का
न रै धर्म छ ते सा आमा जात ले गहिया का शास्त्र ले कल्या को आमा धर्म य धर्म पूरा न भया
को छटिये छ त यनि अर्को जात को धर्म वटिया मानि गमा को भया उहि आमा धर्म वटिया छ भा
मा पूर्व जन्म का स्वभाव ले कल्या को धर्म गहिया कन कन देन जुन धर्म मा आमा धर्म यो उत्तम धर्म ले
नारा कन देन जसे विष मान मन्वा किर को विष बाई म देन ॥४७॥ हे को ते य कर्म सित धर्मो उत्तम न
भया को दोष जो हि सा दि धर्म छटिया भया भनि आमा धर्म न छ ॥४८॥ ई कर्म जति छ नृ सवे चा
हे जात का माया का गुण दे वि भया का छ नृ येक येक ले खले सवे कर्म अध्या रा भै छे वि दी र ह्या छ

जात म भव्य सिद्धि दिदति मानवः ॥४९॥ भेयान स्वधर्मो पि गुणः परधर्मो त्वगुहितानु ॥ स्वभाव
नियतं कर्म कर्तव्यं ना प्रोति किंचिच्च ॥५०॥ सहजं कर्म को ते य स दोष मपि न त्यजेत् ॥ सवा रं भा हि
दोषे रा धूमे नाग्नि र्वाहनाः ॥५१॥ असक्त बुद्धिः सर्वत्र जिनात्मा विगतस्पृहः ॥ नैष्कर्म्ये सिद्धि
परमां सत्या सेनाधि गच्छति ॥५२॥ सिद्धिं प्राप्नो यथा ब्रह्म तथा प्रोति निबोधमे ॥ समासे नैव कोने
यनि शतान स्यया पर ॥५३॥ विविक्त से विल घाली यन वाक्का यमानसः ॥ ध्यान योगो यो नित्यं
तस्मै आमा जित कल्या का धुं बाले अग्नि हो विरहं साक्षात् पेले हे निर्मल देव देन अग्नि नाई ॥
५४॥ आमा कर्म निश्चय गहिया जति सिद्धि सिद्धि सो सुन हे अर्जुन त्वि पत्र य विवा आदि सर्व वस्तु
सा प्रीति न लगाई विरक्त बुद्धि गराई परमात्मा देवि अर्को पियारे को दिन दोष कन ईन्द्रिय निजि
आमा के हि कर को न राखि आमा जाना भै कन अपर्ध म कादि सत्व गुण को आश्रय न गहियो
धर्म कर्म गह न्यो मनुष्य निष्कर्म रूप सिद्धि कन पाउं छ कर्म रूप जो संन्यास छ सो पाई कन आमा
सित य के स्व रूप स्व भाव होइ जाना ॥५५॥ हे को ते य जस्य कारणे आमा जात को धर्म गह
ई धा को आराधना गर्ती ले सिद्धि भै पावें नृ सत्व का एतित पात्रं छ यो पावें नृ पाई न्या जुन जान
हो ते स ज्ञान को निश्चय स्य का एतित गमा हो भं न्या निश्चय विस्तार कमे ले कल्या को ति सि
सुन ॥५६॥ हे अर्जुन परमात्मा कन निश्चय ठहराउं न्या माया देवि विरक्त भया कि सु सु
दिले गहिक नृ भुति जो धैर्ये छ ते स धैर्ये ताले इन्द्रिय भया मन भयो वं वन जनु न दिकन
संपूर्ण आत्मे माल गाई कन आत्म न डगाई शब्द रूप रस गन्ध स्पर्श काम देव ईत्यादि सु

समो गच्छाडिराग द्वेष कलितो मनुष्ययोगमाला गच्छ सो मोक्षलाई समर्थ ऊँछ ॥ ५१ ॥ फेरि
रि सुन हे अर्जुन ये कान्त मूल मावसि थोरे भोजन गविचन जितिक न शरीर इन्द्रिय मन
जिति ईश्वर को ध्यान जोग यो छ ते स्मा तनू मा भेला गिक न यम सत्ता देषि वै राग्य भया
को जो छ सो मोक्ष पाउँछ ॥ ५२ ॥ फेरि सुन हे अर्जुन मय चो वडो ऊँ यत्तो तय सी ऊँ भ
या अहंकार छादिका म को धने राग द्वेष ले सहित भया को वल कन छडि मन मा
वडो हर्ष गति भेले यति धर्म गया यति दान गप्पां भनिक हनु त्यो यति दर्प हो त्यो छडि
को ते सुख को यति ईश्वर न गति रीस छडि वाहर का वस्तु को भाग ह छडि ममता क
तिन राषि केवल आत्मै मा मात्र विचार यकाय विचार ले देषि सांन मूर्ति भेक न जो

वैराग्यं समुपाश्रितः ॥ ५३ ॥ बुद्ध्या विशुद्ध्या युक्तो धृत्वात्मानं नियम्य च ॥ शब्दा
दीर्घविषयास्त्यक्त्वा राग द्वेषौ मुदा त्यजेत् ॥ ५४ ॥ अहंकारं वलं दर्पकामं क्रोधं य
थ हं ॥ विमुच्यते निमग्नः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ ५५ ॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा
न शोचति न कांक्षति ॥ सम सर्वेषु भूतेषु मद्रक्तिं लभते परं ॥ ५६ ॥ कृणुते ॥

पादि राजकतयसि भे परमात्मा ये कतव भाव डी छ तो संन्यास पां ब्रह्म या
ऊना लाई समर्थ ऊँछ वाच्य के छत यनि जीव मुक्त ऊँछ ॥ ५३ ॥ त्यो जीव मु
क्त मुनिक सो ऊँछ भनो ला सुन हे अर्जुन अनेक प्रकार क कहि आया का
धर्म को कमले पर ब्रह्म याई कन केवल आप यनि ब्रह्म जसो भया का त्यो
मुनि जो छ प्रसन्न आत्मा भया को ऊँछ के हि सुतान भया को के हि क
रा को यनि इच्छा राखे न संपूर्ण भूत प्राणि माधो वे देवद ह यत्तो त्यो
संन्यासिक लेने न पाइ सकनु भया को मेरो भक्तिक न पाउँछ ॥ ५४ ॥
मेरो भक्ति पाई कन ते स मेरा भक्ति ले जसो मऊ तसो जाद ह कसो संन्या
का जो अनेक प्रकार छन ति उपाधिय भया का को उत्तम पुद्गल आका
श जसो ते स्नाम कन केवल चित्त जे मात्र रस पाई त्याम कन न जन्म

नानमन्यामिकन दूरकोताशगरिदिन्यामईधरकन तत्त्वनेतिधयगरिहरउंडर
ताहंपदि मेईधरमा प्रसजमिच्छ मिलिजान्या ॥५५॥ आफलाजातकोधमलेपर
मासापाईध भनिकाया केरिपतिमुनहे अर्जुनकेवल मेराशरणमापया आफलाजातकोध
मजलाजुन तिधमसधेगन्या मुनिजो छन मेरा प्रसादले निर्मलजो विष्णुपद छ तेसपद
कनपाउछ ॥५६॥ यस्तो जनाले हे अर्जुनचित्तले गयाका कर्मजतिछन मेईधरमा अ
परागरि मेरा राखिकेवल मेरे शरणमा परिआत्मेमाततपर मे बुद्धियोगकोसेवन
गरिमलाई पाउन्मा बुद्धिलीकन निरतरचित्तमा मेलाई नीरावा ॥५७॥ हे अर्जुनमला
इचित्तमाली कतरायाकातिमि मेरा प्रसादले संसारका पारमा दुःखले पनि नजाइसक

भक्त्याममाभिजानाति यावन्त्यश्चास्मि तत्त्वतः ॥ सामेवंतत्त्वतेशाखाधिसतेतदनंत
॥५५॥ सर्वकर्माणिममकृत्वांगोमम्याश्रयः ॥ मत्प्रसादादमाप्नोतिशाश्वत
पदमव्ययं ॥५६॥ चेत्सर्वकर्माणिमप्यस्यस्यमत्परः ॥ बुद्धियोगमुपाश्रित्यमधि
मततभव ॥५७॥ मच्चित्तः सर्वगुणोमत्प्रसादात्तस्थितिः ॥ अथचेत्समहंकारान्नशोष
तिविनक्षति ॥५८॥ यदहंकारमाश्रित्यन्योत्पश्यतिमत्पसे ॥ मिथैवव्यवसायसेप्रकृति
म्यावियोक्षति ॥५९॥

उद्धतयनितरिकनपारहोला मेराधाममा पुगोला अजयनितिमिसर्वे मजादछु पं
डितहुभन्या अहंकारले मेरा करालुन्दोनभन्या तिमिविनाशहोला यलससारकाम
कापनिजुन्याछो मरिकनयनि मद्धेउपग्याछेन ॥५८॥ हे अर्जुनदाज्जुभाईमिललडा
ईगदैन मंधर्मासाऊ ईतकनमायातापापिहोला मतजान्यायोऊभन्या अहंकारलेय
दिउद्धगर्तकोमनगदैन तेसोभया योउद्धोमायावाट तिमिनाईभयाकोअज्ञानद्वयो
प्रकृति तिमिकन तेसेकाममालगाउनेछो तिमिगदैनभन्यापतिमुखपाउन्माछेन ॥५९॥
हे कौन्तेय आफ्नेस्वभाववाटउत्पन्नभयाका कर्मवाधिकन आफ्नेवाटउत्पन्नभयाका मा
याले आफ्नेवाधिकन जुनकर्म मगन्याछेन मछो तेहिकर्मजोछ अर्काकावसमापनि
तिमिगनेछो आत्मकनपाउन्मा मार्गछाया प्रात योशरीर आफ्नेबसमाराखिसकछेन ॥६०॥

हे अर्जुन ईश्वर जो परमात्मा है संपूर्ण भूत प्राणिना का मुद्र तान ले निर्मल भया का
हृदय का अन्त करी माव सिर है छः नाहं वसिष्ठा गच्छ तपो परमात्मा भनोता मा
या ले गरिक न स मा का भूत प्राणिक न काठ को च क धु मा या मे गरि धु मा उं
ते ल च क मा न धु मा उं या को हि है न ॥ ६१ ॥ हे भारत ते हि हृदय मा व स्या का
शरणा मा परः संपूर्ण तर ह ले ते ले का शरणा मा पर पाछि ला ग ते ल पर मात्मा का
प्रसाद ले व ठिया शान्तिक न पा उं ला फेरि म या पाछि वि धु य द ना उ ग या का
स्थान क न पा उं ला ॥ ६२ ॥ हे अर्जुन संपूर्ण ज्ञान मे ले गुह्य भदा य नि अत्य न
गुह्य संपूर्ण शास्त्र को सा अर्थ भया को केवल ज्ञाने मात्र भया को योगी ता

स्वभाव जेन को ते य विव द्रः स्वेन कर्मणा ॥ कर्तु ने छ सिय नो हात क रिय स्य
व शो पिस ना ॥ ६० ॥ ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशे र्जुन तिष्ठति ॥ धाम य सर्व भू
ताति य शान्ता नि मा य या ॥ ६१ ॥ तमेव शरणं गच्छ सर्व भावेन भारत ॥ तत्र
साक्षात् परा शान्ति स्थानं प्राप्स्य सि शा श्वतं ॥ ६२ ॥ इति ते ज्ञान माख्यातं गुह्य
गुह्यं न रं म या ॥ विमृष्ये त द शेषेण यथे क्षिति तथा कृत ॥ ६३ ॥ सर्व गु
ह्य त मं भूय श्वरा ड मे पर मं व च ॥ इष्टो सि मे द ठ म ति स्त तो व क्षा मि ते हि त ॥ ६४ ॥

तिमिक न क ह्यां य ल ग्रं थ मा अर्थ को चित्त ल गा ई क न वि वे सृ ग र वि चार ग
र र जो मन आ उं छ सो ग र ॥ ६३ ॥ संपूर्ण गीता को अर्थ क ह मा न न् भं या
हे तु ले भ ग वा न आ ग्या ग ह न हे अर्जुन या व त् गुह्य य दार्थ मा स वे भ न्दा गु
ह्य मे रा व च न तु न ति मि म नो थि आं क ले का ड ले प नि हो ई न ति मि ला ई
अ ति ग त् र ठ रै ड व द ई ला ध नि हो ला भं या चित्त ले प नि हो ई न के व ल
ति मि ई ह हो ला मे ए व जो पियारा हो नि श्व य ति प्रो क ल्या रो ह व ल भं ना
नि मित्त ति प्रो व ठिया न् न्या क रो क हं छु तु न ॥ ६४ ॥ क्या भ न्द भ नो ना

सुनहे अर्जुन तिष्ठो अनकर्ण मनजोहू मे मालगाउ ति मि मेरा भक्त भेरह मेरे जप पूजा
यज्ञ गरमै लाई नमस्कार गर यस्करा माति मिने निश्चय प्रतिज्ञा गयो भन्या मयनि
तिमिलाई सोचो माति उद्धार गहला मेरो ति मि वडो पियारा छै ॥ ६५ ॥ संपूर्ण विद्वान्
को मतले सुनहे अर्जुन संपूर्ण धर्म कनयनि अधर्म कनयनि छुडि देउ यके मेरा श
रणा मा परति मि मजो छु संपूर्ण पाप देखि ति मि कन मुक्त गराउला यस्करा मा शो
कन गर ॥ ६६ ॥ हे अर्जुन योगी ता शास्त्र जोहू ति प्राचिन साको माया ले भयाको अ
ज्ञान फल ना ति मि त मैले कथा पारु योगी ता जो ज्ञान छ तय स्या काई छान भयाका
मनुष्य कन न कहनु त परस्वी कन ममा गहू ना भक्ति न भयाका कनयनि कदाची

मन्त्र ना भव मद्रक्तो मन्त्राजी मां नमस्कृत ॥ मामे वै व्यति मत्पते प्रतिजाने प्रियो ति
मे ॥ ६५ ॥ सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ॥ अहं स्या सर्वपापेभ्यो मोक्षयि
ष्यामि मा शुच ॥ ६६ ॥ इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ॥ तत्र बुभुक्षुष्वे
वाच्यं न च मायोभ्यसूयति ॥ ६७ ॥ य इमं परमं गुह्यं मद्रक्तो ध्यायिष्यात्यति ॥ भ
क्तिं मायि परां कृत्वा मामेवै व्यत्यसं शयं ॥ ६८ ॥ नवतस्मान् मनुष्येषु कश्चिन्मे
प्रियकृतमः ॥ भवितान च मे तस्मादत्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥

तपनि न कहनु तपस्या माला गिरहे छु देवता गुरुको भक्ति गर्छ तपनि आफु नुसवन
गर्दै न तहल माह गुरु हर्दै न भन्या यनि यो ज्ञान न कहनु जो मकन माह छ तपनि के
फल यसै मुक्त मा जन्मा अरु ई प्राणि जन्तो मा यनि संपूर्ण भूत प्राणीका आत्मा
माराका को कैले नाशन कृपा प्रकट जानि मरोगन्ता जो राखेन ते मूलाई पनि न क
हनु ॥ ६७ ॥ हे अर्जुन जो मनुष्य योगी ता मेरा भक्त हनु मारा वोसु यम गीता को ज्ञान
मेरा भक्त हनु लाई देवसु ममा वजे भक्ति लगावसु यो मनुष्य मै छेउ पुग्छ यस

मासदेहदेन ॥ ६८ ॥ हे अर्जुन यमसत्ताका संपूर्ण मनुष्य मायावत् भक्त हनु मा
 शास्त्रको व्याख्यान गर्ना भक्त देखि पियारे अर्को मेरो कोहि देन जो मनुष्य मेरो भ
 क्त भै शास्त्रको अर्थ वाढिया गरि छ पियारे भन्दा पनि पियारे तेहि छ अर्को देखि
 पुछे पनि यमसत्ताका माते मनुष्य देखि पियारे कोहि कुन्या देन ॥ ६९ ॥ हे
 अर्जुन तिम्रो सवा दले प्रकट भयाको साक्षात्कर्म स्वयं यो भगवद्गी
 ता जो मनुष्य विषे पाठ गरि मन्तो मनुष्य ताने दय योगले सधैं स पूजा गर्छु
 जो अर्थ जान्दैन त पनि गीता मा भयाको अर्थ देन भन्ना निश्चय चित्त भयाको यो
 पाठ गर्ना मनुष्य जो छ यो भगवानले अर्जुनलाई कक्षाको यमश्लोक मा अर्जुन

अधो व्याते च य ईमं धर्म्यं सवा दमा वस्यो ॥ तान् यजेत तेनाह मिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ ७० ॥
 भद्रावाननुसूयश्च भृशज्यादपि योतरः ॥ शोपि मुक्तः शुभालोकान् प्राप्नु
 यात्पुण्यकर्मणा ॥ ७१ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ कश्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वये का प्रेर
 नेतसा ॥ कश्चिदज्ञानसंमोहं प्रणष्टसे धनं जय ॥ ७२ ॥ अर्जुन उवाच ॥ नष्टो
 मोहः स्मृतिलब्धत्वा त्वत्प्रसादान्मया युतः ॥ स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये व
 चनं तदा ॥ ७३ ॥

मिति गर्ह्यः यहि ज्ञानवन्तायाको होला भन्ना यत्ना तरहने बुद्धि भै पाठ ग
 र्ह्यः शास्त्र न जान्ना पाठ गन्ना मा पनि ज्ञान ले मेरा पूजा कर्छु यो कुरो मेरो
 निश्चय छ ॥ ७० ॥ हे अर्जुन जो मनुष्य अधिक धन लगाई कनये का प्रमा
 चित्त लगाई कन राग घे बढो डि योगी ता जो मुन्दछु यो मनुष्य पनि संपू
 र्ण पाप देखि मुक्त भै बडो पुण्य गर्ना हुनु जुन लोक मा पुग्छ तिलोक मा
 केवल गीता सुन्ना मनुष्य पनि पुग्छ अर्को क केहि न जान्ना केवल
 गीता अर्को ले सुनायाको मुनिकनता उत्तम लोक मा पुग्छन् आदर्शित पाठ

गर्वा अर्थ जान्या को ताक्या वाता ॥ ७१ ॥ आश्रये ले शिष्य पहाई सक्या पहि वृद्धि सकी
वृद्धि भनि लोभ न्या धर्म कुना ले भगवान् आशा गर्हन् हे पार्थ हे धनंजय तिमिले य
का प्रवित्त ले यम गीता कन पुनि वित्त को अशान ह राख्यो क्या किके हिवां कि हू ॥ ७२ ॥
वजे कतार्थ भयाका अर्जुन ले विनि गर्हन् हे अच्युत मेरा वित्त को अशान दिनाश भे शान
भै कन तमा प्रसाद ले आत्म कन जान्या भआं वित्त माजति सदे ह थियो सबेन छ भया
को भआं मेने हजुर का वर रा को दास भै कन हजुरे को आशामा नि रह्या हू ॥ ७३ ॥
सजय जो हू धृतराष्ट्र लाई कहं हू हे महाराज धृतराष्ट्र भगवान् वासुदेव को र
वजे वृद्धि भयाका अर्जुन को संवाद वजे आश्रये मानु मुने मायनि केशे सेत शरी

सजय उवाच ॥ इमे हं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्म ॥ संवादमिममशौचमदूतसे
महर्षिणा ॥ ७४ ॥ व्यास प्रसादाद्भुतवानेताद्भुतमहं यर ॥ योगयोगेश्वरात्कुशात्साक्षा
कथयतः स्वयां ॥ ७५ ॥ राजसंस्तुत्य संवादमिममदूतां केशवार्जुनयोः पुराण हृष्या
मिबभूवुर्भुवः ॥ ७६ ॥ तस्मै सस्मृत्य सस्मृत्य रूपमन्ये दूतं हरे ॥ विस्मयो मे महान्

राजन हृष्यामिबभूवः पुनः ॥ ७७ ॥

राहर्ष कुन्या यो पर पार्थ को निरोपन भयाको गीता मे ले सुन्या ॥ ७४ ॥ यो
परम गृह्य कथा ज्ञान कन व्यास का प्रसाद ले मुमुक्षु कतो भनो ले जग
क्षेत्र मा साक्षात् भगवान् का मुख दे विनित्या को यल डि छिमा वसिष्ठ दह
॥ ७५ ॥ हे महाराज धृतराष्ट्र वजे आश्रये मानु हे रिन सकन अदूत पुराण क
था हा पाय को नाश गर्वा गीता ना उग्या को संवाद पुनिकन समुद्धे स मु
इन्दे वारं वार कतार्थ छु छु मि डी छु हर्षित डी छु ॥ ७६ ॥ हे महाराज धृतराष्ट्र
वजे आश्रये मानु हे रिन सकन अदूत भगवान् को विश्व रूप न मुहं
समुद्धे मलाई अदूत आश्रये ला गू केरि केरि वारं वार छु मि हर्षित क
तार्थ डी छु ॥ ७७ ॥ तिन हं मा कस्को जय होला भनि स्वधोला मुन हे र

राज जस्कायक्षमा संपूर्ण योगका ईश्वर यावत् योग उत्पन्न गत्वा
श्री कृष्ण भगवान् सारथि भैक न विराजमान भैव कृष्ण कोट ते सया
राडव कायक्षमा श्री कृष्ण श्री भक्त्या कोय नितक्ष्मी सरस्वति बुद्धि अ
र्थ धर्म काम शरीर कोच भाजस्कायक्षमा भगवान् नारायण
श्री कृष्ण अर्जुन कृष्ण अर्जुन भै विराजमान कुतुभया कोट ते स
यक्षमा श्री कृष्ण विजय भक्त्या को संपूर्ण शत्रु जिति दिग्विजय ग
र्भु यनि ते सैयक्षमा कृत्या ह्य भै श्रयै यनि ते सैयक्षमा कृत्या ह्य

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पाथो धनुर्धरः ॥ तत्र श्री विजयो भू
ति कृत्वानीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥ भगवद्भक्तियुक्तस्य तत्प्रसादा
त्सर्वोक्तः ॥ सुखं बंधविमुक्तिः स्यादिति गीतार्थसंग्रहः ॥ ७९ ॥
इति श्री महाभारतेशतसहस्रां संहितायां वैयासिक्यां भीष्म
पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासु यनिष्ठसूत्रं विद्यायां योगशास्त्रे
श्री कृष्णार्जुनसंवादे परमार्थ निर्णय मोक्ष योगो नाम अष्टा
दशोऽध्यायः संपूर्णम् ॥ १८ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

अधिक जस यराक्रम यनि शोभाते सैयक्षमा कृत्या ह्य ग या
कोटीति यनि न डग्याठीर कृत्या ते सैयक्षमा कृत्या ह्य भक्त्या
मेरोतायाहिनिश्चय ह्य हे महाराज चतराष्ट्र भानेक हंदा
भगवत्सूतनामा यो राहिक शौनकादि प्रतिक हंदा भक्त्या

इति श्री मद्भगवद्गीता भाषासंपूर्णम् ॥ १८ ॥ शाके सम्वत् १९९३ सा १ मा १८
जलाधिगोविन्द लेख्या को गिता





2304

